लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–21

स्ट्रापरोला की रातें–1

जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला

1550

अंग्रेजी अनुवाद एच जी वाटर्स **1894**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-21
Book Title: Straparola Ki Ratein-1 (Nights of Straparola-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
स्ट्रापरोला की रातें–1–10 7
परिचय 9
पहली रात 18
1–1 सालारडो 20
1–2 कैसेन्ड्रीनो 44
1–3 प्री स्कारपाफ़ीको 63
1–4 सालैरनो का राजकुमार टैबाल्डो 82
1–5 डिमिट्रियो 104
दूसरी रात 127
दूसरी रात 129
2–1 गैलिओटो 131
2–2 फ़िलैनियो सिस्टरनो 150
2–3 कार्लो डा रिमीनी 174
2–4 शैतान और सिलविया 189
2–5 मिस्टर सिम्पलीसियो डी रोसी 209

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

स्ट्रापरोला की रातें–1[2]

लोक कथाओं के इतिहास में छापेखाने के आविष्कार के बाद प्रकाशित की जाने वाली लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी इटली की "इल डैकामिरोन" जिसमें **100** लोक कथाऐं दी गयी थीं और जो **1303** में प्रकाशित की गयी।[3] प्रकाशित होने वाली दूसरी पुस्तक है स्ट्रापरोला की रातें। इसे स्ट्रापरोला ने लिखा था और इसमें **75** लोक कथाऐं थीं। इन्हें **10** सुन्दर स्त्रियों और कई कुलीन लोगों ने वेनिस के कार्निवाल के समय उसकी **13** रातों में कहा था। यह बड़ी अजीब सी और खेद की बात है कि जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला जो अपने दिनों में एक बहुत ही लोकप्रिय उपन्यासकार था इतने दिनों से अनदेखा पड़ा हुआ है।

इन कहानियों को बहुत अलग अलग जगहों से इकट्ठा किया गया है। इसकी **24** कहानियॉ बहुत ही कम जानने वाले मोरलिनी से ली गयी हैं। इसकी **15** कहानियॉ और कई लेखकों की लिखी हुई कहानियों से ली गयी हैं। इसकी **6** कहानियॉ पूर्वीय देशों की कहानियों से ली गयी हैं। इसकी केवल **29** कहानियॉ स्ट्रापरोला की अपनी लिखी हुई कहानियॉ हैं जो यूरोप में पहले कभी नहीं प्रकाशित की गयी थीं हालॉकि वे कहानियॉ भी उसकी अपनी लिखी हुई नहीं हैं। वे कहीं कहीं कही सुनी जाती रही हैं बस उसने उनको पहली बार लिख कर प्रकाशित किया है।

स्ट्रापरोला की यह पुस्तक दो भागों में प्रकाशित की गयी थी। इसका पहला भाग **1550** में प्रकाशित किया गया था और दूसरा भाग **1553** में। ऐसा लगता है कि स्ट्रापरोला ने फ्रेन्च भाषा से इनका अनुवाद किया है। इस पुस्तक का नाम नौटी[4] भी है। यह इटैलियन भाषा में लिखी हुई है। केवल **20** सालों में ही इसके **16** ऐडीशन प्रकाशित हो गये थे।

जल्दी है यह पुस्तक बहुत प्रसिद्ध हो गयी और इसके पहले भाग का फ्रैन्च में अनुवाद **1560** में यानी केवल **10** साल में और दूसरे भाग का अनुवाद **13** साल बाद ही हो गया। इसका जर्मन अनुवाद **17**वीं सदी के शुरू में हुआ। इसकी पहली **24** कहानियों का एक अनुवाद वियना, औस्ट्रिया, में **1791** में प्रकाशित हुआ। **1817** में इसकी **18** कहानियों का जर्मन में अनुवाद हुआ।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्ट्रापरोला वह पहला आदमी था जिसने पूर्व की इधर उधर बिखरी हुई कहानियों को इकट्ठा कर के उन्हें इटली में खास कर के वेनिस की जनता में लोकप्रिय बनाया। इसकी चार कहानियॉ अरेबियन नाइट्स की कहानियों पर आधारित हैं जिनका यूरोप की किसी भी भाषा में **18**वीं सदी के शुरू तक अनुवाद नहीं किया गया था। पहली कहानी है चौथी रात की तीसरी कहानी और दूसरी कहानी है पॉचवीं रात की तीसरी कहानी "तीन कुबड़ों की कहानी"[5]। इसमें एक कहानी जो "जूता पहने हुए बिल्ला" जैसी है वह इसकी मौलिक कहानी है। वैसे इसमें लिखी हुई कहानियों के मूल स्रोतों का पता लगाना नामुमकिन सा है। ये सब कहानियॉ वेनिस में कही गयी थीं।

---

[2] Nights of Straparola. By Giovanni Francesco Straparola. 1550 and 1553. 2 vols.
First Translation in English by HG Waters. London: Lawrence and Bullen. 1894. 75 tales.
Available in English at : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=37&tale=1032
This is one of the earliest books published in the history of folktales. It passed through 16 editions from 1550 to 1570 – in just 20 years.

[3] Il Decamerone. 1492. 100 tales.

[4] Notti

[5] Story of the Three Hunchbacks

इस पुस्तक की शैली "इल डैकामिरोन", "इल पैन्टामिरोन" और "अरेबियन नाइट्स"[6] की शैली जैसी है जिनमें एक मुख्य कहानी है जिसमें से बहुत सारी कहानियॉ निकलती जाती हैं।

जिस पुस्तक से हमने इसका अनुवाद किया है उसके परिचय में लिखा है कि स्ट्रापरोला की लेखन शैली जैसी खराब लेखन शैली कहीं देखने को नहीं मिलती। एक तो उसकी व्याकरण ठीक नहीं है दूसरे जो वह बताना चाहता है वह बता नहीं पाता।

तो लीजिये इस सीरीज़ की अब यह एक और पुस्तक आपके हाथों में प्रस्तुत है संसार की लोक कथाओं की दूसरी प्रकाशित पुस्तक का पहला पहला हिन्दी अनुवाद। आशा है कि क्लासिक लोक कथाओं की दूसरी प्रकाशित पुस्तक को आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये इटली की ये पुरानी लोक कथाऐं अब हिन्दी में।

क्योंकि ये कहानियॉ बहुत सारी है इसलिये इन्हें एक पुस्तक में प्रकाशित नहीं किया जा रहा बल्कि **10–10** कहानियों के समूह में प्रकाशित किया जा रहा है। यह इसका पहला भाग है जिसमें इसकी पहली दो रातों की दस कहानियॉ दी जा रही हैं। पढ़िये और आनन्द उठाइये।

[6] Il Decamerone, Il Pentameron and Arabian Nights

परिचय[7]

लोम्बार्डी की राजधानी मिलान[8] में जिसके शानदार महलों में बहुत शानदार स्त्रियॉ रहती थीं जो बहुत अमीर थीं और जिनके महलों में ऐसी ऐसी चीज़ें लगी हुई थीं जो किसी भी शहर को शानदार बना सकती थीं। वहॉ एक बिशप[9] रहता था। इसको कानूनी तौर पर मिलान का राज्य विरासत में मिला हुआ था।

पर बुरा समय आने की वजह से नफरत की वजह से और राज्य की कभी न खत्म होने वाली गड़बड़ी की वजह से वह वहॉ से छिप कर अपनी विधवा बेटी लुक्रेशिया[10] को साथ ले कर लोदी[11] चला गया जहॉ वे कुछ महीने रहे।

अभी उनको वहॉ रहते हुए कोई ज़्यादा समय नहीं हुआ था कि उनके रिश्तेदारों ने उनका पता पा लिया और उनको वहॉ भी तंग करने लगे। सो नाखुश राजकुमार ने जब देखा कि वह अभी भी उनकी बुरी नीयतों का शिकार है तो उसने अपना पैसा और जवाहरात जो कुछ भी उसके पास था उसे और अपनी बेटी को साथ ले कर दूर वेनिस[12] चला गया।

---

[7] Proem

[8] In the city of Milan, the capital of Lomardy

[9] Bishop is an high official of the church. His name was Ottaviano Maria Sforza.

[10] Lucretia – name of the daughter of the Bishop. She was the wife of Giovanni Francesco Gonzaga.

[11] Lodi – name of a place

[12] Venice is a very important city of Italy and is called “City of Canals” too.

वहॉ वह एक बहुत ही भले आदमी बैलट्रामो[13] के घर जा कर ठहर गया। वहॉ उसने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया और ज़िद की कि वे उसके पास उसी के घर में रहें। सो वे उसी के साथ रहने लगे।

पर किसी दूसरे के घर में रहने में थोड़े बन्धन तो होते ही हैं सो इ्यूक ने बहुत सोच विचार कर यह निश्चय किया कि वह वहॉ से अलग कोई अपनी जगह ले लेगा और फिर वहीं रहेगा। सो वह अपनी बेटी के साथ एक जहाज़ ले कर मोरानो चला गया।

वहॉ उसको एक बहुत सुन्दर सा महल दिखायी दे गया जो उस समय खाली पड़ा था। उसने उसको अन्दर से देखा तो उसकी सुन्दर स्थिति उसके बड़े बड़े कमरे बड़ी बड़ी गैलरी खुशबूदार फूलों और फलों के पेड़ों से भरे हुए बागीचे देख कर उसका दिल खुश हो गया।

वहॉ वह उसकी संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और उसके बड़े बड़े कमरे देखे छज्जा देखा जो पानी की तरफ खुलता था और भी चारों तरफ का दृश्य देखा जो उसको बहुत अच्छा लगा।

राजकुमारी भी उस दृश्य को देख कर ठगी सी खड़ी रह गयी। उसने अपने पिता से बहुत ही मुलायमियत से कहा कि वह जगह उसको बहुत सुन्दर लगी सो वह उसे उसके लिये किराये पर ले लें। उसने उसे ले लिया और उसी में रहने लगा।

[13] Ferier Beltramo – the good man in Venice where the Bishop went to stay.

इससे वह बहुत खुश हुई और अब वह सुबह शाम छज्जे पर बैठ कर मछलियॉ देखा करती जो वहॉ के साफ नमकीन पानी में तैरती रहतीं। कभी कभी वह उनको छोटे छोटे पत्थर मारा करती। ऐसा करने में उसको बड़ा आनन्द आता।

और अब क्योंकि वह उन स्त्रियों से दूर हो गयी जो पहले उसके दरबार में आया करती थीं सो उसने उनकी जगह दस और अच्छी स्त्रियॉ चुन ली थीं जो जितनी अच्छी थीं उतनी ही सुन्दर भी थीं। उनकी अच्छाइयों और सुन्दरता को बखानने में समय कम पड़ जायेगा इसलिये हम अभी उसे यहॉ रोक देते हैं।

इनमें से एक थी लोडोविचा[14] जिसकी सितारों जैसी चमकती ऑखें थीं। जो भी उसको देखता वह उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता था।

दूसरी थी विसैन्ज़ा[15] जो ऊपर से ले कर नीचे तक बहुत सुन्दर थी। वह बड़ी शान से चलती थी और उसके तौर तरीके भी बड़े लोगों वाले थे। उसका चेहरा बड़ा कोमल था जिसे जो देखता वह ताजा हो जाता।

तीसरी थी लियोनोरा[16]। वह अपनी प्राकृतिक सुन्दरता की वजह से बहुत सुन्दर लगती थी। वह इतनी दयालु और इतनी तमीज़दार थी कि दुनियॉ में उसके जैसा मिलना मुश्किल था।

---

[14] Lodovica – one of the ten women friends of Lucretia.

[15] Vicenza – other woman of the ten women friends of Lucretia.

[16] Leonora – third woman friend of Lucretia

चौथी का नाम अल्टीरिया[17] था जिसके बहुत सुन्दर सफेद बाल थे और वह हमेशा लुक्रेशिया की सेवा में लगी रहती थी। पॉचवीं का नाम लौरैटा[18] था जो देखने और बर्तने में सुन्दर और अच्छी थी पर कभी कभी थोड़ी सी बेइज़्ज़ती करने वाली थी। पर जो उससे प्यार करना चाहते उसकी एक नजर के लिये लालायित रहते।

छठी ऐरिट्रीया[19] थी। हालॉकि कद में वह थोड़ी छोटी थी पर सुन्दरता और शान में वह किसी से कम नहीं थी। उसकी ऑखें सूरज की किरनों से भी ज़्यादा चमकदार थीं। उसका मुँह छोटा था और उसके अन्दर कुछ भी ऐसा नहीं था जिसकी प्रशंसा न की जा सके।

सातवीं का नाम था कैटेरूज़ा ब्रूनैटा[20]। वह खुद बड़ी शान वाली थी और बहुत ही मीठा और प्यारा बोलती थी। उसकी मीठी बातें न केवल आदमियों को ही अपने जाल में फॉस लेती थीं बल्कि स्वर्ग से कामदेव को भी नीचे धरती पर बुलाने की ताकत रखती थीं।

आठवीं थी अरियाना[21]। यह उम्र में तो छोटी थी पर दिखने में गम्भीर और सुलाने वाली थी। वह फर्राटे से बोलती थी और उसमें दैवीय गुण थे जिनको लोग बहुत कीमती समझते थे और उनको

[17] Alteria - fourth woman friend of Lucretia
[18] Lauretta – fifth woman friend of Lucretia
[19] Eritrea – sixth woman friend of Lucretia
[20] Cateruzza Brunetta – seventh woman friend of Lucretia
[21] Arianna – eighth woman friend of Lucretia

आदर देते थे। वे उसके व्यक्तित्व में आसमान के सितारों की तरह चमकते थे।

नवीं इसाबेला थी जो बहुत ही गुणों वाली लड़की थी जो अपनी हाजिरजवाबी और भाषा की चतुरायी की वजह से अपनी सब साथिनों में प्रशंसा की पात्र थी।

लुक्रेशिया की आखिरी यानी दसवीं साथिन थी फ़िओरडायना[22]। इसका दिमाग दुनियॉ की किसी भी स्त्री के मुकाबले में हमेशा ही बहुत अच्छे विचारों से भरा रहता था और हाथ हमेशा अच्छे कामों में लगे रहते थे।

ये दसों सुन्दर स्त्रियॉ लुक्रेशिया की सेवा में लगी रहतीं – सामूहिक रूप से भी और अकेली भी।

लुक्रेशिया ने इन दस स्त्रियों के अलावा दो स्त्रियॉ और चुन रखी थीं जो आदरणीय थीं कुलीन परिवार की थीं मूल्यवान थीं जो उसे समय समय पर सलाह देती रहती थीं। उनमें से एक उसके दॉये रहती और दूसरी बॉये। इनमें से एक का नाम था लेडी चिआरा और दूसरी का नाम था वरोनिका[23]।

इन कुलीन लोगों के साथ के लिये और भी बहुत सारे लोग थे – एक बिशप था, एक इंगलैंड के राजा का एम्बैसेडर था, एक

[22] Fiordiana - tenth woman friend of Lucretia

[23] There were two women more to help Lucretia for counseling her – Lady Chiara and Madam Veronica.

रोड्स का नाइट और मिलान के लोगों को उपदेश देने वाला विद्वान पैट्रो बैम्बो[24] था। और भी कई लोग उनके साथ थे।

ये सब अक्सर रोज शाम को लुक्रेशिया के महल में मिलते थे और आपस में आनन्द करते थे नाचते थे गाते थे आपस में एक दूसरे से बातें करते थे पहेलियॉ बूझते थे जिनका केवल मैम[25] ही जवाब दे सकती थी।

पर जैसे जैसे कार्निवाल[26] के दिन पास आते जा रहे थे रोज ही झगड़ा बढ़ता जा रहा था। सो मैम ने उनसे दुखी होते हुए कहा कि वे अगले दिन आयें ताकि वे सब यह निश्चय कर सकें कि उन दिनों में वे लोग किस तरह की दावत का इन्तजाम करें।

अगले दिन शाम को वे सब उसके कहे अनुसार उसके महल में जमा हुए और अपने अपने ओहदे के अनुसार बैठ गये। तब मैम ने कहा — "आदरणीय सज्जनों और कुलीन स्त्रियों। आज हम लोग यहॉ अपनी एक बात पर बात करने के लिये इकट्ठा हुए हैं।

मुझे यह ठीक लगता है कि हम अपना यह रोज का कार्यक्रम कार्निवाल के दिनों के लिये बदल लें ताकि हम लोग यह समय हॅसी खुशी से गुजार सकें। आप सब लोग कोई सलाह दें जो सबको अच्छी लगे और सब उसको मानने के लिये तैयार हों।

---

[24] Pietro Bembo the knight of Rhodes and preacher of Milan

[25] Wherever it is used it is used for Lucretia.

[26] Carnival means a kind of fair

और यह बदलाव जितने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को अच्छा लगेगा उतना ही अच्छा है। अगर सब उसको मान लेंगे तो फिर हम उसे ही अपना लेंगे।"

वहॉ बैठे हुए सभी सज्जनों और कुलीन स्त्रियों ने एक आवाज में कहा कि वे लोग वही करेंगे जो मैम को अच्छा लगेगा। मैम ने जब उनकी मर्जी सुनी तो उसने उनसे कहा — "तो आप लोग यह चाहते हैं कि मैं यह निश्चय करूॅ कि इन दिनों में हम लोग क्या करे।

मैं अपनी तरफ से यह प्रस्ताव रखती हूॅ कि हम अपनी हर शाम जब तक कार्निवाल चलता है एक नाच से शुरू करें। पॉच स्त्रियॉ अपनी अपनी पसन्द के गाने गायें। और जब यह खत्म हो जाये तो पॉच स्त्रियॉ लौटरी डाल कर जिसके हिस्से में जो आये कहानी सुनायें। ये कहानियॉ किसी पहेली पर खत्म हों जिन्हें दूसरे लोग सुलझायें अगर उनके पास अक्ल हो तो।

कहानी खत्म होने पर हम सब अपने अपने घर चले जायेंगे। अगर आप सबको मेरा यह प्रस्ताव मंजूर न हो तो मैं दूसरों से प्रार्थना करती हूॅ कि वे अपनी अपनी राय दें। अब मैं आप सबको अपनी अपनी राय देने के लिये बुलाती हूॅ।"

मैम का यह प्रोग्राम सबने पसन्द किया। फिर उसने सोने का एक कटोरा लाने के लिये कहा जिसमें वहॉ मौजूद पॉच स्त्रियों के नाम लिख कर पर्ची डाली गयी।

पहली पर्ची सुन्दर लौरेटा के नाम की निकली। वह बहुत शर्मीली थी सो वह शर्म से गुलाबी हो गयी। अगली पर्ची अल्टीरिया के नाम की निकली। और फिर कैटेरूज़ा फिर ऐरिट्रीया और आखीर में अरियाना के नाम की पर्ची निकली।

जब परचियॉ निकालने का काम खत्म हो गया तो मैम ने संगीत के साज़ मॅगवाये और लौरेटा के सिर पर एक रिथ[27] रखवा दिया जो इस बात का सूचक था कि अगली शाम का यह कार्यक्रम लौरेटा शुरू करेगी।

मैम को यह जान कर बहुत खुशी हुई कि उसके साथियों को अब नाचना चाहिये और जैसे ही वह अपनी इस इच्छा को ऐन्टोनियो बैम्बो से कहने ही वाली थी कि उसने फ़िओरडाना का हाथ पकड़ा जिसको वह चाहता था और नाचने के लिये खड़ा हो गया। उसके पीछे पीछे दूसरे लोग भी खड़े हो गये और खुशी खुशी नाचने लगे।

इतने आनन्द को छोड़ना आसान नहीं था पर फिर भी अनमनेपन से उसको छोड़ कर कुछ ने कुछ भाषण दिये। फिर नौजवान लोग और स्त्रियॉ वहॉ से एक दूसरे कमरे में चले गये जहॉ मेजें लगी हुई थीं। उन पर बहुत सारा मीठा रखा हुआ था और कीमती शराब रखी हुई थी।

[27] Wreath – a ring made of flowers and leaves. See its picture above. Whe it is of big size it is kept on the grave, but when it is small it is kept on the head like crown.

वहॉ उन्होंने काफी देर तक हॅसी मजाक में अपना समय बिताया। यह सब खत्म होने के बाद उन्होंने मैम से विदा ली और उसने भी उन सबको आदर से विदा किया।

अगले दिन शाम को जब सब मैम के महल में इकट्ठा हुए तो मैम ने सुन्दर लौरैटा की तरफ इशारा किया कि वह अपना गाना शुरू करे।

लौरैटा को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह उठी और मैम के सामने सिर झुका कर एक ऊॅचे से चबूतरे पर गयी जहॉ एक कुरसी पड़ी हुई थी जिस पर कीमती सिल्क का कपड़ा मढ़ा हुआ था। वहॉ पहुॅच कर उसने अपनी साथिनों को वहॉ बुलाया और सबने मिल कर मैम की प्रशंसा में एक गीत गाया।

जब पॉचों स्त्रियों का गाना खत्म हो गया तो बाजा बजा और कहानी सुनाने के लिये लौरैटा ने जिसकी बारी सबसे पहले निकली थी बिना किसी को इन्तजार कराये नीचे लिखी अपनी पहली कहानी शुरू की।

इसके आगे सब कहानियॉ नम्बर से दी गयी हैं। पहला नम्बर दिन का है और दूसरा नम्बर कहानी का है, जैसे **1–1** यानी पहला दिन पहली कहानी, **1–2** यानी पहला दिन दूसरी कहानी। इसी तरह सब कहानियॉ दी गयी हैं।

पहली रात

1–1 सालारडो[28]

रेनाल्डो स्काग्लिया का बेटा सालारडो जिनोआ छोड़ता है और मौन्टफ़िराट जाता है जहॉ वह अपने पिता के द्वारा अपने ऊपर लगायी गयी कुछ रोकों का उल्लंघन करता है जिससे वह मौत की सजा पाता है पर फिर सोच विचार के बाद उसे उसके देश भेज दिया जाता है।[29]

कोई भी काम जो हम करते हैं या जो करने के लिये कहते हैं चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो सबसे पहले हमको उसके बारे में सोचना चाहिये।

अब जैसे कि हम इस समय अपना आनन्द का समय शुरू करने जा रहे हैं तो मैं इसका बहुत ज़ोर से कहना चाहती हूॅ कि अगर लाटरी ने मेरी बजाय किसी और स्त्री को चुना होता तो ज़्यादा अच्छा होता क्योंकि मैं अपने आपको इतना अक्लमन्द और लायक नहीं समझती जो इस काम को अपने हाथ में ले।

क्योंकि मैं इतना अच्छा बोल भी नहीं सकती जो ऐसे कामों के लिये बहुत जरूरी है। मेरे अन्दर वर्णन करने की इतना अच्छी कला भी नहीं है जितनी यहॉ बैठी दूसरी स्त्रियों में है।

[28] Salardo – First Night : First Fable. Told by Loretta

[29] Salardo, son of Rainaldo Scaglia, quits Genoa and goes to Montferrat where he disobeys certain injunctions laid upon him by his father's testament and is condemned to death therefor, but being deliberted he returns to his own country.

पर क्योंकि यही आप सबकी पसन्द है और यही लौटरी द्वारा निश्चित हुआ है कि मैं ही पहले कहानी सुनाऊँ तो मैं कहानी सुनाना शुरू करती हूँ ताकि किसी को कोई परेशानी न हो।

मैं अपनी पूरी समझ से यह कहानी दैवीय इजाज़त से सुना रही हूँ। इस कहानी के बाद मैं अपनी उन साथिनों के लिये वे वहुत सारे विषय छोड़ दूँगी जो मेरे बाद में कहानी सुनाने वाली हैं ताकि वे मुझसे भी अच्छी तरह से कहानी सुना सकें।

वह बेटा जो अपने पूरे आदर के साथ अपने पिता का कहा मानता है बह केवल खुशकिस्मत ही नहीं बल्कि बहुत खुशकिस्मत होता है क्योंकि उसका कहा मानना भगवान का कहा मानने के बराबर है। वह धरती पर लम्बी उम्र वाला होता है और अपने सब कामों में सफलता पाता है।

दूसरी तरफ जो उसका कहा नहीं मानता उसको बहुत सारे दुख मिल सकते हैं। वह खुश नहीं रहता। उसके शुरू किये गये काम गलत समय पर शुरू होने की वजह से असफल हो जाते हैं। यही मैं आपको अपनी इस कहानी में बताने जा रही हूँ।

ओ कुलीन स्त्रियों। यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है। तुम सबको यह मालूम होना चाहिये कि जिनोआ में जो दुनियॉ के दूसरे शहरों जैसा एक बहुत ही पुराना और समृद्धिशाली शहर है एक भला आदमी रहता था जिसका नाम था रेनाल्डो स्काग्लिया[30]।

[30] Rainaldo Scaglia lived in Genoa (Italy).

यह आदमी बहुत अमीर था साथ में अक्लमन्द और हाजिरजवाब भी बहुत था। इसके एक बेटा था सालारडो[31] जिसको वह अपनी सब चीज़ों से ज़्यादा प्यार करता था

उसने अपने इस नौजवान बेटे को हर तरह की शिक्षा देने की कोशिश की। उसको किसी चीज़ की कमी महसूस नहीं होने दी जो उसकी शिक्षा में बाधा डालती हो।

धीरे धीरे समय गुजरता गया। रेनाल्डो बूढ़ा हो गया। उसको एक गम्भीर बीमारी ने घेर लिया। यह देख कर कि अब उसके मरने का समय पास आ गया है उसने एक नोटरी[32] को बुलाया और अपनी वसीयत लिख दी जिसमें उसने सालारडो को उसने अपनी सब चीज़ों का वारिस बना दिया।

यह सब करने के बाद उसने अपने बेटे से कहा कि वह उसकी याद में उसके कुछ सिद्धान्त माने और उनके खिलाफ कोई काम न करे तो वह सुखी रहेगा।

उसका पहला सिद्धान्त यह था कि वह अपनी पत्नी से चाहे कितना भी प्यार करे पर अगर उसके पास कोई बहुत ही खास राज़ हो तो उसके लिये वह उसके ऊपर भी विश्वास न करे।

---

[31] Salardo – the son of Rainaldo Scaglia

[32] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witnesses and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgements of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage.

उसका दूसरा सिद्धान्त यह था कि वह किसी दूसरे आदमी के बच्चे को अपने बच्चे की तरह से न रखे कहीं ऐसा न हो कि उसकी शादी बेकार की हो।

उसका तीसरा सिद्धान्त यह था कि वह किसी ऐसे राज्य में न रहे जिसमें वहॉ के मजिस्ट्रेट को बिना जॉच पड़ताल किये ज़िन्दगी और मौत का फैसला करने का अधिकार हो।

यह कह कर रेनाल्डो ने अपनी आखिरी सॉस ली और मर गया। अपने पिता की मौत के बाद शानदार नौजवान सालारडो ने थोड़ा दुख मनाया और अपनी जायदाद को देखने भालने की बजाय और अपने पिता के सिद्धान्तों पर ध्यान देने की बजाय जल्दी से अपनी शादी करने में लग गया।

उसने एक अच्छे परिवार की और अपनी पसन्द की लड़की ढूँढी और उसके पिता को मरे अभी एक साल भी नहीं हुआ था कि उसने ओडेस्काल्को डोरिया की बेटी थियोडोरा[33] से शादी कर ली। ओडेस्काल्को पहले नम्बर का एक कुलीन आदमी था।

थियोडोरा बहुत सुन्दर और अक्लमन्द स्त्री थी हालॉकि थोड़ी गर्वीली थी। पर सालारडो उसके पीछे दीवाना था कि वह उसको दिन रात अपनी ऑखों के सामने ही रखता था।

कई साल तक वे खुश खुश रहे पर उनके कोई बच्चा नहीं हुआ। सालारडो को अपने वारिस के लिये बच्चे की बहुत ज़बरदस्त

[33] Theodora, the daughter of Odescalco Doria

इच्छा होने लगी। उसने अपने पिता की सलाह न मानते हुए एक बच्चे को गोद लेने और उसको अपने वारिस की तरह पालने का निश्चय किया।

इसके लिये उसने अपनी पत्नी से सलाह मशवरा किया और ऐसा करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। उसने एक गरीब विधवा का बेटा गोद ले लिया। उसका नाम उसने पोस्टुमियस[34] रख दिया और उसको अच्छी तरह से पढ़ाने लिखाने लगा।

फिर कुछ समय बीत गया। अब कुछ ऐसा हुआ कि सालारडो जिनोआ में रहते रहते थक गया सो वह अब किसी और जगह काम करना चाहता था। ऐसा इसलिये नहीं कि यह शहर कुछ गड़बड़ था लेकिन बस इसलिये कि जो लोग केवल आनन्द के लिये जीते हैं उन्हें अपने रहने की जगह बदलते रहना चाहिये।

सो अपनी प्रिय पत्नी थियोडोरा अपने गोद लिये हुए बेटे पोस्टुमियस और अपनी सम्पत्ति ले कर वह जिनोआ छोड़ कर पियामौन्टे[35] की तरफ चल दिया। रास्ते में वह मौन्टफ़ैराट[36] रुका।

वहॉ पहुॅच कर उसने अलग अलग तरह के लोगों से जान पहचान करनी शुरू कर दी। वह उनके साथ शिकार पर जाता वह उनके साथ मिलता जुलता जिसमें उसको बड़ा आनन्द आता।

---

[34] Postumius
[35] Piamonte
[36] Montferrat

वह अमीर था उदार था सो जल्दी ही वह वहॉ बहुत लोकप्रिय हो गया। अब सारे लोग उसकी इज़्ज़त करते।

धीरे धीरे उसकी इस शानदार मेहमानदारी की खबर वहॉ के राज्य कर रहे राजकुमार मौन्टफ़ैराट के मारकिस[37] के पास पहुॅची जिसने जब यह देखा कि यह एक सुन्दर नौजवान था किसी अच्छे घर में पैदा हुआ था अमीर था शाही तौर तरीके जानता था और किसी भी बहादुरी के काम को करने के लिये हमेशा तैयार रहता था तो उसने भी उसको ऊॅची इज़्ज़त देनी शुरू कर दी।

अब शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब वे आपस में न मिलते हों। आखिर सालारडो ने मारकिस के ऊपर जल्दी ही कुछ ऐसा रंग जमाया कि अगर किसी को मारकिस से कोई काम लेना हो तो वह उसको सालारडो से कहलवाता।

इधर सालारडो को जब मारकिस का इतना प्यार मिला तो वह हमेशा ही उसके लिये कोई नया आनन्द ढूॅढने में लगा रहता। मारकिस भी नौजवान था और बाहर के खेलों में बहुत आनन्द लेता था।

उसके पास शिकार खेलने के लिये बहुत सारे बाज़[38] और हाउन्ड यानी शिकारी कुत्ते थे जो उसके

[37] Marquis – a marquis is a nobleman of hereditary rank in various European peerages and in those of some of their former colonies.

[38] Translated for the word “Falcon”. See its picture above.

ओहदे के लायक थे पर वह शिकार पर कभी बिना सालारडो के नहीं जाता था।

एक दिन सालारडो अकेला था तो मारकिस से मिले हुए प्यार के बारे में सोच रहा था कि धीरे धीरे वह अपने बेटे पोस्टुमियस के बारे में सोचने लगा कि उसका बेटा कितना आज्ञाकारी कितना सीधा और कितना शानदार था।

फिर वह सोचने लगा कि "आह। मेरे बेचारे पिता जी अपने सिद्धान्तों में कितनी गलती पर थे। बहुत सारे दूसरे बूढ़ों की तरह से वह भी अपनी उम्र के साथ बुढ़ा गये थे और कुछ सनकी हो गये थे।

और शायद उसी सनक में उन्होंने मुझे यह सलाह दी होगी कि मैं किसी दूसरे का बच्चा गोद न लूँ। या फिर किसी राजकुमार से दोस्ती न करूँ। अब मुझे लग रहा है कि उनके सिद्धान्त कितने बेवकूफी के थे।

क्योंकि ऐसा कौन सा बेटा होगा जो अपने माँ बाप का होगा और इतना ही अच्छा भला सादा आज्ञाकारी और तरीके वाला होगा जितना कि पोस्टुमियस जिसे मैंने गोद ले रखा है है।

और इतना अच्छा प्यार इतनी इज़्ज़त मुझे और कहाँ मिलेगी जितनी कि इस मारकिस ने मुझे दी है। जो सबसे ऊँचा है और जिसके ऊपर कोई और नहीं है। और इतना ऊँचा होने के बावजूद वह मेरा कितनी इज़्ज़त करता है मुझे कितना प्यार करता है।

कभी कभी मुझे लगता है कि मैं उसकी जगह खड़ा हूँ और वह मेरी जगह है। सच तो यह है कि मुझे खुद ही नहीं पता कि मैं इसे क्या कहूँ।

सच तो यह भी है कि साधारणतया बूढ़े लोगों की यह एक चाल है कि वे अपनी जवानी के समय की पसन्द और इच्छाऐं भूल जाते हैं और अपने बच्चों के ऊपर नियम और सिद्धान्त लागू करते रहते हैं। इस तरह से वे उनके ऊपर वे बोझे लादते रहते हैं जिनको वे उँगली की नोक से भी नहीं छू सकते।

और यह काम वे प्यार की वजह से नहीं करते बल्कि इसलिये करते हैं ताकि वे उनके ऊपर देर तक अपना काबू जमा सकें। अब क्योंकि मैंने अपने ऊपर से अपने पिता के लगाये दो सिद्धान्तों का बोझा उतार दिया है और मुझे उससे कोई नुकसान नहीं हुआ है।

अब जल्दी ही मैं अपने तीसरे सिद्धान्त का बोझा भी उतार दूँगा। क्योंकि जब मैं उसे उतार दूँगा तब मेरी पत्नी मुझे और ज़्यादा प्यार करेगी। और जब मैं उसे अपनी ऑखों की रोशनी से भी ज़्यादा प्यार करूँगा तो वह भी मुझे अपनी वफादारी और प्यार का ठोस सबूत देगी।

जब उन्होंने अपनी वसीयत बनवायी उस समय मेरे पिता जी सचमुच में ही अपने होश में नहीं रहे होंगे क्योंकि उनके जाने के बाद अगर मैं उस पर विश्वास न करूँ मैं किस पर विश्वास करूँ जबकि

वह मेरे लिये अपना घर अपने रिश्तेदार छोड़ कर आयी है और मेरे साथ इतनी घुलमिल गयी है कि मेरा दिल मेरी जान बन गयी है।

मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उसके साथ अपना कोई भेद बॉट सकता हूँ। इससे मैं उसकी वफादारी भी जॉच लूँगा, अपने लिये नहीं क्योंकि मुझे तो उसके ऊपर पूरा विश्वास है पर उसकी ताकत को जॉचने के लिये। और साथ में उन बेवकूफों को गलत साबित करने के लिये जो मरे हुओं की इच्छा को पूरा करने में लगे रहते हैं।

यह सोचते हुए सालारडो ने अपने पिता की अक्लमन्द सलाहों को नजरअन्दाज करते हुए यह सोचा कि वह अपने पिता की सलाहों को पूरी तरीके से बेकार साबित कर देगा।

कुछ देर बाद वह घर से निकला और वहॉ गया जहॉ मारकिस के बाज़ रहते थे। उसने उनमें से एक बाज़ उठाया जो मारकिस को सबसे ज़्यादा पसन्द था। वह उसे छिपा कर अपने एक दोस्त के घर ले गया जिसका नाम फ्रान्सैस्को[39] था।

उसने वह चिड़िया अपने दोस्त को दे दी और उससे अपने प्यार का वास्ता दे कर कहा कि वह उस बात को अपने तक ही रखे किसी को बताये नहीं। वह उसे तब तक अपने पास रखे जब तक वह उससे उसे मॉगे नहीं। उसके बाद वह घर चला गया।

जब वह घर वापस लौट गया तो उसने अपना एक बाज़ लिया और उसे मार दिया। वह उसने अपनी पत्नी को यह कहते हुए दिया

[39] Francesco – the friend of Salardo

— "थियोडोरा। प्रिये। जैसा कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मुझे मारकिस की सेवा करते करते एक पल का भी चैन नहीं मिलता है।

कभी उसके साथ शिकार पर जाना पड़ता है कभी चिड़ियें पकड़ने जाना पड़ता है कभी किसी और दूसरे काम से जाना पड़ता है। कभी कभी तो मुझे अपने ऊपर शक होने लगता है कि मैं ज़िन्दा भी हूँ या मर गया।

इस सब भाग दौड़ से बचने के लिये मैंने उसके साथ एक चाल खेली है जो उसको पसन्द तो नहीं आयेगी पर वह चाल उसको शायद घर पर रहने के लिये मजबूर कर दे और मुझे और दूसरों को थोड़ा आराम दे।"

यह सुन कर पत्नी ने तुरन्त ही पूछा — "और तुमने किया क्या है?"

सालारडो बोला — "मैंने आज उसके सबसे प्यारे बाज़ को मार दिया है। जब वह उसको बेकार में ही ढूँढता फिरेगा और उसको वह मिलेगा नहीं तो वह गुस्से के मारे मर जायेगा।" यह कह कर उसने अपना शाल[40] उठाया और अन्दर से वह बाज़ निकाला जिसे

उसने मारा था उसे अपनी पत्नी को दे कर कहा कि वह उसको उस रात खाने में पका दे।

[40] Translated for the word "Cloak" – a cloth worn over the regular dress. See its picturea above. It may be half also and full up to knee length also.

जब थियोडोरा ने उसकी यह बात सुनी और फिर मरे हुए बाज़ की तरफ देखा तो उसका दिल बहुत दुखी हुआ। उसने सालारडो की तरफ देखते हुए उसको बहुत बुरा भला कहा कि उसे मारकिस के साथ ऐसी बेवकूफी भरा मजाक कर के अच्छा नहीं किया।

उसने पूछा — "यह तुमने क्या सोच कर इतना बड़ा बुरा काम किया और मारकिस का इतना बड़ा अपमान किया। वह तुम्हें कितने प्यार से रखता है तुम्हारा कितना ख्याल रखता है तुमको सबसे ज़्यादा मानता है।

मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है सालारडो कि मुझे लगता है कि अब हमारा अन्त बस अब पास ही है। अगर मारकिस को किसी तरह से यह पता चल जाये कि तुमने उसके साथ क्या किया है तो यकीनन तुम मौत के फन्दे में फॅस जाओगे।"

सालारडो बोला — "पर उसको पता ही कैसे चलेगा। यह भेद तो केवल हमें और तुम्हें ही मालूम है और उस प्यार की कसम जो तुम मुझे करती हो मैं तुमसे विनती करता हूॅ कि तुम उसको नहीं बताना। क्योंकि अगर उसे पता चल गया तब तो हमारी मौत निश्चित ही है।"

थियोडोरा बोली — "तुम डरो नहीं। मैं मर भले ही जाऊॅ पर यह बात उसे नहीं बताऊॅगी।"

सो बाज़ को पकाया गया और उसे शाम के खाने में परसा गया। दोनों खाना खाने बैठे पर सालारडो की पत्नी ने उसे खाने से

मना कर दिया हालॉकि सालारडो ने उसको मीठे शब्दों में समझाने की बहुत कोशिश की पर वह अपनी जिद पर अड़ी रही सो उसने अपनी पत्नी के चहरे पर एक ज़ोर का चॉटा मारा कि उसका पूरा गाल लाल पड़ गया।

इस पर उसने रोना शुरू कर दिया और ज़ोर ज़ोर से कहना शुरू किया कि वह उसका गलत इस्तेमाल कर रहा था। आखिर वह मेज पर से उठ कर बड़बड़ाती हुई चली गयी कि वह इस चॉटे को तब तक याद रखेगी जब तक ज़िन्दा रहेगी और कभी न कभी इसका बदला जरूर लेगी।

जब सुबह हुई तो वह सुबह जल्दी उठी और मारकिस से उसके बाज़ की मौत के बारे में उससे कहने गयी। इस खबर से उसको इतना गुस्सा आया कि उसने सालारडो की गिरफ्तारी का हुक्म दे दिया और उसको बिना किसी सुनवायी के फॉसी का हुक्म सुना दिया।

उसने यह भी हुक्म दिया कि उसकी सम्पत्ति के तीन हिस्से किये जायें। एक हिस्सा तो उसकी पत्नी दे दिया जाये जिसने उसके ऊपर इलजाम लगाया है। उसका दूसरा हिस्सा उसके बेटे को दे दिया जाये और तीसरा हिस्सा उस आदमी को दे दिया जाये जो उसको फॉसी लगायेगा।

पोस्टुमियस अब तक एक सुन्दर नौजवान बन चुका था। उसने जब अपने पिता की इस बदकिस्मती की और उसकी सम्पत्ति के

बॅटवारे की बात सुनी तो वह तुरन्त ही थियोडोरा के पास भागा गया और बोला — "मॉ क्या यह अच्छा नहीं होगा जो अपने पिता को फॉसी खुद मैं लगाऊॅ ताकि हमारे पैसे का तीसरा हिस्सा किसी अनजान आदमी के पास जाने की बजाय हमारे पास ही रह जाये?"

थियोडोरा बोली — "यह तो सच है। तुम ठीक बोलते हो। क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे पिता की सम्पत्ति हमारे पास ही रह जायेगी।"

सो पोस्टुमियस तुरन्त ही फिर मारकिस के पास भागा गया ताकि वह अपने पिता को फॉसी पर लटकाने की इजाज़त ले सके कि उसका हिस्सा उसको खुद को मिल जाये। मारकिस ने उसको यह इजाज़त खुशी से दे दी।

अब सालारडो का भेद तो केवल उसका दोस्त फ्रान्सैस्को ही जानता था। जब सालारडो को फॉसी लगने वाली थी तभी उसने फ्रान्सैस्को के पास अपना एक आदमी भेजा जो उससे यह कहे कि फॉसी लगाने से पहले उसको एक बार सालारडो से मिलना चाहिये और उसके मुॅह से वह सब सुने जो वह अपने बचाव में कहना चाहता था।

फ्रान्सैस्को सालारडो का बहुत वफादार था सो उसने उसकी विनती स्वीकार कर ली।

इस बीच नीच सालारडो जंजीरों से बॅधा जेल में उस समय का इन्तजार कर रहा था जब उसको फॉसी पर चढ़ाया जायेगा।

बहुत ज़ोर से रोते हुए वह बोला — "अब मुझे पता चला कि मेरे भले पिता ने वे सीखें मेरे भले के लिये ही दी थीं। उन्होंने मेरे भले के लिये ही सलाह दी और मैं बेवकूफ ने उनको एक तरफ को उठा कर रख दिया।

मेरी सुरक्षा के बारे में सोचते हुए उन्होंने मुझे अपने घर के दुश्मन से बचने की सलाह दी और मैंने अपने आपको उन्हीं के हाथों में सौंप दिया। अपनी सारी सम्पत्ति उन्हीं के हाथों में दे दी जिससे कि वे उसका आनन्द ले सकें।

वह जो अपने विचारों में इतना अच्छा था उसने मुझे, जो एक घंटे में प्यार भी करे और नफरत भी करे, ऊँचा भी उठा दे और नीचा भी गिरा दे उससे बात करने से भी मना किया।

पर मैं जैसे कि अपनी इज़्ज़त मारकिस के हाथ खोने के लिये तैयार बैठा था अपना सिर उसके चंगुल में देने के लिये तैयार बैठा था और अपनी बेवफा पत्नी से उसको साबित करवा देना चाहता था।

ओह सालारडो। तुम्हारे लिये तो वही ज़्यादा अच्छा होता कि तुम अपने पिता की बात मानते और दूसरे लोगों को राजकुमार का दोस्त बनने देते। अब मुझे पता चल रहा है कि मैं अपनी बेवकूफी में किस तरह से अपने, अपनी पत्नी के और अपने नीच बेटे के और इस सबके ऊपर इस मारकिस के ऊपर विश्वास कर के किस खाई में गिर पड़ा हूँ।

अब मुझे पता चल रहा है कि इस मारकिस के प्यार और दोस्ती की कीमत क्या है। वह मुझसे इससे और ज़्यादा बुरी तरीके से क्या बर्ताव कर सकता था कि वह मेरी सम्पत्ति मेरी ज़िन्दगी मेरी इज़्ज़त सब कुछ एक झटके में ही छीन ले।

इससे तो यह साफ दिखायी पड़ता है कि मेरे लिये उसका प्यार एक पल में ही नफरत में कैसे बदल गया। अब मुझे इस कहावत की सच्चाई समझ में आ रही है कि राजकुमार सुराही[41] में एक शराब की तरह से होता है सुबह को मीठी और शाम को खट्टी।

अब मेरी कुलीनता और मेरे रिश्तेदार कहाँ गये? क्या मेरी वफादारी सीधेपन और तमीज़ का यही बदला है? ओ पिता जी। हालाँकि अब आप नहीं हैं पर अगर जब आप अच्छाई के शीशे में मुझे फाँसी पर लटकते हुए देखते तो कितने दुखी होते कि मैंने आपकी इतनी अच्छी सलाह को क्यों नहीं माना।

आप भगवान से प्रार्थना करते कि वह मेरी जवानी की नादानियों को माफ कर दें। और मैं आपका बेवफा आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने वाला बेटा आपसे प्रार्थना करता कि आप मुझे माफ कर दें।"

[41] Translated for the word "Flagon". Flagon is a large container in which drink is served, typically with a handle and spout. See its picture above.

जब सालारडो अपने आपसे इस तरह से बातें कर रहा था पोस्टुमियस कुछ पुलिस को साथ ले कर फॉसी देने वाले की शान से जेल में पहुँचा और सालारडो से बड़ी शान से बोला — "पिता जी। मारकिस के हुक्म से अब आपको फॉसी तो लगनी ही है और आपकी सम्पत्ति का तीसरा हिस्सा उसको जाना है जो आपके गले में फॉसी का फन्दा डालेगा।

मुझे पूरा यकीन है कि क्योंकि आप मुझे बहुत प्यार करते हैं तो आप इस बात पर नाराज नहीं होंगे कि मैं ही आपके गले में फॉसी का फन्दा डालूँ। बजाय इसके कि आपकी चीज़ें किसी और को जायें वे घर में ही रहें तो अच्छा है।"

सालारडो ने उसकी यह बात बड़े ध्यान से सुनी और बोला — "भगवान तुम्हें खुश रखे बेटे। जो रास्ता तुमने चुना है उससे मुझे बहुत खुशी हुई। और अगर पहले मुझे मौत से डर लग रहा था पर तुम्हारी बात सुन कर तो मुझे बड़ी तसल्ली मिली अब मैं बड़े सन्तोष से मर सकूँगा। इसलिये अब तुम अपना काम जल्दी से करो।"

पोस्टुमियस ने पहले अपने पिता से माफी मॉगी फिर उसे चूमा और फिर उसके गले में फॉसी का फन्दा डाला और उससे प्रार्थना की कि वह शान्ति से मौत का इन्तजार करे।

सालारडो ने जब देखा कि वहॉ तो हालात कुछ और ही हो रहे हैं तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ देर बाद ही उसको जेल से बाहर ले जाया गया।

उसके हाथ बॅधे हुए थे। उसके गले में रस्सी का फन्दा था। उसके साथ उसको फॉसी देने वाला था और कुछ औफीसर थे। उसे फॉसी लगाने की जगह ले जाया जा रहा था।

वहॉ पहुॅचने के बाद वह पलटा और उसने उस सीढ़ी की तरफ देखा जो फॉसी के खॉचे के सहारे खड़ी थी। वह उस पर एक एक सीढ़ी कर के चढ़ रहा था।

जब वह सबसे ऊपर पहुॅच गया तो उसने हिम्मत कर के नीचे जमा लोगों को देखा और उनको विस्तार में बताया कि उसको वहॉ क्यों लाया गया था।

फिर उसने उन सबसे बहुत ही नम्र शब्दों में सबसे माफी मॉगी कि अगर उसकी वजह से उन सबको कोई तकलीफ पहुॅची हो तो वह उन सबसे माफी चाहता है। और सब नौजवानों से विनती की कि उनको अपने अपने पिताओं का कहना मानना चाहिये।

जब लोगों को उसके फॉसी लगने की वजह पता चली तो उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जो उसकी बदकिस्मती पर न रो रहा हो। सभी अपने अपने दिलों में उसके लिये माफी की प्रार्थना कर रहे थे।

जब ये सब घटनाऐं हो रही थीं फ्रान्सैस्को अपने घर से महल की तरफ चल दिया।

उसने आपने आपको वहॉ बताया कि वह कौन था और फिर मारकिस की तरफ देख कर बोला — "यौर मैजेस्टी। अगर आपको कभी किसी के ऊपर दया दिखाने के लिये कहा जाये तो इस समय

यह काम आपको दोगुने उत्साह से करना चाहिये क्योंकि एक तो यह कि यह आपका दोस्त है दूसरे इसका कोई कुसूर नहीं है जिसकी वजह इसे ऐसी शर्मनाक मौत के लिये यहाँ लाया गया है।

माई लौर्ड। ज़रा सोचिये आपने किस कुसूर पर सालारडो को मौत की सजा सुनायी है। वह तो आपको बहुत प्यार करता था और कभी आपके खिलाफ कोई काम करने की सोच भी नहीं सकता था। ओ ऊँची शान वाले राजकुमार। आप ज़रा उसे अपने सामने बुलाइये फिर मैं बताता हूँ कि आपका यह दोस्त बिल्कुल बेकुसूर है।"

फ्रान्सैस्को की दया की प्रार्थना सुन कर मारकिस गुस्से से भर गया और उसने उसको अपने सामने से दूर ले जाने का हुक्म दिया।

पर वह दया माँगने वाला उसके सामने नीचे झुक कर उसके घुटने पकड़ लिये और रो कर बोला — "क्योंकि आप एक न्यायप्रिय राजकुमार हैं। दया कीजिये ओ मारकिस। केवल अपने गुस्से की खातिर बेकुसूर सालारडो को सजा मत दीजिये।

उसके ऊपर दया कीजिये। आप शान्त हो जाइये। मैं उसके बेकुसूर होने का सुबूत पेश करता हूँ। अपने न्याय के लिये जिसके लिये आप और आपके परिवार वाले बहुत मशहूर हैं, अपने हुक्म को केवल एक घंटे के लिये रोक कर रखिये। कहीं ऐसा न हो कि लोग आपको यह कहें कि आपने अपने बेकुसूर दोस्त को मार डाला।"

यह सुन कर मारकिस को फ्रान्सैस्को पर बहुत गुस्सा आया। वह बोला — "मुझे दिखायी दे रहा है कि तुम सालारडो का पक्षपात कर रहे हो। अगर तुम मुझे इसी तरह से बार बार गुस्सा दिलाते रहोगे तो मैं तुम्हें भी उसी के बराबर में खड़ा कर दूँगा।"

फ्रान्सैस्को फिर बोला — "माई लौर्ड। अगर जॉच पड़ताल के बाद आप उसे बेकुसूर न समझें तो मैं आपसे सालारडो के साथ खड़े हो कर मौत से कोई बहुत बड़ा वरदान नहीं मॉग रहा।"

फ्रान्सैस्को के ये आखिरी शब्द मारकिस को कुछ हिला गये क्योंकि उसको लगा कि अगर सालारडो बेकुसूर न होता तो फ्रान्सैस्को यह सब नहीं कह सकता था। इस तरह से तो वह अपनी ज़िन्दगी खतरे में डाल रहा था।

यह कहते हुए कि "अगर फ्रान्सैस्को ने सालारडो के बेकुसूर होने का सबूत नहीं दिया तो उसको भी सालारडो के साथ ही फॉसी पर चढ़ा दिया जायेगा।" उसने सालारडो की फॉसी को एक घंटा टाल दिया।

उसने तुरन्त ही एक दूत न्याय की जगह यानी जहॉ सालारडो को फॉसी लगने वाली थी इस हुक्म के साथ भेजा कि सालारडो की फॉसी को एक घंटा टाल दिया जाये। और सालारडो को जिस हालत में वह था उसी हालत में उसके फॉसी लगाने वाले और औफीसरों के साथ उसके पास लाया जाये।

सालारडो ने मारकिस के पास आ कर देखा कि मारकिस का चेहरा अभी भी गुस्से से लाल हो रहा था फिर भी वह निडर आवाज में बोला — "माई लौर्ड। जो सेवा मैंने आपकी मुफ्त में की और जो प्यार मैंने आपको किया उसके बदले में ऐसा इनाम तो मुझे नहीं मिल सकता। इस तरह का इलजाम लगा कर तो आपने मुझे एक शर्म और बेइज़्ज़ती की मौत दी है।

अगर आप उसे ऐसा कहते हैं तो मैं उसे अपनी बेवकूफी मानता हूँ, और उस वजह से मैं आपके गुस्से का भी हकदार हूँ पर मैंने ऐसा कोई जुर्म नहीं किया जिसकी बिना सुनवायी के इतनी जल्दी आप मुझे इतनी शर्मनाक मौत दे दें।

उस बाज़ की वजह से जिसकी वजह से आपका गुस्सा इतना बढ़ा वह सुरक्षित और तन्दुरुस्त है। मेरे दिमाग में तो यह कभी आया ही नहीं कि मैं उसे मार दूँ या फिर आपकी बेइज़्ज़ती कर दूँ। मैंने तो यह काम एक प्रयोग करने के लिये किया था। मैं अब उसे आपको बताता हूँ कि वह प्रयोग क्या था।"

यह कह कर सालारडो ने फ्रान्सैस्को को उसके घर भेजा कि वह मारकिस का बाज़ वहाँ ले कर आये और ला कर मारकिस को दे दे। फिर उसने अपने पिता के सिद्धान्तों की सारी कहानी मारकिस को सुना दी कि कैसे उन्होंने उसको सलाह दी थी और कैसे उसने उन सबका उल्लंघन किया।

मारकिस ने उसकी जब यह साफ बात सुनी और अपना बाज़ देख लिया जो अभी भी वैसा ही था जैसा पहले था तो वह तो पल भर के लिये कुछ बोल ही नहीं सका।

पर जब उसने अपनी गलती जानी कि वह तो एक बेकुसूर को फॉसी की सजा दे रहा था तो वह रो पड़ा। उसने सालारडो की तरफ देखते हुए कहा — "सालारडो। काश इस समय तुम उसी तरीके से मुझे समझ पाते जैसा कि मैं इस समय महसूस कर रहा हूॅ तो तुम जानते कि जो दर्द तुमने अपने गले में रस्सी का फन्दा पहन कर और हाथ बॉध कर सहा है वह मेरे गुस्से से कहीं ज़्यादा है।

मुझे तो अब यह आशा ही नहीं है कि तुमको इतना ज़्यादा दुख दे कर मैं कभी खुश भी रह पाऊॅगा। तुम जिसने मुझे इतनी वफादारी से प्यार किया और मेरी सेवा की।

काश यह हो सकता कि यह सब मिट जाता तो मैं कितनी खुशी से यह सब मिटा देता पर क्योंकि यह तो अब हो ही नहीं सकता तो मैं अब अपनी पूरी कोशिश करूॅगा कि मैं यह सब पोंछ दूॅ और तुम्हें जो कुछ दे सकता हूॅ दे दूॅ।"

यह कह कर मारकिस ने अपने हाथ से उसके गले का फन्दा खोला उसके बॅधे हुए हाथ खोले और बड़ी कोमलता और प्रेम से उसको अपने गले लगा लिया।

फिर उसने उसका दायॉ हाथ पकड़ा और उसको अपनी सीट के पास रखी एक सीट की तरफ ले गया।

फिर उसने फॉसी देने वाले को हुक्म दिया कि वह पोस्टुमियस के नीच व्यवहार की वजह से फॉसी का फन्दा उसके गले में डाल दे और उसको फॉसी के तख्ते की तरफ ले जाये।

पर सालारडो ने उसको ऐसा करने से रोक दिया। वह बोला — "पोस्टुमियस। तुम्हीं बताओ कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ। जिसको भगवान के प्यार के लिये मैंने बचपन से पाला पोसा क्या इसी लिये कि बड़े हो कर वह मुझे धोखा दे।

एक तरफ तो मेरा तुम्हारे लिये पुराना प्यार है और दूसरी तरफ तुम्हारा यह नीच काम है जो तुमने मेरे खिलाफ रचा। मेरे अन्दर की पिता की भावना मुझसे कहती है कि मैं तुम्हें माफ कर दूँ पर तुम्हारा दूसरा काम मेरे दिल को पत्थर बनाता है। अब बताओ कि मैं क्या करूँ।

अगर मैं तुम्हें माफ कर देता हूँ तो लोग मेरी कमजोरी पर हँसेंगे और अगर मैं तुम्हें सजा देता हूँ तो जैसी कि तुमको मिलनी ही चाहिये तो मैं माफ करने के दैवीय नियम के खिलाफ जाता हूँ।

पर लोगों को मुझे बहुत ज़्यादा आसानी से या बहुत कठोरता से नहीं आजमाना चाहिये। इसलिये मैं तुम्हें न तो बहुत सख्त सजा दूँगा और न मैं अब तुम्हें और अपने सामने देखना चाहता हूँ।

अपनी दौलत के बदले में जिसे तुम इतने लालची निगाहों से देख रहे थे मैं तुम्हें वह फॉसी का फन्दा देता हूँ जो तुम मेरे गले में डाले हुए थे कि तुम उसे हमेशा पहने रहो जो तुम्हें हमेशा तुम्हारे बुरे

काम की याद दिलाता रहेगा। अब तुम यहॉ से चले जाओ। न तो मैं अब तुम्हारा चेहरा देखना चाहता हूॅ और न ही तुम्हारी आवाज सुनना चाहता हूॅ।"

यह कह कर उसने अपने गोद लिये हुए नीच बेटे पोस्टुमियस को वहॉ से बाहर निकाल दिया। इसके बाद उसको न देखा गया और न सुना गया।

थियोडोरा ने जैसे ही सालारडो के छोड़े जाने की खबर सुनी वह वहॉ से एक चर्च में भाग गयी जहॉ उसके आखिरी दिन बहुत खराब बीते।

सालारडो ने जब थियोडोरा के मरने की खबर सुनी तो उसने मारकिस से विदा ली और जिनोआ वापस लौट गया। वहॉ पहुॅच कर जो दौलत उसको इस्तेमाल नहीं करनी थी उसको उसने दान कर दिया। वह बहुत दिनों तक खुशी से रहा।"

जब लौरैटा ने यह कहानी सुनायी तो सुनने वालों में से कई सुनने वाले तो इसे सुन कर रो पड़े। पर जब उन्होंने सुना कि सालारडो को सजा से आजाद कर दिया गया पोस्टुमियस को देश निकाला दे दिया गया और थियोडोरा का इतना खराब अन्त हुआ वे बहुत खुश हुए।

तब मैम ने लौरैटा से कहा कि वह अपनी कहानी पर कोई सवाल पूछे ताकि यह आनन्द शुरू करने से पहले जो बात तय हुई थी वह पूरी हो सके।

लौरैटा मुस्कुराते हुए बोली —
एक जेल में मेरे एक छोटा सा बेटा पैदा हुआ
ओह मेरी बदनसीबी कि वह एक जंगली बौना था
वह एक घुन से भी छोटा था जिसने मुझे खा लिया
और मुझे धूल में बदल दिया
बाद में मैं उसे मॉ की तरह से प्यार करने लगी
वह तो गुलाम की किस्मत से भी खराब हो गया

सुन्दर लौरैटा ने जब देखा कि कोई भी उसकी यह पहेली नहीं सुलझा सका तो वह बोली — "यह मेरी पहेली एक सूखी बीन के बारे में है जो दो छिलकों के अन्दर बन्द है।

बाद में उसको कीड़े से खतरा हो जाता है जो घुन से भी छोटा है। यह कीड़ा उसको खाता रहता है और आखीर में उसको पूरा खा जाता है। सो न केवल वह मॉ की हैसियत से मर जाती है बल्कि उसको किसी नौकर की हैसियत भी नसीब नहीं होती।"

लौरैटा का यह जवाब सुन कर सब बहुत खुश हुए और अल्टीरिया जो उसके बराबर में ही बैठी थी उसको इसके बाद की कहानी सुनाने के लिये चुना गया। अल्टीरिया ने भी मैम के दोबारा कहने से पहले ही अपनी कहानी शुरू कर दी।

पहली रात की पहली कहानी समाप्त

1–2 कैसेन्ड्रीनो[42]

कैसेन्ड्रीनो ने जो एक बहुत ही मशहूर डाकू था और जो पीरूजिया के पादरी का दोस्त था एक बार पादरी का पलंग और उसका घोड़ा जिसका नाम रिआरबो था चुरा लिया मगर बाद में फिर वह एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी बन गया।

अल्टीरिया बोली — "प्रिय बहिनों। आदमी की अक्ल इतनी तेज़ और सूक्ष्म होती है कि किसी को भी उसको भटकाने में मुश्किल होती है। एक बड़ी जानी पहचानी लोकप्रिय कहावत है कि एक आदमी वही करता है जो वह चाहता है। इसी कहावत के आधार पर अब मैं यह कहानी आप सबको सुनाने जा रही हूँ।

हालॉकि यह बात बड़ी अजीब सी बात है पर फिर भी इसको सुन कर आप सबको मजा आयेगा। हो सकता है कि यह आपको उनकी चालाकी दिखा कर सीख भी दे जो चोर हैं।

यह बहुत पुरानी बात नहीं है कि रोमाग्ना के पीरूजिया शहर[43] में जो एक बहुत ही मशहूर और अच्छे लोगों का शहर था जहॉ पढ़ाई बहुत अच्छी होती थी और जहॉ अमीर लोग रहते थे कैसेन्ड्रीनो नाम का एक सुन्दर नौजवान रहता था।

[42] Cassendrino – First Night : Second Fable. Told by Alteria

[43] Perugia city in Romagna– a city in Italy

उस शहर में वह बहुत बदनाम था क्योंकि वह एक चोर था। सारे शहर के पुलिस स्टेशनों से उसके खिलाफ अक्सर लम्बी लम्बी शिकायतें थानेदार के पास आती रहती थीं।

हालॉकि थानेदार उसको उसके बुरे कामों के लिये जिम्मेदार तो ठहराता था पर उसको कोई सजा देने में आलस करता था।

ऐसा इसलिये क्योंकि हालॉकि कैसेन्ड्रीनो एक चोर था पर उसमें एक गुण था जिसकी वजह से थानेदार के साथ उसकी कुछ साख बनी हुई थी।

वह यह कि वह केवल अपने चोरी की आदत के लिये चोरी नहीं करता था बल्कि उसको शान से खर्च करने के लिये करता था और उसमें से कुछ हिस्सा वह उसको भी देता था जो उसकी सहायता करता था।

इसके अलावा वह तमीज़दार भी था और बातों में भी चतुर था लोगों का उससे मिलना भी आसान था। यह सब थानेदार को बहुत पसन्द था। कोई दिन ऐसा जाता होगा जब वे दोनों आपस में न मिलते हों।

लेकिन कैसेन्ड्रीनो तो रोज ही ऐसे कामों में लगा रहता था इसलिये रोज ही उसकी शिकायतें थानेदार के पास आती रहती थीं और उसको उनको ध्यान से सुनना ही पड़ता था। अब अगर न्याय किया जाये तो वह सब कैसेन्ड्रीनो के खिलाफ जाता था।

पर वह उसके न्याय नहीं करना चाहता था क्योंकि उसके दिल में उसके लिये थोड़ी सी दया थी। सो एक दिन उसने कैसेन्ड्रीनो को अपने घर में अपने अन्दर वाले कमरे में बुलाया और उसको समझाने के लिये बहुत ही नम्र शब्दों में उससे बात की।

उसने उससे कहा कि वह अपनी इन हरकतों से बाज़ आ जाये। उसने उसके खतरे भी बताये कि अगर वह ऐसा ही करता रहा तो आगे उसका क्या होगा।

कैसेन्ड्रीनो ने थानेदार ने उससे जो कुछ कहा उसने उसे ध्यान से सुना और जवाब में बोला — "सर। आपने जो कुछ कहा वह मैंने सुना। आपकी अच्छी सलाह भी सुनी जो आपने मुझे प्यार से दी। मुझे यह भी अच्छी तरह से पता है कि यह अच्छी सलाह आपने मुझे मेरे लिये जो आपका प्यार है उसकी वजह से दी है। जिसके लिये मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ।

पर मुझे इसके लिये सचमुच बहुत दुख है कि कुछ बेवकूफ लोग जलन की वजह से हमारे पीछे पड़े हैं और हमेशा हमको गालियाँ देने के लिये तैयार रहते हैं।

ये लोग जो हमारे बारे में कहानियाँ कहते हैं इनके लिये अच्छा है कि ये बजाय इसके कि ये अपनी जबान हमको दुखी करने के लिये चलायें अपनी जहर भरी जबान अपने मुँह के अन्दर ही रखें।"

थानेदार कैसेन्ड्रीनो को बहुत प्यार करता था सो उसको कैसेन्ड्रीनो की कहानी पर विश्वास कराने के लिये और लोगों की

शिकायतों पर ध्यान न देने के लिये बहुत समय की जरूरत नहीं पड़ी। वह तो वैसे ही उस पर बहुत विश्वास करता था।

अब ऐसा हुआ कि इसके बाद जल्दी ही एक दिन कैसेन्ड्रीनो थानेदार के घर खाना खाने के लिये खाने की मेज पर बैठा था तो उसने एक नौजवान के बारे में थानेदार से कहा कि उस नौजवान का हाथ इतना हल्का था कि वह चीज़ के मालिक के जाने बिना ही उसकी कोई भी चीज़ चुरा लेता था चाहे कोई उसकी कितनी भी रक्षा क्यों न कर रहा हो। चाहे वह कितने भी पहरे में क्यों न हो।

जब थानेदार ने यह सुना तो वह हॅस पड़ा और बोला — "कैसेन्ड्रीनो। यह चोर तुम्हारे अलावा कोई और नहीं हो सकता। क्योंकि इससे ज़्यादा चालाक आदमी तो कोई और है ही नहीं। पर तुम्हारा इम्तिहान लेने के लिये मैं सोने के **100** फ्लोरिन[44] दॉव पर लगाता हूॅ अगर तुम आज रात को जब मैं सो रहा होऊॅ तो मेरे सोने के कमरे में से मेरा पलंग बाहर निकाल लो।"

कैसेन्ड्रीनो यह सुन कर थोड़ा सा परेशान हो गया पर फिर सॅभल कर बोला — "सर। आपके इस तरह से कहने से मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे आप मुझे ही वह चोर समझ रहे है पर मैं कह रहा हूॅ कि मैं वह चोर नहीं हूॅ और न ही मैं उस चोर का बेटा हूॅ। मैं अपनी भौंहों के पसीने की और अपने काम और मेहनत की कमाई

[44] Maybe Italy's currency in those times

पर जीता हूँ और जो मुझसे अपने लिये सबसे अच्छा बन पड़ता है वह मैं करता हूँ।

पर अगर आपकी यह इच्छा है कि इस वजह से मैं फॉसी के फन्दे तक जाऊँ तो मेरे दिल में जो इज़्ज़त आपके लिये है उसको रखने के लिये मैं इस काम को जरूर करूँगा।"

यह कह कर कैसेन्ड्रीनो वहॉ से चला गया। क्योंकि वह इस बात के लिये बहुत उत्सुक था कि वह थानेदार की इस बेकार की इच्छा को पूरा करे।

वह सारा दिन अपने दिमाग में यही सोचता घूमता रहा कि बिना अपने आपको धोखा दिये वह थानेदार के नीचे से उसका पलंग कैसे निकाले। आखिर उसके दिमाग में यह प्लान आया।

शहर का एक बड़ा डाक्टर हाल ही में मर कर चुका था और उसी दिन उसको अपने परिवार की जमीन में गाड़ा गया था। रात को 12 बजे कैसेन्ड्रीनो उसकी कब्र पर गया वहॉ से डाक्टर का शरीर पैर पकड़ कर खींचा।

बाहर लाने के बाद उसने उसके कपड़े उतारे उसके कपड़े खुद पहने और अपने कपड़े उसको पहनाये। वे कपड़े उसको इतने अच्छे फिट आये कि अब वह बिल्कुल कैसेन्ड्रीनो लग रहा था डाक्टर नहीं।

कैसेन्ड्रीनो ने उस लाश को अपने कन्धे पर उठाया और बड़ी सावधानी से उसको थानेदार के महल ले गया। उसको लिये लिये ही वह एक सीढ़ी से महल की छत पर चढ़ गया।

वहॉ पहुँच कर उसने बिना कोई शोर किये हुए एक को बार[45] की सहायता से छत के टाइल्स उखाड़े और उस कमरे की छत में जिसमें थानेदार सोया हुआ था एक बड़ा सा छेद कर लिया।

उस दिन की रात थानेदार को नींद कहॉ। वह तो बिल्कुल अच्छी तरह से जागा हुआ था। उसने वह सब कुछ साफ तरीके से सुना जो कुछ भी वहॉ हो रहा था। हालॉकि उसको पता चल रहा था कि उसकी छत को क्या जा रहा था फिर भी वह मन ही मन हॅसता रहा।

हर पल वह इसी इन्तजार में था कि अब कैसेन्ड्रीनो उसके कमरे में घुसेगा और अब उसका पलंग उसके नीचे से ले जाने की कोशिश करेगा।

उसने अपने मन में सोचा "ओह मिस्टर कैसेन्ड्रीनो। तुम कम से कम आज की रात मेरा पलंग नहीं चुरा सकते।"

जब वह यह सब सोच सोच कर मन ही मन खुश हो रहा था और किसी भी पल कैसेन्ड्रीनो के आने का इन्तजार कर रहा था

[45] Crow bar is an iron barwhich has its one end like a hook – see its picture above.

कैसेन्ड्रीनो ने डाक्टर का मरा हुआ शरीर थानेदार के साने वाले कमरे की छत में किये गये छेद से नीचे गिरा दिया।

इससे जो शोर हुआ तो थानेदार अपने बिस्तर से कूद गया और उसने एक मोमबत्ती जलायी तो वह तो वहॉ कैसेन्ड्रीनो को देखने की आशा कर रहा था सो उसने उस मरे हुए शरीर को कैसेन्ड्रीनो का शरीर ही समझा क्योंकि वह उसी के कपड़े पहने हुए था और अब गुड़मुड़ी बना हुआ उसके कमरे के फर्श पर पड़ा था।

जब उसने उसके कपड़े पहचाने तो वह तो उसको देख कर बहुत दुखी हो गया और चिल्ला पड़ा — "ओह यह मैं क्या देख रहा हूॅ। केवल अपनी बेवकूफी भरी इच्छा को सन्तुष्ट करने के लिये मैंने इस आदमी को मार दिया।

अगर लोगों को यह बात पता चल गयी कि कैसेन्ड्रीनो मेरे घर में मरा है तो लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे। सच तो यह है कि किसी को भी कोई भी काम करते समय बहुत ही सावधान रहना चाहिये।"

थानेदार इस तरह से रोता हुआ अपने एक वफादार नौकर को जगाने के लिये गया। उसको जगा कर उसने उसको यह दुर्घटना बतायी और उससे अपने बागीचे में एक गड्ढा खोदने की विनती थी ताकि वह इस झूठी खबर को फैलने से बचा सके।

इधर तो वे लोग उस लाश को गाड़ने के इन्तजाम में लगे थे कैसेन्ड्रीनो ने जो थानेदार के हर काम को ध्यान से देख रहा था देखा कि अब कमरा काफी देर के लिये खाली था सो उससे जितनी जल्दी

हो सका वह एक रस्सी के सहारे कमरे में उतरा उसके पलंग की एक गठरी बनायी और उसको कन्धे पर लाद कर बाहर आ गया।

थानेदार ने जब लाश को दफ़ना दिया तो वह सोने के लिये अपने कमरे में आया तो देखा कि उसका तो पलंग ही वहॉ से गायब था। यह देख कर वह सारी रात बिल्कुल नहीं सो सका इसलिये उसके पास यह सोचने के लिये बहुत समय था कि उसका दोस्त कैसेन्ड्रीनो कितना चालाक और होशियार था।

अगले दिन अपने वायदे के अनुसार कैसेन्ड्रीनो थानेदार के महल पहुॅचा और उससे मिला जिसने जैसे ही उसको देखा तो बोला — "ओह कैसेन्ड्रीनो तुम वाकई चोरों के राजा हो। कल किस सफाई से तुमने मेरे नीचे से मेरा पलंग चुरा लिया। तुम्हारे सिवा ऐसा और कौन हो सकता है जो ऐसा काम कर सके।"

कैसेन्ड्रीनो चुप बैठा रहा। उसके मुॅह पर आश्चर्य के भाव थे। वह ऐसा दिखा रहा था जैसे इस चोरी में उसका कोई हाथ नहीं था।

थानेदार ने अपना कहना जारी रखा — "तुमने मेरे ऊपर कल कितनी बढ़िया चाल खेली। पर मैं तुमसे अपने ऊपर एक और चाल खिलवाना चाहता हूॅ। मैं यह देखना चाहता हूॅ कि तुम मेरे साथ और कितनी बड़ी चाल खेल सकते हो।

अगर आज की रात तुम मेरा लियार्डो[46] घोड़ा चुरा कर दिखाओ जो मेरा सबसे अच्छा घोड़ा है तो मैं तुम्हें सोने के **100** फ्लोरिन और

[46] Liardo horse – name of the horse of Thanedar

दूँगा। यह उसके अलावा होगा जो मैंने अपने पुराने वायदे के अनुसार तुम्हें पहले देने का वायदा किया था।

कैसेन्ड्रीनो ने अपने लिये जब यह नया काम सुना तो वह बहुत सोच में पड़ गया और ज़ोर से रोते हुए बोला कि वह उसको इस बुरे काम से बचाये और उसको किसी तरह की सजा में न पड़ने दे।

थानेदार को लगा कि कैसेन्ड्रीनो ने उसके कहे को नहीं माना सो वह गुस्सा हो गया और बोला — "अगर तुमने मेरा कहना नहीं माना तो मैं तुम्हें शहर की दीवार से लटकवा कर मार डालूँगा।"

कैसेन्ड्रीनो ने देखा कि उसका मामला तो बिगड़ रहा है, और वह भी थोड़ा नहीं बल्कि उसकी तो जान तक खतरे में है, सो वह बोला — "आपको सन्तुष्ट करने के लिये मुझसे जो कुछ भी हो सकता है वह मैं करूँगा पर आप मेरा विश्वास करें कि जो कुछ भी आप मुझसे करने के लिये कह रहे हैं वह मेरी ताकत से बाहर है।"

और यह कह कर वह चला गया। जैसे ही वह चला गया तो थानेदार ने जिसने इस बार पक्का कर रखा था कि वह कैसेन्ड्रीनो की होशियारी का कड़ा इम्तिहान लेगा। उसने अपने एक वफादार नौकर को बुलाया।

उसने उससे कहा — "तुम अस्तबल में जाओ और मेरे घोड़े लियार्डो को उसके ऊपर जीन कस कर उसे तैयार करो। सारी रात उस पर चढ़ कर उसकी निगरानी करो ताकि कोई उसे चुरा कर न ले जाये।"

फिर उसने एक दूसरा नौकर बुलाया और उससे कहा कि वह इस बात का ध्यान रखे कि महल के दरवाजे खिड़कियॉ सबमें ताला लगा रहे।

उस रात कैसेन्ड्रीनो ने अपने सारे औजार लिये और थानेदार के महल के मुख्य दरवाजे की तरफ चल पड़ा। वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि चौकीदार तो ऊॅघ रहा है।

पर वह क्योंकि उस महल का चप्पा चप्पा जानता था उसने चौकीदार को तो सोने दिया और महल का दूसरा रास्ता ले कर महल के ऑगन में पहुॅच गया। वहॉ से वह अस्तबल की तरफ गया तो उसने देखा कि उसमें तो मजबूत ताला लगा है।

उसने उसका दरवाजा बिना किसी मुश्किल के ही खोल लिया। दरवाजा खोलते ही वह क्या देखता है कि थानेदार के प्रिय घोड़े पर तो एक आदमी बैठा है और उसके हाथ में उस घोड़े की लगाम है। पर जब वह उसके पास तक पहुॅचा तो उसने देखा कि वह भी सो रहा है।

चालाक कैसेन्ड्रीनो ने देखा कि वह तो उस पर बैठा बैठा बहुत गहरी नींद सो रहा है तो उसके दिमाग में तुरन्त ही एक प्लान आया – इतना चतुर कि कोई उस पर विश्वास ही नहीं कर सकता। उसने सावधानी से घोड़े की ऊॅचाई नापी और बागीचे में जा कर वहॉ से

वैसे चार मजबूत डंडे ले आया जैसे बेलें चढ़ाने के लिये लकड़ी की जाली[47] बनाने के काम आते हैं।

उनको उसने किनारों पर से नुकीला कर लिया और उससे घोड़े की लगाम काट दी जिसे वह चढ़ने वाला आदमी अपने हाथ में लिये बैठा। उसने उसकी और भी कई चीज़ें काट दीं जो भी उसके घोड़ा चुराने के रास्ते में आ रहा था।

फिर उसने उन चारों लट्ठों में से एक लट्ठा जमीन में गाड़ दिया और उसके ऊपर वाले हिस्से को जीन के फन्दे में फॅसा दिया। घोड़े के दूसरी तरफ भी उसने कुछ ऐसा ही किया। बाकी बचे हुए दोनों कोनों के साथ भी उसने ऐसा ही किया।

फिर उसने घोड़े पर रखी हुई जीन को चारों तरफ से घोड़े पर से थोड़ा सा ऊपर को उठा दिया। नौकर इतनी देर तक उस पर सोता ही रहा। बस उसने घोड़े को बाहर निकाला और हॉक कर ले चला।

थानेदार जब सुबह सवेरे उठा तो तुरन्त ही अपने अस्तबल में गया तो वह तो यह सोच कर गया था कि उसको अपना घोड़ा वहॉ दिखायी दे जायेगा पर यह देख कर तो वह दंग रह गया कि वहॉ तो केवल उसका नौकर था घोड़ा नहीं।

उसका वह नौकर अभी भी उसके घोड़े की जीन पर बैठा गहरी नींद सो रहा था और उसकी जीन चार डंडों के सहारे बीच में झूल

[47] Translated for the word “Trellis”. See its picture above.

रही थी। थानेदार ने उसको जगाया और बहुत बुरा भला कहा। फिर जो कुछ भी उसने देखा उसका दृश्य अपनी ऑखों में लिये हुए अस्तबल से अपने महल चला गया।

सुबह को कैसेन्ड्रीनो अपने रोज के समय पर थानेदार के महल आया और थानेदार के सामने पहुॅच कर उसको एक खुशी से भरा सैल्यूट दिया।

थानेदार बोला — "कैसेन्ड्रीनो। तुम तो चोरों में उनका झंडा ले कर जाने वालों मे से एक हो। मैं तुम्हें यकीनन "चोरों के राजा" का खिताब देता हूॅ। पर फिर भी मैं तुम्हारा एक इम्तिहान और लेना चाहता हूॅ कि तुम कितने चतुर और हाजिरजवाब हो।

मेरे ख्याल से तुम सैन्गैलो के पादरी सैवेरीनो[48] को तो जानते ही होगे। अगर तुम उसे एक थैले में भर कर मेरे पास ले आओ तो मैं तुम्हें उतना ही पैसा और दूॅगा जितना कि तुमने अभी मुझसे कमा लिया है। पर अगर तुम यह काम न कर सके तो पक्का समझना कि मैं तुम्हें फॉसी पर लटका दूॅगा।"

अब यह मिस्टर सैवेरीनो बेचारा एक बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी गुजार रहा था। उसकी समाज में बहुत इज़्ज़त थी पर वह दुनियॉदारी से बहुत दूर था। वह केवल अपने चर्च की परवाह करता था किसी और की नहीं।

[48] Priest Severino of Sangallo

कैसेन्ड्रीनो ने समझ लिया कि यह थानेदार उसको नुकसान पहुॅचाने पर तैयार है। सो उसने अपने मन में सोचा मुझे यह साफ दिखायी दे रहा है कि यह आदमी मेरी मौत प्लान कर रहा है पर यह इस काम में भी धोखा खायेगा। मैं भी इतनी जल्दी मरने वाला नहीं हूॅ। क्योंकि यह काम अगर मुझे करना है तो मैं कर के ही रहूॅगा।

कैसेन्ड्रीनो थानेदार का कहा करने के लिये सोचने लगा कि वह अपनी कौन सी चाल खेले जिससे वह उसका यह काम पूरा कर पाये। सोचते सोचते वह इस नतीजे पर पहुॅचा।

उसने अपने एक दोस्त से एक पादरी की पोशाक उधार ली जो उसकी एड़ी तक आती थी। उसने उससे एक ओढ़ने वाला स्टोल[49] भी लिया जिस पर बहुत सुन्दर कढ़ाई की गयी थी और उन दोनों को ले कर अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने कार्डबोर्ड के दो सुन्दर पंख बनाये जिनको उसने कई रंगों में रंग लिया। एक उसने ताज बनाया जो बहुत चमक रहा था। रात को वह अपना सब सामान ले कर चोरी से शहर की तरफ चला। बीच में ही वह गॉव पड़ता था जिसमें वह पादरी रहता था। वहॉ पहुॅच कर वह एक कॉटे वाली घनी झाड़ी में तब तक के लिये छिप कर लेट गया जब तक सुबह होती।

[49] Stole is a strip of cloth worn over the dress, sometimes for fashion and sometimes ceremonially. See its picture above. The green strip is the stole.

सुबह होते ही कैसेन्ड्रीनो ने अपनी पोशाक पहनी अपना स्टोल पहना अपने पंख लगाये ताज पहना। यह सब कर के वह फिर से उसी झाड़ी में छिप गया और वहॉ तब तक बिना हिले डुले खड़ा रहा जब तक पादरी जी सुबह की पूजा के लिये घंटा बजाने नहीं आये।

कैसेन्ड्रीनो मुश्किल से तैयार ही हुआ था कि मिस्टर सैवेरीनो अपने असिस्टैन्ट के साथ चर्च में आये। उन्होंने चर्च का दरवाजा खुला छोड़ रखा था और वह अपनी सुबह की पूजा की तैयारी में लगे थे।

कैसेन्ड्रीनो ने जो उस पर बराबर ध्यान रखे था देखा कि चर्च का दरवाजा खुला पड़ा है और वह भला पादरी घंटा बजा रहा था। वह अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और चुपचाप चोरी से चर्च में घुस गया।

चर्च में घुसते ही वह सीधा चबूतरे पर चला गया और अपने एक हाथ में एक थैला ले कर वहॉ सीधा खड़ा हो गया और बहुत ही धीमी आवाज में बोला "जो स्वर्ग की खुशियॉ लूटना चाहता है वह मेरे इस थैले में आ जाये।"

और वह ये शब्द बराबर दोहराता रहा।

जब वह यह सब कर रहा था तो पादरी का असिस्टैन्ट चर्च में घुसा और जब उसने सफेद पोशाक देखी सूरज की तरह चमकता ताज देखा मोर के पंखों की तरह चमकते पंख देखे और उसके वे

शब्द सुने जो वह कह रहा था तो वह तो बस उसे ही देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

जब वह सँभला तो तुरन्त ही पादरी को ढूँढने भागा। पादरी के मिलते ही उसने उससे कहा — "सर सर। मैंने अभी अभी चर्च में स्वर्ग से आया एक देवदूत[50] देखा है। उसके हाथ में एक थैला है और वह कह रहा है कि जो कोई भी स्वर्ग की खुशियाँ लूटना चाहता है वह मेरे थैले में आ जाये। सर। मैंने तो इरादा कर लिया है कि मैं तो वैसा ही करूँगा जैसा वह कहता है।"

पादरी जिसका ऊपर का हिस्सा ठीक से भरा हुआ नहीं था यानी उसके दिमाग में बिल्कुल भी जान नहीं थी उसने अपने असिस्टैन्ट की बात मान ली। जैसे ही वह अपने दफ्तर से निकला तो सामने ही देवदूत को खड़ा पाया। वह वैसे ही खड़ा था जैसा उसके असिस्टैन्ट ने कहा था।

वह देवदूत के शब्दों से बहुत प्रभावित था। उसको लगा कि इस तरह से वह सुरक्षित रूप से स्वर्ग पहुँच जायेगा।

पर साथ में उसको यह भी डर था कि कहीं उसका असिस्टैन्ट उससे पहले उस थैले में न चला जाये सो उसने अपने असिस्टैन्ट को अपने घर यह देखने के लिये भेजा कि वह उसका घर ठीक से देखे कि वह अपनी रोज की पूजा की किताब कहीं घर पर तो नहीं छोड़ आया और जैसे ही वह मिल जाये उसे ले कर तुरन्त वापस आये।

[50] Translated from the words "Angel from Heaven"

जब उसका असिस्टैन्ट वहॉ से उसकी पूजा की किताब लाने के लिये चला गया तो पादरी देवदूत के पास पहुॅचा बड़े आदर के साथ उसके सामने झुका और थैले में घुस गया।

कैसेन्ड्रीनो ने जो चालाकियॉ खेलने में बहुत होशियार था यह देख कर कि उसका उद्देश्य पूरा हो गया है अपने थैले का मुॅह कस कर बॉधा और वहॉ से चल दिया।

उसने अपनी सफेद पोशाक अपना ताज अपने पंख सब उतार कर उनकी एक पोटली बनाली और उस पोटली और थैले को अपने कन्धे पर डाल कर वहॉ से पीरूजिया चल दिया।

दिन निकलते निकलते ही वह पीरूजिया पहुॅच गया और अपने कन्धे पर थैला लादे अपने समय पर थानेदार के महल पहुॅच गया। वहॉ पहुॅच कर उसने अपना थैला खोला और मिस्टर सैवेरीनो को उसमें से बाहर निकाला

जब मिस्टर सैवेरीनो ने बाहर निकल कर अपने आपको थानेदार के सामने पाया तो वह ज़िन्दा कम और मरा हुआ ज़्यादा लग रहा था। यह जान कर कि एक बेवकूफ की चाल ने उसको इतना बड़ा धोखा दे दिया था उसने कैसेन्ड्रीनो के ऊपर बहुत भारी इलजाम लगाया।

वह ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर कह रहा था कि उसको लूटा गया है। उसको चालाकी से थैले में बन्द कर लिया गया है जिससे उसको बहुत नुकसान हुआ है और अब समाज में भी उसको बहुत शरम

आयेगी। इसलिये उसकी यह इच्छा है कि कैसेन्ड्रीनो को इस तरह के जुर्म के लिये कड़ी से कड़ी सजा दी जाये ताकि सबको इससे सीख मिल सके।

थानेदार जिसने शुरू से आखीर तक यह सब किया था अपने आपको ज़ोर से हॅसने से न रोक सका।

फिर वह मिस्टर सैवेरीनो की तरफ मुड़ा और उससे कहा — "मेरे अच्छे फादर और दोस्त। बस अब आप चुप हो जाइये और अपने आपको दुखी भी मत कीजिये क्योंकि आपको कभी भी किसी तरह की कोई कमी नहीं रहेगी और न ही आपको न्याय की कमी रहेगी। जैसा कि मैं समझ रहा हूॅ आपके साथ बस यह एक मजाक हुआ है।"

तब थानेदार ने बहुत समझा बुझा कर उसको सन्तुष्ट करने की कोशिश की। फिर उसने एक पैकेट उठाया जिसमें सोने के कई टुकड़े थे वह उसने पादरी को दिया और अपने लोगों से कहा कि वे उसको आदर सहित गॉव वापस छोड़ आयें।

फिर वह कैसेन्ड्रीनो की तरफ घूमा और बोला — "कैसेन्ड्रीनो, कैसेन्ड्रीनो। सचमुच में तुम्हारे बेईमानी के काम तुम्हारी बदनामी से जो बाहर के देशों में भी फैली हुई है ज़्यादा अच्छे हैं। इसलिये लो ये सोने के **400** फ्लोरिन लो जिनको मैंने तुम्हें देने का तुमसे वायदा किया था क्योंकि तुमने इनको बिना किसी धोखाधड़ी के हासिल किया है।

पर अब आगे से तुम ख्याल रखना कि तुम अबसे आगे से अच्छे काम करोगे, वैसे नहीं जैसे तुमने पहले किये थे। क्योंकि अब अगर मैंने तुम्हारी किसी बेईमानी की शिकायत सुनी तो तुम यकीनन फॉसी पर लटका दिये जाओगे।"

इस पर कैसेन्ड्रीनो ने थानेदार से सोने के **400** फ्लोरिन लिये उसको इसके लिये धन्यवाद दिया और वहॉ से चला गया। उसने इस पैसे को अच्छे काम में लगाया और खूब फला फूला। आगे जा कर वह शहर का एक बहुत बड़ा आदरणीय आदमी बन गया।"

वहॉ बैठे आदमी और स्त्रियॉ अल्टीरिया की यह कहानी सुन कर बहुत खुश हुए। फिर उन्होंने उससे एक पहेली पूछने के लिये कहा तो अल्टीरिया बोली —

जब मैं रात को पहरा दे रही थी मैंने देखा कि वह बहुत धीरे धीरे रो रहा है
कमरे में जा कर मैंने उससे कहा कि सर बर्नार्ड आप अपने बिस्तर पर लेटिये।
दो आपके कपड़े उतारेंगे चार आपके दरवाजे कस कर बन्द करेंगे
और आठ ऊपर वाले आपकी पहरेदारी करेंगे
और दूसरों को बच कर रहने के लिये कहेंगे
जब मैंने ये धोखा देने वाले शब्द कहे तो वह चोर डर के मारे भाग गया

अल्टीरिया ने देखा कि अब समय काफी बीत गया है और कोई उसकी पहेली नहीं सुलझा पायेगा तो उसने उसका यह हल दिया — "एक भला आदमी अपना सारा सामान ले कर एक दूसरे देश गया अपने महल की रखवाली के लिये वह एक बुढ़िया को छोड़ गया।

उसके जाने के बाद बुढ़िया ने अब अपनी यह आदत बना ली थी कि वह रात को सब जगह घूमती फिरती ताकि अगर कोई चोर हो तो वह उसे पकड़ सके।

एक दिन ऐसा हुआ कि उसने एक चोर छज्जे पर खड़ा हुआ देख लिया और उस चोर ने बुढ़िया को एक छेद में से देख लिया। उस भली बुढ़िया ने किसी तरह से अपने आपको शोर मचाने से रोक लिया और उसको यह विश्वास दिला दिया जैसे बुढ़िया को लगा हो कि वह उसका मालिक था।

सो उसी के अनुसार वह बोली — "सर बर्नार्ड आप अपने बिस्तर पर लेटिये। दो आपके कपड़े उतारेंगे चार आपके दरवाजे कस कर बन्द करेंगे और आठ ऊपर खड़े हो कर आपकी पहरेदारी करेंगे।" जब वह बुढ़िया ऐसा हुक्म दे रही थी तो चोर को लगा कि उसको पहचान लिया गया है सो वह डर के मारे वहॉ से भाग गया।"

जब अल्टीरिया की होशियारी भरी पहेली सुलझा दी गयी तो कैटेरूज़ा[51] जो उसके पास ही बैठी हुई थी उसको याद आया कि उस रात की तीसरी कहानी तो वह सुनाने वाली है सो वह मुस्कुरायी और उसने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

पहली रात की दूसरी कहानी समाप्त

[51] Cateruzza – the third story teller of the first night

1–3 प्री स्कारपाफ़ीको[52]

प्री स्कारपाफ़ीको[53] को एक बार तीन डाकुओं ने धोखा दिया तो बदले में उसने भी उनको तीन बार धोखा दिया और फिर उसके बाद वह ज़िन्दगी भर खुश खुश रहा।

सो कैटेरूज़ा ने कहना शुरू किया — "अल्टीरिया की कहानी के अन्त ने जैसा कि उसने उसे इतनी होशियारी से किया था मुझे मेरी अपनी कहानी बनाने में बहुत सहायता की है। इसको सुन कर आप उससे कम खुश नहीं होंगे।

हालॉकि एक जगह पर यह कहानी थोड़ी सी अलग हो जाती है। जैसे उसकी कहानी में तो प्री सैवेरीनो[54] कैसैन्ड्रीनो के जाल में फॅस जाता है जबकि इस कहानी में जो मैं आपको अभी सुनाने जा रही हूँ उसमें प्री स्कारपाफ़ीको उनके जाल में नहीं फॅसता जो लोग उसको तंग करने के लिये आ रहे थे बल्कि वह भी उन पर कोई कम शान से जाल नहीं फेंकता।

इमोला शहर[55] के पास एक जगह पर एक पादरी रहता था जिसका नाम था प्री स्कारपाफ़ीको और जो पोस्टैमा[56] के चर्च को देखता भालता था।

---

[52] Pre Scarpafico – First Night : Third Fable. Told by Cateruzza
[53] Pre Scarpafico – means Priest or Father Scarpafico
[54] Pre Severino – means Priest or Father Severino
[55] Imola city – almost always plagued by factious quarrels and ultimately destroyed thereby
[56] Postema Church

वह अच्छा खाता पीता आदमी था पर बहुत ही कंजूस और लालची था। उसके पास उसके घर का काम करने के लिये एक स्त्री थी जिसका नाम था नीना[57]। वह बहुत ही जिद्दी किस्म की और चतुर स्त्री थी।

वह इतनी ज़्यादा तेज़ तर्राट और पीछे पड़ने वाली स्त्री थी कि कोई आदमी यह नहीं बता सकता था कि कब उसके दिमाग में क्या रहता था। पर वह अपने काम में इतनी वफादार और मेहनती थी कि प्री स्कारपाफ़ीको उसकी बहुत इज़्ज़त करता था।

जब यह भला प्री स्कारपाफ़ीको जवान था तब वह एक बहुत ही खुशमिजाज पादरी था जैसे कि वहॉ के और दूसरे पादरी थे। पर अब उसकी उम्र की वजह से समय कुछ ऐसा आ गया था कि उसको पैदल चलना बहुत मुश्किल हो गया था।

इसलिये उसके घर की देखभाल करने वाली भली नौकरानी नीना उसको कुछ समय से उसके पीछे पड़ी थी कि वह अपने लिये एक घोड़ा खरीद ले ताकि थकान की वजह से हुए उसके लम्बे दिन कुछ छोटे हो जायें।

आखिरकार नौकरानी की लगतार जिद से मजबूर हो कर एक दिन प्री स्कार्पाफ़ीको बाजार गये और बहुत देखने भालने के बाद उनको एक खच्चर पसन्द आया जो उनको अपनी जरूरत के अनुसार ठीक लगा और उनको पसन्द भी आया।

[57] Nina – name of the housekeeper of Pre Scarpafico.

उन्होंने उसे सात सोने के फ्लोरिन दे कर ले लिया।

अब हुआ क्या कि उस दिन वहाँ बाजार में तीन खुश खुश आदमी भी थे। वे ऐसे थे जो बजाय अपनी कमाई के दूसरे की कमाई पर ज़िन्दा रहते थे – जैसे पहले कभी हमारे समय में हुआ करता था।

सो जैसे ही उस पादरी का सौदा पटा उन तीनों में से एक ने दूसरे से कहा — "साथियो। मेरे दिमाग में एक विचार आया है कि यह खच्चर तो हमारा होना चाहिये।"

दूसरे दोनों एक साथ बोले — "पर इस काम को कैसे करना चाहिये।"

पहले वाला बोला — "जब यह घर लौट कर जाये तो हम लोगों को इसके रास्ते में कुछ कुछ दूरी पर खड़े हो जाना चाहिये – जैसे चौथाई चौथाई मील की दूरी पर।

और जब यह हमारे हर एक के पास से गुजरे तो हमें इसको यह विश्वास दिलाने की कोशिश करनी चाहिये कि जो इसने खरीदा है वह तो खच्चर है ही नहीं। वह तो केवल एक गधा है। और अगर हम उसको यह विश्वास दिलाने में सफल हो गये तो फिर यह खच्चर हमारा है।"

इस प्लान के अनुसार वे तीनों सड़क पर कुछ दूरी के अन्तर से खड़े हो गये। जब प्री स्कार्पाफ़ीको पहले आदमी के पास से गुजरे

तो उसने बाजार जाने का बहाना करते हुए कहा — "भगवान आपका भला करे सर।"

पादरी बोला — "तुम्हारा स्वागत है मेरे भाई।"

चोर बोला — "आप कहॉ से आ रहे हैं सर?"

पादरी बोला — "बाजार से।"

चोर ने फिर पूछा — "आज फिर आपको कौन सा सस्ता और अच्छा सौदा पट गया।"

प्री स्कार्पाफ़ीको बोला — "यही बस एक ख़च्चर।"

चोर आश्चर्य से बोला — "कौन सा ख़च्चर सर?"

पादरी आश्चर्य से बोला — "क्यों यही ख़च्चर जिस पर चढ़ कर मैं जा रहा हूॅ।"

चोर बोला — "सर आप मुझसे सच बोल रहे हैं या फिर मुझसे मजाक कर रहे हैं? क्योंकि मुझे तो यह गधा दिखायी दे रहा है न कि ख़च्चर।"

प्री स्कारपाफ़ीको बोला — "क्या सचमुच?" और बिना कुछ और बोले वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर आगे जाने पर उसको एक और आदमी मिला। उसने उससे कहा — "गुड मौर्निंग सर। आप कहॉ से आ रहे हैं?"

प्री स्कारपाफ़ीको बोला — "मैं ज़रा बाजार गया था वहीं से आ रहा हूॅ।"

"और वहॉ खरीदने लायक कुछ था क्या?"

"हॉ यह देखिये यह मैंने एक खच्चर खरीदा है।"

वह आदमी बोला — "क्या सर? क्या आपको यकीन है कि आपने इसे खच्चर समझ कर ही खरीदा है गधा समझ कर नहीं? वे लोग कैसे गधे हैं जिन्होंने आपको इस तरीके से धोखा दिया?"

प्री स्कारपाफ़ीको बोला — "हॉ बिल्कुल। अब अगर किसी ने एक बार और ऐसा कहा तो अबकी बार मैं उसको यह खच्चर ऐसे ही तुरन्त ही दे दूँगा।"

वह फिर आगे चल दिया तो कुछ दूर आगे चल कर उसको तीसरा चोर मिला। वह भी बोला — "गुड मौर्निंग सर। लगता है कि आप बाजार से आ रहे हैं।"

प्री स्कार्पाफ़ीको बोला — "हॉ आ तो रहा हूँ।"

"क्या कुछ खरीदने लायक था वहॉ?"

प्री स्कार्पाफ़ीको बोला — "यह देखो मैंने यह एक खच्चर खरीदा।"

चोर बोला — "खच्चर? क्या आप समझ रहे हैं कि आप क्या कह रहे हैं? जब आप इस गधे को खच्चर बता रहे हैं तो मुझे यकीन है कि आप मुझसे मजाक कर रहे हैं क्योंकि वास्तव में तो यह एक गधा है खच्चर नहीं।"

जब प्री स्कार्पाफ़ीको ने तीसरी बार यह सुना तो उसने उस आदमी से कहा — "जबसे मैंने यह खच्चर खरीदा है तबसे तुम तीसरे आदमी हो जो यह बात मुझसे कह रहे हो। तुमसे पहले दो आदमी और मुझसे यही बात कह चुके हैं।

मैंने उनकी बात का विश्वास नहीं किया पर अब तुम्हारी बात सुन कर मुझे ऐसा लगने लगा है कि सचमुच ही यह जानवर खच्चर नहीं गधा है।" कह कर पादरी जी उस खच्चर से नीचे उतरे और वह खच्चर उस आदमी को दे दिया।

चोर ने पादरी को धन्यवाद दिया और खच्चर ले कर अपने साथियों से मिलने चल दिया। बेचारे प्री स्कारपाफ़ीको को अब पैदल ही घर जाना पड़ा।

जैसे ही वह घर पहुँचे उन्होंने नीना को बताया कि कैसे उन्होंने बजार से यह समझ कर एक जानवर खरीदा कि वह एक खच्चर था और फिर कैसे सड़क पर चलते कई आदमियों ने उनसे कहा कि वह खच्चर नहीं एक गधा था। सो उसने उसे आखिरी आदमी को दे दिया।

यह कहानी सुन कर नीना बोली — "ओह आप कितने सीधे हैं प्री स्कारपाफ़ीको जी। आपको यही पता नहीं चला कि वे आपसे चाल खेल रहे थे। मैं तो सोचती थी कि आप इस सबके लिये काफी अक्लमन्द हैं। अगर आपकी जगह मैं होती तो वे मुझे इस तरह से उल्लू नहीं बना सकते थे।"

प्री स्कारपाफ़ीको बोले — "खैर अब इस गये मामले पर दुखी होने से क्या फायदा। उन्होंने जरूर ही मेरे साथ चाल खेली है। अब देखना अगर मैंने उनकी इस चाल के बदले में उनके साथ दो चालें और नहीं खेलीं तो।

विश्वास रखो कि ये लोग जिन्होंने मुझे एक बार बेवकूफ बनाया है वे केवल इसी से सन्तुष्ट नहीं रहेंगे वे लोग और भी चालें खेलने की योजना बना रहे होंगे ताकि वे मुझे फिर से किसी नये तरीके से बेवकूफ बना सकें।"

अब प्री स्कारपाफ़ीको के घर से कुछ दूरी पर एक किसान रहता था। उसके पास बहुत सारे बकरे बकरियॉ थे पर उनमें से दो बकरे ऐसे थे कि वे देखने में बिल्कुल एक से लगते थे। इतने एक से कि कोई उनको पहचान नहीं पाता था कि कौन कौन सा था।

प्री स्कारपाफ़ीको ने उस किसान से वे दोनों बकरे खरीद लिये और अगले ही दिन उसने नीना से बहुत ही बढ़िया खाना बनाने के लिये कहा – उबली हुई वील मछली, भुना हुआ तीतर, कुछ मॉस, खट्टी मीठी चटनियॉ आदि और मिठाई जो वह प्री स्कार्पाफ़ीको के लिये अक्सर बनाया करती थी। इस खाने के लिये उन्होंने अपने कुछ दोस्तों को भी बुलाया था।

इस बीच उन्होंने एक बकरे को अपने बागीचे की हैज से बॉध दिया था और उसको खाने के लिये कुछ खाना दे दिया था।

दूसरे बकरे की गले में रस्सी का फन्दा डाल कर उसको बाजार की तरफ ले चले। वहॉ उनको वे पिछले वाले तीनों आदमी जो उस दिन उनको धोखा दे कर उनका खच्चर ले कर भाग गये थे मिले।

उनमें से एक बोला — "सर आइये आज आप यहॉ किस काम से आये हैं? इसमें कोई शक नहीं कि आज भी आप कोई अच्छा सौदा करने के लिये ही आये होंगे।"

प्री स्कारपाफ़ीको बोले — "आज मैं छलॉग लगाने वाले का सामान लेने के लिये आया हूॅ क्योंकि आज मेरे घर में मेरे कुछ दोस्त खाना खाने के लिये आ रहे हैं। अगर तुम लोग भी मेरे साथ उस खाने में शामिल होगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

उन चालाक गधों ने प्री स्कार्पाफ़ीको का बुलावा तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। प्री स्कार्पाफ़ीको ने जब अपना सारा सामान जो उसे खरीदना था खरीद लिया तो उसे बकरे की पीठ पर लाद दिया।

और उससे कहा — "जाओ मेरे घर जाओ और नीना से बोलो कि वह यह वील मछली उबालेगी, इस तीतर को और मॉस को भूनेगी और इन मसालों से नमकीन खट्टी चटनी बनायेगी। और मेरे लिये टार्ट[58] बनाना नहीं भूलेगी। समझे तुम। अब जाओ शान्ति से घर चले जाओ।"

कह कर उन्होंने बकरे को वहॉ से भेज दिया।

[58] Tart is a kind of western sweets.

अब वह बकरा जिसे इस तरह से छोड़ दिया गया हो वह कहॉ जाये किधर जाये। वह बेचारा इधर से उधर घूमता रहा। फिर उस पर क्या गुजरी यह कोई नहीं जानता। प्री स्कारपाफ़ीको उनके साथी और कुछ दोस्त शाम के खाने के समय तक बाजार में घूमते रहे।

उसके बाद वे पादरी के घर चले तो उनके घर में घुसते ही पहली चीज़ उन सबने क्या देखी वह था वह बकरा जो प्री स्कारपाफ़ीको ने अपने बागीचे की हैज से बॉध रखा था वह अब अपना खाना खा कर आराम से बैठा हुआ था।

उसको देख कर तो वे तीनों चोर तुरन्त ही बैठ गये क्योंकि यह तो वही बकरा था जिसे प्री स्कारपाफ़ीको ने सामान खरीद कर घर ले जाने के लिये भेजा था। उनको इस बात पर बहुत ही आश्चर्य हुआ।

जब वे अन्दर आ गये तो प्री स्कार्पाफ़ीको ने नीना से पूछा कि क्या उसने वह सब बना कर तैयार कर के रख लिया जो उन्होंने उससे बनाने के लिये कहा था।

उसने भी उनके कहे का मतलब समझा और बोली — "जी हॉ सर। बस कुछ ही मिनट में भुना हुआ तीतर और उबली हुई वील मछली तैयार हुई जाती है। और मसालों की चटनी और टार्ट भी तैयार हैं यही मुझसे उस बकरे ने पकाने के लिये कहा था।"

जब चोरों ने भुना हुआ तीतर उबली हुई वील मछली मसालों वाली चटनी और टार्ट मेज पर लगे देखे तो उनके दिमाग में आया

कि यह बकरा तो बहुत अच्छा है जो अपने मालिक के कहे पर काम करता है। वे उस बकरे को चोरी कर लें।

पर बाद में जब उनका खाना खत्म हो गया तो उनका दिमाग बदल गया और उन्होंने प्री स्कारपाफ़ीको से कहा — "सर क्या आप हमको अपना बकरा बेचने की मेहरबानी करेंगे?"

पर प्री स्कारपाफ़ीको ने कहा कि वह अपने बकरे को अपने से अलग नहीं करना चाहता क्योंकि उसका वह बकरा तो संसार भर की दौलत से भी ज़्यादा कीमती है। वह उसकी कितनी सहायता करता है। पर कुछ देर पीछे पड़ने के बाद वह उसको बेचने के लिये तैयार हो गये। उन्होंने उसने उसके सोने के **50** फ्लोरिन दाम माँगे।

उन्होंने बाद में कहा — "अगर यह बकरा तुम्हारा कहना न माने जैसा कि यह मेरा मानता है तो मैं तुम्हें यह बात पहले ही बता दूँ कि यह बकरा न तो तुम्हें जानता है और न तुम्हारे तरीकों को जानता है।"

पर उन तीनों चोरों ने उनकी यह बात सुनी ही नहीं। वे तो इस खुशी में कि कम से कम प्री स्कारपाफ़ीको अपना बकरा उनको बेचने के लिये तैयार हो गये है बिना किसी हील हुज्जत के बकरे को ले कर खुशी खुशी चले गये। वे खुश थे कि उनका यह सौदा तो बहुत अच्छा पट गया था।

अब जब वे घर आये तो उन्होंने अपनी अपनी पत्नियों से कहा — "देखो कल तुम लोग कोई खाना नहीं पकाना सिवाय उस खाने के जो कल हम तुम्हें इस बकरे के ऊपर लाद कर भेजेंगे।"

अगले दिन वे बाजार गये और काफी सारा खाने का सामान खरीद कर बकरे पर लाद कर घर भेज दिया। उन्होंने बकरे को यह भी बता दिया कि उसको उनकी पत्नियों से क्या क्या कहना है।

जैसे ही सामान लादने के बाद उन्होंने बकरे से घर जाने के लिये कहा तो वह तो वहॉ से तुरन्त ही भाग गया और फिर कभी दिखायी नहीं दिया।

जब शाम के खाने का समय हुआ तो वे तीनों अपने अपने घर गये और अनी अपनी पत्नियों से पूछा कि क्या बकरा उनका सामान ले कर घर आ गया था। और फिर क्या उन्होंने जैसा कि हमने उससे तुमसे कहने के लिये कहा था तुम लोगों ने क्या वैसा ही शाम का खाना बनाया?

वे सभी स्त्रियॉ तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयीं और बोलीं — "तुम लोग भी क्या बेवकूफ किस्म के और बन्द खोपड़ी के लोग हो। क्या तुम लोगों ने कभी किसी बकरे को ऐसा काम करते देखा है? तुमको जरूर ही किसी ने धोखा दिया है।

जैसे तुम लोग दूसरे लोगों को धोखा देते हो यह तो पक्का सा ही था कि कोई न कोई एक दिन तुम लोगों को भी धोखा देगा।"

अब उन तीनों को यह समझ में आ गया कि प्री स्कारपाफ़ीको ने उन्हें अच्छा बेवकूफ बनाया है साथ में उनके सोने के **50** फ्लोरिन भी उनसे ले लिये हैं तो वे तो भड़क उठे। उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ा और उसे ढूँढने निकल पड़े।

चालाक पादरी ने इस बात के बारे में पहले ही सोच रखा था कि जैसे ही चोरों को उसकी धोखाधड़ी का पता चलेगा वे जरूर ही उससे बदला लेने के लिये उसके घर आयेंगे सो इस बारे में उसने नीना से पहले ही सलाह ले ली थी।

उन्होंने नीना से कहा — "लो यह ब्लैडर[59] लो जिसको कि तुम देख रही हो कि यह पूरा भरा हुआ है। इसको तुम अपनी पोशाक के नीचे पहन लो।

गुस्से में आ कर मैं उनको यह विश्वास दिलाऊँगा कि मैंने चाकू तुम्हें मारा है जबकि मैं अपना चाकू इस ब्लैडर में मारूँगा। उस समय तुम ऐसे गिर जाना जैसे तुम मर गयी हो। उसके बाद मैं देख लॅगा।"

जैसे ही प्री स्कारपाफ़ीको ने नीना को यह समझाया वे तीनों चोर वहाँ पहुँच गये और प्री स्कारपाफ़ीको की तरफ ऐसे आगे बढ़े जैसे वे उसे मारना चाहते हैं।

प्री स्कारपाफ़ीको चिल्लाया — "रुक जाओ रुक जाओ। तुम जो मेरे खिलाफ बात ले कर आये हो उसके लिये मैं जिम्मेदार नहीं

[59] Bladder is a part of body in which urine is collected to be disposed of later.

हूँ। उसकी जिम्मेदार तो मेरी नौकर है। मुझे तो यह भी नहीं पता कि उसने ऐसा किसलिये किया।"

कह कर नीना की तरफ घूम कर उसने नीना ने जो ब्लैडर पहना हुआ था उसमें अपने हाथ में लिया हुआ चाकू मार दिया जिसको उसने पहले ही खून से भर रखा था। चाकू के लगते ही ब्लैडर से बहुत सारा खून निकल पड़ा और वह बहाना बना कर मरे जैसी नीचे गिर पड़ी।

पादरी ने यह देख कर पछतावा दिखाया और ज़ोर से बोला — "ओह मैं भी कितना नीच आदमी हूँ कि अपनी बेवकूफी में आ कर मैंने उसको मार डाला जो मेरे बुढ़ापे का सहारा थी। अब मैं उसके बिना कैसे रहूँगा।"

कुछ देर तक रोने के बाद वह उठा और अन्दर से एक बैगपाइप[60] ले कर आया और उस पर कोई धुन बजाने लगा। जैसे ही उसकी धुन खत्म हुई तो लो नीना तो उठ कर बिल्कुल ठीक खड़ी हो गयी।

जब चोरों ने यह देखा तो वे तो यह देख कर दंग रह गये। अब वे जिस गुस्से को ले कर वहाँ आये थे वह तो भूल गये और इस बैगपाइप के खरीदने की बात करने लगे।

[60] A wind musical instrument. See its picture above.

कुछ ही देर में बात पक्की हो गयी और सोने के **200** फ्लोरिन दे कर उन्होंने उसे खरीद लिया और खुशी खुशी घर वापस चले गये।

अब एक दो दिन के बाद क्या हुआ कि उन तीनों चोरों में से एक चोर का अपनी पत्नी से झगड़ा हो गया। गुस्से में आ कर उसने उसके सीने में अपना चाकू घोंप दिया और मार दिया।

यह सोच कर कि उसने क्या कर दिया वह अन्दर गया और प्री स्कारपाफ़ीको से खरीदा हुआ बैगपाइप निकाल लाया और उसे बजाने लगा ताकि वह ज़िन्दा हो जाये। पर उसकी हवा तो बेकार ही गयी क्योंकि वह बेचारी तो इस दुनियॉ से दूसरी दुनियॉ में चली गयी थी।

जब दूसरे चोर ने देखा कि उसके साथी ने क्या किया तो वह चिल्लाया — "तुम कितने बेवकूफ हो। तुमने तो सारा मामला ही गड़बड़ा दिया। लाओ मुझे दो यह बैगपाइप और फिर देखो कि मैं इसे कैसे ज़िन्दा करता हूँ।"

सो उसने अपनी पत्नी को उसके बालों से पकड़ा और उसके गले पर रेज़र चला दिया। वह तुरन्त ही मर गयी। फिर उसने भी बैगपाइप लिया और उसे बजाना शुरू कर दिया पर इसका भी पहले से कोई ज़्यादा अच्छा नतीजा नहीं निकला। उसकी पत्नी भी मर चुकी थी।

तीसरा चोर जो पास ही में खड़ा था इन दोनों घटनाओं से बिल्कुल भी नहीं डरा। उसने भी अपनी पत्नी को मार डाला। इसका भी वही नतीजा निकला। वह भी अपनी पत्नी को ज़िन्दा नहीं कर सका।

अब सबकी पत्नियॉ वहॉ मरी पड़ी थीं और वह बाजा उनमें से किसी को भी ज़िन्दा नहीं कर पा रहा था। यह देख कर तीनों चोरों को और बहुत गुस्सा आया और वे तीनों सीधे प्री स्कारपाफ़ीको के घर चल दिये।

इस बार वे यह सोच कर जा रहे थे कि इस बार वे उसकी कोई कहानी नहीं सुनेंगे। वे उसको पकड़ कर एक थैले में बन्द कर देंगे और फिर उस थैले को पास की एक नदी में डूबने के लिये छोड़ देंगे।

उन्होंने ऐसा ही किया पर जब वह उस थैले को डुबोने के लिये ले जा रहे थे कि तभी किसी ने उनका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया और वे प्री स्कारपाफ़ीको का थैला वहीं सड़क पर पड़ा छोड़ कर छिपने के लिये कहीं पास की जगह में ही भाग गये।

उनको वहॉ से भागे हुए अभी कुछ ही मिनट हुए थे कि उनको एक चरवाहा अपने जानवरों को चराने के लिये ले जाता हुआ दिखायी दिया।

जब वह पादरी वाले थैले के पास से गुजरा तो उसने धीमी सी एक आवाज सुनी "वे चाहते हैं कि मैं उससे शादी कर लूँ पर मैं तो एक पादरी हूँ मेरा स्त्रियों से कोई लेना देना नहीं है।

चरवाहे ने यह सुना तो पहले तो वह डर गया क्योंकि उसे पता ही नहीं चला कि वह आवाज कहाँ से आ रही है पर जब उसने बार बार ये शब्द सुने तो उसे पता चल गया कि यह आवाज तो सड़क के किनारे पड़े थैले में से आ रही थी जिसमें प्री स्कारपाफ़ीको बँधा पड़ा था।

उसने थैला खोला और पादरी को बाहर निकाला। उसने उससे पूछा कि उसको थैले में बन्द क्यों किया गया था।

इस पर प्री स्कार्पाफ़ीको ने उसे बताया कि उस शहर का एक अमीर आदमी अपनी बेटी की शादी उससे करना चाहता था पर उसका उससे कोई मुकाबला ही नहीं था क्योंकि एक तो वह शादी के लिये अब काफी बड़ा हो गया था दूसरे वह पादरी था।

चरवाहा बहुत सीधा था सो उसने चालाक पादरी की बात शब्द ब शब्द सही समझ ली। यह सुन कर वह तुरन्त ही बोला — "फादर क्या आप समझते हैं कि वह अमीर आदमी अपनी बेटी की शादी मुझसे कर देगा।"

प्री स्कार्पाफ़ीको बोले — "मुझे लगता है कि वह जरूर ऐसा कर देगा। मैं तुमको इस थैले में बन्द कर देता हूँ।"

बेवकूफ चरवाहा तुरन्त ही उस थैले में बैठ गया पादरी ने उस थैले का मुँह बन्द कर दिया और चरवाहे के जानवर ले कर तुरन्त ही वहाँ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग गया।

एकाध घंटे में वे तीनों चोर वापस लौटे और उस थैले को बिना जाँचे कि उसमें क्या था ले कर नदी की तरफ चल दिये और उसे पानी में डुबो दिया।

जब वे घर वापस ले कर चल दिये तो उन्होंने रास्ते में भेड़ों का एक झुंड चरता देखा तो उन्होंने एक प्लान बनाया कि वे उनमें से उस झुंड में से कुछ जानवरों को कैसे चुरा सकते थे पर जब वे उस झुंड के पास पहुँचे तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस झुंड को तो प्री स्कार्पाफ़ीको चरा रहे थे।

तो वे अभी अभी किसको नदी में डुबो कर आये थे। कुछ देर में जब वे होश में आये तो उन्होंने उनसे पूछा कि वह थैले में बाहर कैसे निकले।

तो प्री स्कार्पाफ़ीको तुरन्त ही बोले — "दूर हो जाओ मेरे सामने से। तुम लोगों में तो गधों जितनी अक्ल नहीं है। अगर तुम लोगों ने मुझे नदी में थोड़ी दूर और आगे जा कर फेंका होता तो मैं जितनी भी भेड़ें तुम अब मेरे पास देख रहे हो मैं उनसे दस गुनी भेड़ें ले कर आता।"

यह सुन कर तीनों चोर चिल्लाये — "ओह प्री स्कार्पाफ़ीको। क्या आप हमारे ऊपर एक आखिरी मेहरबानी करेंगे? क्या आप

हमको थैलों में बन्द कर के नदी में उस जगह फेंक आयेंगे तब हमको इस तरह सड़क पर पैदल चलने की परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी और हम घर में बैठ कर ईमानदारी से भेड़ें चरायेंगे।"

प्री स्कार्पाफ़ीको बोले — "मुझसे जितना हो सकेगा मैं तुम लोगों के लिये करूँगा। दुनियॉ में कोई ऐसा काम नहीं है जो मैं तुम्हारे लिये न कर सकूँ क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।"

कह कर प्री स्कार्पाफ़ीको ने तीन बड़े मजबूत कैनवास के थैले लिये, उनमें तीनों में एक एक चोर को भर कर उनका मुँह इतनी कस कर बन्द किया कि वे किसी तरह भी उनमें से बाहर निकल सकते थे और ले जा कर नदी में फेंक दिया।

इस तरह जहॉ उनको रहना चाहिये था वे वहॉ चले गये।

प्री स्कार्पाफ़ीको वापस नीना के पास चले गये। अब उनके पास बहुत सारा सोना था बहुत सारे जानवर थे सो वह बहुत दिनों तक खुशी खुशी आराम से रहे।"

कैटेरूज़ा की यह कहानी वहॉ बैठे लोगों को बहुत पसन्द आयी और सबने उसकी बहुत तारीफ की। खास कर के कहानी के उस हिस्से की जिसमें प्री स्कार्पाफ़ीको उन चोरों से बदला लेने की स्कीम बनाता है। एक खच्चर देने के बदले में काफी सारा पैसा और बहुत सारे जानवर ले लेता है।

कैटेरूज़ा ने अब अपनी पहेली बूझी —

एक ताकतवर लोहार और उसकी पत्नी सादी ज़िन्दगी गुजारते थे
वे खाना खाने बैठे तो एक डबल रोटी और आधी रोटी उनके सामने थी
पर जैसे ही उन्होंने अपना खाना खत्म किया
कि एक पादरी अपनी बहिन के साथ खाने के लिये आया
लोहार ने एक डबल रोटी को दो में बॉटा
सो अब तीन आधी डबल रोटियॉ थीं और चार आदमी थे
हर एक ने आधी आधी डबल रोटी खायी और उनका पेट भर गया
बताओ इस पहेली का क्या मतलब है

कैटेरूज़ा की पहेली का जवाब यह है कि लोहार की पत्नी पादरी की बहिन थी। इस तरह से वहॉ तीन ही आदमी थे चार नहीं। जब पति पत्नी खाना खाने बैठे तो पादरी वहॉ अपनी बहिन के साथ खाना खाने के लिये आया। वह अकेला आया था क्योंकि उसकी बहिन तो वहीं थी। इसलिये केवल तीन आदमी ही थे।

तीनों ने आधी आधी डबल रोटी खायी और उन सबका पेट भर गया।

जब कैटेरूज़ा ने अपनी पहेली समझा दी तो मैम ने ऐरिट्रीया को इशारा किया और उसने अपनी कहानी शुरू की।

पहली रात की तीसरी कहानी समाप्त

1–4 सालैरनो का राजकुमार टैबाल्डो[61]

सालैरनो का राजकुमार टैबाल्डो अपनी अकेली बेटी डोरालिस[62] से शादी करना चाहता है पर वह अपने पिता के बुरे व्यवहार की वजह से इंगलैंड भाग जाती है जहॉ पहुॅच कर वह राजा जिनीज़[63] से शादी कर लेती है। वहॉ उसके दो बच्चे होते हैं। टैबाल्डो उनको मार देता है तो राजा जिनीज़ राजकुमार टैबाल्डो से इसका बदला लेता है।

ऐरिट्रीया बोली — "मुझे नहीं मालूम कि हमारे बीच किसी आदमी ने कभी यह अनुभव किया हो कि प्यार में कितनी ताकत होती है। और उसके तीर कितने तीखे होते हैं।

वह एक ताकतवर राजा की तरह बिना किसी तलवार के केवल अपनी अक्ल से अपना राज्य देखता भालता है जैसा कि अब आप इस कहानी को सुन कर समझ पायेंगे जो मैं आप सबको अब सुनाने जा रही हूॅ।

प्यारी बहिनों। इस कहानी के अनुसार जिसे मैंने अपने बड़ों से कई बार सुना है सालेरनो के राजकुमार टैबाल्डो की एक अच्छी और सादी सी पत्नी थी जिससे उसके एक बहुत अच्छी बेटी थी जो सालेरनो की सारी स्त्रियों में सबसे सुन्दर और अक्लमन्द थी।

---

[61] Tebaldo the Prince of Salerno – First Night : Fourth Fable. Told by Eritrea

[62] Doralice – the daughter of the Prince of Salerno Tebaldo

[63] King Genese – name of the King whom Doralice married

पर टैबाल्डो के लिये तो यही अच्छा था कि वह कभी सूरज की रोशनी भी देखे क्योंकि अगर ऐसा होता तो उसके साथ वैसा न होता जैसा आज हुआ है।

टैबाल्डो की अपनी पत्नी अभी उम्र में छोटी थी पर अक्लमन्द थी। वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी। जब वह मरने वाली थी तो उसने अपने पति को बुलाया और उसको अपनी अँगूठी दे कर उससे कहा कि वह उसके मरने के बाद वह केवल किसी ऐसी लड़की से शादी करे जिसकी उँगली में वह बिल्कुल फ़िट आ जाये – न कसी न ढीली।

राजकुमार ने भी उससे उसके सिर की कसम खा कर उससे यह वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा जैसा कि उसने कहा है। उसके बाद उसकी पत्नी मर गयी और दफ़ना दी गयी।

पत्नी की मौत के कुछ दिन बाद ही टैबाल्डो फिर से शादी करने की सोचने लगा पर वह अपनी पत्नी से किया हुआ वायदा नहीं भूला था कि वह उसी लड़की से शादी करेगा जिसकी उँगली में उसकी दी हुई अँगूठी फिट आ जायेगी – न कसी न ढीली। और यही बात वह कहता भी रहा।

खैर यह खबर कि राजकुमार टैबाल्डो फिर से शादी कर रहा है बहुत जल्दी ही पास और दूर सब जगह फैल गयी। बहुत सारी लड़कियों ने इसे सुना। वे लड़कियाँ टैबाल्डो से सम्पत्ति और वैभव से किसी तरह भी कम नहीं थीं।

पर समस्या थी तो केवल अँगूठी के फ़िट आने की। इसलिये वह सबसे पहले उस अँगूठी को उस लड़की की उँगली में पहना कर देखता कि वह उसके फ़िट आती या नहीं। और जब वह अँगूठी किसी के फ़िट नहीं आती यानी किसी के बड़ी होती या किसी के छोटी तो उसको उसे तुरन्त ही मना करना पड़ता।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि टैबाल्डो की बेटी जिसका नाम डोरालिस था अपने पिता के साथ खाने की मेज पर बैठी हुई थी। उस मेज पर उसकी माँ की अँगूठी पड़ी हुई थी। उसने उसे उठाया और उसे अपनी उँगली में पहन लिया।

पहनते ही वह बोली — "देखिये पिता जी। माँ की यह अँगूठी मेरी उँगली कितनी फ़िट बैठती है।"

यह देखते ही कि उसकी बेटी ने क्या कर दिया राजकुमार तो सोचता ही रह गया।

कुछ समय बाद उसके दिमाग में कैसा अजीब सा शैतानी विचार आया कि जब यह अँगूठी किसी भी लड़की के हाथ में नहीं आ रही है तो क्यों न मैं अपनी बेटी से ही शादी कर लूँ। काफी दिनों तक वह यह सोच सोच कर परेशान रहा कि वह क्या करे क्या न करे – हाँ या ना।

आखिर उसके शैतानी विचार और उसकी बेटी की सुन्दरता जीत गयी और फिर एक दिन उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "डोरालिस। मेरी बेटी। जब तक तुम्हारी माँ ज़िन्दा

थी सब कुछ ठीक चल रहा था पर अपनी मौत का दिन करीब आता देख कर वह एक दिन मुझसे बोली कि मैं उसकी मौत के बाद किसी ऐसी लड़की से शादी न करूँ जिसकी उँगली में यह अँगूठी न आये जो वह सारी ज़िन्दगी पहने रही। मैंने अपने सिर की कसम खा कर उससे कहा कि "मैं तुम्हारी आखिरी इच्छा जरूर पूरी करूँगा।"

कुछ समय बाद में मुझे लगा कि मुझे अब दूसरी शादी कर लेनी चाहिये सो मैंने बहुत सारी लड़कियों को यह अँगूठी पहना कर देखी पर मुझे कोई ऐसी लड़की नहीं मिली जो तुम्हारी माँ की अँगूठी पहन सकती।

तुमने वह अँगूठी पहन कर देखी और वह तुम्हारे ठीक आ गयी तो मैंने यह निश्चय किया है कि मैं तुमसे ही शादी कर लूँ। इस तरह से मैं अपनी इच्छा भी पूरी कर सकूँगा और तुम्हारी माँ के साथ किया गया वायदा भी निभा सकूँगा।"

डोरालिस जितनी सुन्दर थी उतनी ही वह साफ भी थी। जब उसने अपने नीच पिता की यह नीच बात सुनी तो वह बहुत परेशान हो गया। पर उसकी इस नीच इच्छा को ध्यान से सुनते हुए और उसके गुस्से को ध्यान में रखते हुए उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया। वह अपनी परेशानी छिपाते हुए वहाँ से चली गयी।

उसका वहाँ ऐसा कोई नहीं था जिसके ऊपर वह इतना भरोसा कर सकती जितना वह अपनी आया पर करती थी। सो वह तुरन्त

ही अपनी आया के पास सलाह करने गयी कि ऐसी हालत में उसे क्या करना चाहिये।

उसकी आया ने जब उससे राजा की इस नीच इच्छा की कहानी सुनी तो उसने डोरालिस को तसल्ली दी। वह डोरालिस को वह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि वह किस तरह की लड़की थी। वह अपने पिता की इच्छा पूरी करने की बजाय कोई भी परेशानी सहन करने को तैयार थी। ऐसी थी वह।

सो उसकी आया न उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको उसके पिता की इस नीच इच्छा से जरूर बचायेगी।

उसके बाद आया बस केवल इन्हीं तरकीबों पर विचार करती रही कि कैसे उस बच्ची को इस गड्ढे में से बाहर निकाले। उसको बचाने के लिये कभी वह यह सोचती कभी वह सोचती पर कोई तरीका उसको ठीक नहीं लग रहा था।

वह बहुत खुश होती अगर वह डोरालिस को ले कर उड़ जाती और उसके पिता से उसे बहुत दूर ले जाती। पर वह टैबाल्डो की चालाकियों को भी जानती थी। अगर लड़की वहॉ से भाग जाने के बाद अपने पिता के हाथ में पड़ जाती तो वह जरूर ही उसको मारने का हुक्म सुना देता।

सो जब वह वफादार आया यह सब सोच सोच कर परेशान हो रही थी कि वह क्या करे कि उसके दिमाग में एक नया विचार आया। वह विचार क्या था यह मैं आपको अभी बताऊॅगी।

डोरालिस की मरी हुई मॉ के कमरे में एक बहुत सुन्दर कपड़ों की आलमारी रखी हुई थी। उस आलमारी पर बहुत सुन्दर खुदायी का काम हो रखा था। डोरालिस अपने सबसे अच्छे और कीमती कपड़े और अपने जवाहरात आदि कीमती सामान इसी आलमारी में रखा करती थी। उस आलमारी को केवल वही खोल सकती थी।

उसमें उसकी मॅहगी और मुश्किल से मिलने वाली शराब भी रखी रहती थी जिसका अगर एक घूॅट भी कोई पी ले तो वह कुछ दिनों तक बिना कुछ खाये गुजार सकता था।

उसने तुरन्त ही डोरालिस को बुलाया और उसको उस आलमारी में बन्द कर दिया और उससे कहा कि वह ठीक समय का इन्तजार करे। या तो जब तक जब तक कि उसके पिता के सिर से यह भूत उतर जाये या फिर तब तक जब तक भगवान ही उसको कोई अच्छा मौका न दे दे।

डोरालिस उसका कहना मान कर उसमें चली गयी और जो कुछ और भी वह उससे कहती रही वह मानती रही। उसका पिता अभी भी अपनी नीच इच्छा पर कायम था। वह रोज पूछता कि उसकी बेटी कहॉ है।

इस बात पर कि उसको न तो वह दिखायी देती है और न वह यह सोच पाया कि वह कहॉ हो सकती है उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था कि उसने अब यह कहना शुरू कर दिया था कि जैसे ही वह उसको दिखायी देगी वह उसे मार देगा।

एक दिन सुबह सुबह कुछ ऐसा हुआ कि टैबाल्डो उस कमरे में गया जहॉ यह आलमारी रखी हुई थी। वहॉ पहुॅच कर उसकी नजरें उस आलमारी पर पड़ीं तो उसके साथ जुड़ी हुई उसकी पुरानी यादें जाग गयीं। वह उसको वहॉ रखा न देख सका।

उसने तुरन्त ही यह हुकुम दिया कि उस आलमारी को तुरन्त ही वहॉ से हटा कर किसी और जगह रख दिया जाये और फिर उसे बेच दिया जाये ताकि वह उसको देख कर परेशान न हो।

नौकर लोग मालिक का हुकुम तुरन्त ही बजा लाये। उन्होंने उसको अपने कन्धे पर रखा और सीधे उसे बाजार ले गये।

अब कुछ ऐसा इत्तफाक था कि उस दिन बाजार में एक अमीर सौदागर आया हुआ था। जैसे ही उसकी नजर इस सुन्दर काम की गयी आलमारी पर पड़ी तो वह उसको बहुत अच्छी लगी।

वह उसको इतनी अच्छी लगी कि उसने अपना मन बना लिया कि वह उसको अपने हाथ से किसी हालत में भी जाने नहीं देगा। चाहे उसके लिये उसको कितना भी पैसा क्यों न देना पड़े।

सो वह उस आदमी के पास पहुॅचा जो उसको बेचने को लिये वहॉ खड़ा हुआ था। उसने उससे उस आलमारी की कीमत पूछी और उसे खरीद लिया। फिर कुछ मजदूरों को बुला कर उसने उसको वहॉ से उसे अपने जहाज़ पर ले जाने के लिये कहा।

आया जो यह सब दूर से देख रही थी यह देख कर बहुत खुश हुई कि राजकुमारी सही हाथों में पहुॅच गयी थी पर उसको उससे

बिछड़ने का भी कम दुख नहीं था। फिर वह यह सोच कर शान्त हो गयी कि अगर किसी को दो बुराइयों में से एक को चुनना हो तो अच्छा है कि कम दुख देने वाली बुराई को चुना जाये।

वह सौदागर अपने साथ अपनी खरीदी हुई आलमारी और दूसरी कीमती चीज़ें ले कर जहाज़ पर चढ़ कर सालेरनो से ब्रिटेन के टापू की तरफ चल दिया जिसे आज हम इंगलैंड के नाम से जानते है।

वहॉ जा कर वह एक ऐसे बन्दरगाह पर रुक गया जहॉ बहुत बड़ा मैदान फैला पड़ा था। वहॉ पहुॅचे अभी उसे कुछ ही देर हुई थी कि वहॉ उस देश का नया राजा जिनीज़[64] अपने घोड़े पर सवार हो कर घूमने के लिये आ गया।

वह असल में एक बहुत सुन्दर बारहसिंगे का पीछा करता हुआ भागा चला आ रहा था। वह बारहसिंगा इधर समुद्र के किनारे की तरफ भाग आया था और फिर पानी में घुस गया था। राजा इसका पीछा करते करते बहुत थक गया था सो उसको कुछ आराम चाहिये था।

जब वह यहॉ तक आया तो किनारे पर जहाज़ आया देख कर उससे पानी मॉगा। जहाज़ के मालिक ने उसको न पहचानने का बहाना करते हुए कि वह किससे बात कर रहा था उसका स्वागत किया और आखीर में उसको अपने जहाज़ पर ले गया।

[64] Genese – name of the would be King

राजा ने उसके जहाज़ में जब वह सुन्दर नक्काशी वाली आलमारी देखी तो उसका उसको लेने की इच्छा हो आयी।

वह उसको खरीदने के लिये इतना उतावला हो गया कि उसने जब तक उसको उसी समय यह नहीं कह दिया कि वह आलमारी उसकी है उसको लगा कि उसको हजारों घंटे का इन्तजार करना पड़ रहा है।

सौदागर ने कहा कि उसकी कीमत काफी है। यह सुन कर तो राजा के मन में उसको खरीदने की इच्छा और भी बढ़ गयी। उसने सोच लिया कि जब तक वह उस आलमारी की कीमत तय नहीं कर लेगा वह जहाज़ से जायेगा नहीं।

उसने उसकी कीमत पूछ कर उसके पैसे घर से मॅगवा कर उसको देने के बाद सौदागर से इजाज़त ली। वह उस आलमारी को सीधा अपने महल ले गया और उसको अपने कमरे में रखवा दी।

जिनीज़ शादी करने के लिये अभी छोटा था सो वह अपना मन बहलाने के लिये रोज शिकार के लिये जाया करता था। अब जबसे वह आलमारी उसके कमरे में रखी गयी थी जिसमें डोरालिस छिपी हुई थी तो वहॉ वह सब सुनती रहती थी जो कुछ उसके कमरे में होता रहता था।

वह अपनी पुरानी घटनाओं के बारे में सोचती रहती और आशा करती रहती कि शायद भगवान ने उसकी किस्मत में कुछ सुख के दिन लिखे होंगे।

अगले दिन सुबह सुबह जब राजा शिकार के लिये चला गया और उसका कमरा खाली रह गया तो डोरालिस अपनी कपड़ों की आलमारी से बाहर निकली और राजा का कमरा ठीक करने लगी।

उसने उसको झाड़ा बुहारा और उसका पलंग ठीक किया। कमरे के परदे ठीक किये। फिर उसने बिस्तर पर मोतियों से कढ़ी हुई बढ़िया चादर बिछायी और उस पर दो बढ़िया तकिये सजाये।

फिर उसने गुलाब वौयलैट और दूसरे खुशबूदार फूल जिनमें साइप्रियन मसालों की भी खुशबू मिली हुई थी ला कर उनसे उस बिस्तर को सजाया। इस सबसे उसमें से इतनी महक उड़ रही थी जिसे सूँघ कर कोई भी आदमी बेहोश हो जाता।

इस तरह से डोरालिस अब छिप कर रोज राजा का कमरा सजाने लगी। इससे जिनीज़ को बहुत आराम मिलता। जब भी वह शिकार से लौटता तो उसे लगता कि पूर्व की खुशबुओं ने उसका स्वागत किया हो।

एक दिन उसने रानी माँ और दूसरी स्त्रियाँ जो उसके आसपास थीं उनसे पूछा कि उसका कमरा किसने सजाया। किसने उसके बिस्तर को गुलाब और वौयलेट के खुशबूदार फूलों से सजाया।

उन सबने एक ही जवाब दिया कि यह काम उन्होंने नहीं किया। वे तो जब भी सुबह को उसका कमरा ठीक करने जाती थीं तो उसको पहले से ही सजा हुआ पाती थीं। इसलिये उनको यह भी नहीं पता कि यह कौन करता था।

जिनीज़ ने जब यह सुना तो उसने इस राज़ को जानने का इरादा किया। अगली सुबह उसने कहा कि वह शिकार करने के लिये 10 लीग दूर एक गॉव की तरफ जा रहा है पर वह गया नहीं बल्कि वह कमरे में छिप कर और दरवाजे पर अपनी ऑख जमा कर बैठ गया। वह यह देखने लगा कि अब क्या होता है।

उसे इन्तजार करते बहुत देर नहीं हुई थी कि सूरज जैसी सुन्दर डोरालिस उस कपड़ों की आलमारी में से निकली और कमरे को झाड़ना बुहारना शुरू कर दिया। कालीनों को सीधा किया। पलंग को सजाया। बड़ी मेहनत से उसने उस कमरे में रखी हर चीज़ ठीक की जैसी कि उसको करनी चाहिये थी।

अपना काम खत्म कर के वह अपने छिपने की जगह चली पर राजा ने जो हर चीज़ बड़े ध्यान से देख रहा था अचानक ही उसका हाथ पकड़ लिया। यह देख कर कि वह सुन्दर थी और लिली की तरह ताजा खिली हुई थी उसने उससे पूछा कि वह कौन थी।

लड़की यह सुन कर कॉप गयी। कॉपते हुए वह बोली कि वह एक राजकुमार की बेटी थी और अब उसको उनका नाम भी याद नहीं है क्योंकि वह काफी समय से इस आलमारी में बन्द है। उसने उसे यह भी नहीं बताया कि उसको इस आलमारी में बन्द क्यों किया गया था।

राजा ने जब उसकी कहानी सुनी तो वह तो उसे प्यार की हद तक प्यार करने लगा। अपनी माँ की मर्जी से उसने उसे अपनी रानी बना लिया। उन दोनों के फिर दो बच्चे हुए।

इस बीच अपनी नीच भावनाओं से घिरा हुआ और डोरालिस को कहीं न पाने की वजह से परेशान टैबाल्डो उसको हर जगह ढूँढता रहा। बाद में उसने अन्दाजा लगाया कि शायद वह उस आलमारी में बन्द होगी जिसे उसने बिकवा दिया था और अब उसकी ताकत से बच कर वह जगह जगह मारी मारी फिर रही होगी।

इस गुस्से के मारे जो अभी तक उसके खिलाफ उसके दिल में धधक रहा था वह खुद उसको ढूँढने की सोचने लगा कि शायद वह उसे मिल जाये।

उसने एक सौदागर का रूप रखा बहुत सारे कीमती जवाहरात लिये बहुत सारे सोने के बढ़िया गहने लिये और बिना किसी को बताये सालेरनो छोड़ दिया। वह आसपास के कई देशों में गया।

अचानक उसको वह सौदागर मिल गया जिसने सबसे पहले वह आलमारी खरीदी थी। उसने उसे पूछा कि क्या वह अपने सौदे से सन्तुष्ट था और फिर उसने वह आलमारी किसको बेची। सौदागर ने बताया कि वह आलमारी उसने जितने में उसने खरीदी थी उसके दोगुने दामों में इंगलैंड के राजा को बेच दी थी।

टैबाल्डो तो यह खबर सुन कर बहुत खुश हो गया और सीधा इंगलैंड चल पड़ा।

वहाँ पहुँच कर वह राजा की राजधानी पहुँचा और वहाँ जा कर उसने अपने जवाहरात और गहने जो वह ले कर आया था उन्हें उनके दिखाया। उनमें कुछ तकली और अटेरन भी थे जो बहुत ही चतुर हाथों से बनाये गये थे।

वह चिल्ला चिल्ला कर आवाज लगा रहा था "तकली और अटेरन ले लो। तकली और अटेरन ले लो।"

अब ऐसा हुआ कि दरबार की एक लड़की अपनी खिड़की से बाहर देख रही थी। जब उसने यह देखा और सौदागर को सुना तो देखा कि उसके पास तो सोने की कितनी सुन्दर तकली और अटेरन थे। उसने इतने सुन्दर तकली और अटेरन पहले कभी नहीं देखे थे।

वह तुरन्त ही रानी जी के पास दौड़ी गयी और उससे बोली कि बाहर एक सौदागर आया है जिसके पास बेचने के लिये बहुत सुन्दर सोने की तकली और अटेरन हैं। रानी ने उससे कहा कि वह उस सौदागर को महल में ले कर आये।

दासी उसको रानी के पास महल में ले कर आयी पर वह अपने पिता को उस सौदागर के वेश में पहचान नहीं पायी। और इससे भी बड़ी बात यह भी थी कि वह उसको दोबारा देखने की उम्मीद भी

नहीं कर रही थी। पर टैबाल्डो ने अपनी बेटी को फौरन पहचान लिया।

रानी ने जब देखा कि तकली और अटेरन कितनी होशियारी से बनाये गये हैं तो वे उसको बहुत पसन्द आये और उसने सौदागर से उनके दाम पूछे।

सौदागर बोला — "इनके दाम तो बहुत हैं पर मैं तुम्हें इनमें से एक को बिना कुछ लिये ही दे दूँगा अगर तुम मुझे मेरी एक इच्छा पूरी करो। तुम मुझे एक रात उसी कमरे में सोने दो जिसमें तुम्हारे बच्चे सोते हैं।"

भली डोरालिस जो बहुत ही सादा और सीधी दिल की थी उस चालाक सौदागर की इस बुरी चाल को बिल्कुल ही नहीं समझ पायी। अपनी दासियों की जिद पर उसने सौदागर को इसकी इजाज़त दे दी।

पर इससे पहले कि सौदागर को सोने वाले कमरे में ले जाया जाता दरबार की कुछ स्त्रियों ने उसको सलाह दी कि उसको एक प्याला शराब पिला दी जाये जिसमें उसको बेहोश करने की दवा ठीक से मिली हो ताकि वह गहरी नींद सोता रहे।

जब रात हुई और सौदागर थका थका सा लगने लगा तो दरबार की स्त्रियों में से एक स्त्री उसको सोने वाले कमरे में ले कर गयी जहाँ उसके लिये एक बहुत ही आरामदेह पलंग लगाया गया था। वहाँ

उसको छोड़ने से पहले वह स्त्री उससे बोली — "ओ भले आदमी। क्या तुम्हें प्यास नहीं लगी?"

वह बोला — "हॉ लगी तो है।"

यह सुन कर उसने उसको दवा मिली हुई शराब का एक चॉदी का गिलास पकड़ा दिया। पर टैबाल्डो भी चालाक था उसने पीने का बहाना करते हुए वह शराब अपने कपड़ों पर गिरा ली और सो गया।

अब बच्चों के कमरे में एक तरफ को एक दरवाजा था जो रानी के कमरे में खुलता था। आधी रात को जब सब शान्त हो गया तो टैबाल्डो उठा और उस पलंग के पास गया जिस पर रानी के कपड़े पड़े हुए थे वहॉ से उसने एक छुरा उठाया जो रानी की कमर से लटका रहता था और जिस पर उसने पहले दिन ही एक निशान डाल दिया था।

फिर वह बच्चों के कमरे में वापस आया और उस छुरे से दोनों बच्चों को मार डाला और तुरन्त ही उसको ऐसे ही खून से सना हुआ उसकी म्यान में रख दिया। फिर खिड़की खोल कर एक रस्सी के सहारे नीचे उतर कर भाग गया।

जैसे ही शहर के दूकानदार उठे और अपने अपने काम पर लगे तो इस डर से कि कहीं उसे पहचान न लिया जाये वह एक नाई की दूकान पर गया और उसने वहॉ जा कर सबसे पहले अपनी लम्बी दाढ़ी कटवायी और कपड़े बदल कर बेहिचक घूमने लगा।

इधर महल में जैसे ही आयाओं की ऑख खुली तो वे बच्चों के कमरे में उनको दूध पिलाने के लिये गयीं तो उन्होंने देखा कि दोनों बच्चे तो अपने अपने पालनों में मरे पड़े हैं।

यह देख कर उन्होंने बहुत ज़ोर से चिल्लाना और रोना शुरू कर दिया। इस तरह वे अपने बाल नोचती हुई और कपड़े फाड़ती हुई जमीन पर लोट गयीं।

जल्दी ही इस भयानक घटना का पता राजा और रानी को लगा तो वे भी नंगे पॉव दौड़े आये और जब उन्होंने अपने बच्चों को मरा हुआ देखा तो वे तो बहुत ज़ोर से रो पड़े। बहुत जल्दी ही दोनों बच्चों के कत्ल की यह खबर सारे शहर में फैल गयी।

और करीब करीब उसी समय एक खबर यह भी फैली कि शहर में एक ज्योतिषी आया हुआ है जो सितारों के रास्ते देख कर पुरानी बातों को खोल कर बता सकता है।

जब यह खबर राजा के कानों में पड़ी तो उसने उसको अपने दरबार में बुलाया और जब वह वहॉ आ गया तो उससे पूछा कि क्या वह उसके बच्चों के कत्ल करने वाले का नाम बता सकता था।

ज्योतिषी ने कहा कि हॉ वह उसका नाम बता सकता था। फिर उसने राजा के कानों में फुसफुसा कर कहा — "सरकार आपके दरबार में जो कोई भी चाकू अपनी कमर से बॉधने के हकदार हों उन सबके चाकू देखें जायें। जिसके चाकू पर खून के धब्बे लगे हों आपके बच्चों का खून उसी ने किया है।"

राजा ने तुरन्त ही अपने सब दरबारियों को हुक्म दिया कि वे उसके सामने वहॉ आयें। जब वे सब वहॉ आ गये तो उसने हाथों से सबकी तलाशी ली कि किसके पास खून भरा चाकू है पर उसको किसी के पास ऐसा चाकू नहीं मिला।

तब उसने ज्योतिषी से फिर पूछा कि उसकी तलाशी तो बेकार गयी उसको तो कोई भी चाकू खून से सना नहीं मिला। केवल उसकी मॉ और उसकी पत्नी की तलाशी नहीं ली गयी थी। अब यह ज्योतिषी और कोई नहीं खुद टैबाल्डो था सो वह तो सब कुछ जानता था।

इस पर ज्योतिषी बोला — "जनाब। आप सबकी तलाशी लें। इज़्ज़त के ख्याल से किसी को न छोड़ें आपको खूनी मिल ही जायेगा।"

सो राजा ने पहले अपनी मॉ की तलाशी ली और फिर रानी की तलाशी ली। जब उसने डोरालिस की कमर से चाकू खोला और उसकी म्यान में से उसे निकाला तो उसने देखा कि वह तो खून से रंगा हुआ है।

ज्योतिषी का कहा सच साबित होने पर वह तुरन्त ही उससे बोला — "ओ नीच। जानवरों की तरह से व्यवहार करने वाली। अपने ही मॉस और खून की दुश्मन। अपने ही बच्चों को धोखा देने वाली। किस पागलपन में तूने अपने बच्चों के खून में अपने हाथ

रंगने का सोचा। मैं कसम खाता हूँ कि मैं तुझे वही सजा दूँगा जो ऐसे जुर्म के लिये तय की गयी है।"

पर क्योंकि राजा गुस्से में शायद बेहोश हो जाता सो उसने उसे तुरन्त ही अपनी ऑखों से दूर भेज दिया और उसको शर्मनाक मौत की सजा सुना दी। उसकी बदला लेने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि उसने उसे अपनी ऑखों के सामने से ही हटा दिया ताकि वह और ज़्यादा देर तक उसको देखने की तकलीफ न सह सके।

उसने हुक्म दिया कि उसको नंगा कर के उसकी ठोड़ी तक जमीन में दबा दिया जाये। इसके अलावा उसको अच्छी तरह से खिलाया पिलाया जाये ताकि वह ज़्यादा दिनों तक ज़िन्दा रह कर इस दर्द को सह सके। जब तक वह ज़िन्दा रहे उसके शरीर को कीड़े मकोड़े खा सकें।

रानी को तो पहले से ही अपनी बदकिस्मती की आदत थी और वह जानती थी कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं है वह बिल्कुल बेकुसूर है शान्ति और शान से इस सजा को स्वीकार किया।

टैबाल्डो को जब यह पता चला कि रानी को कुसूरवार ठहरा दिया गया है और उसको कितनी निर्दयता से मारने की सजा दी गयी है तो वह बहुत खुश हुआ। उसने राजा से तुरन्त ही विदा ली और अपने काम से सन्तुष्ट हो कर इंगलैंड छोड़ दिया और छिप कर सालेरनो वापस आ गया।

घर आ कर उसने आया को बुलाया और उसको सब हाल बताया कि वह क्या कर के आया था और डोरालिस को कैसे उसके पति ने इतनी निर्दय सजा सुना दी थी।

टैबाल्डो की बात सुन कर आया ने भी उसी की तरह अपनी खुशी जाहिर की जैसी राजा ने उसे दिखायी थी पर अपने दिल में वह बहुत दुखी थी। वह डोरालिस को बहुत प्यार करती थी।

अगले दिन उसने एक घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर इंगलैंड की तरफ चल दी। वह रात दिन चलती रही जब तक वह इंगलैंड नहीं आ गयी। वह तुरन्त ही राजा के महल पहुँची और राजा के सामने पहुँची।

राजा उस समय आम जनता के सामने अपने दरबार में बैठा हुआ था। वहाँ जा कर वह सीधे उसके पैरों में गिर गयी और राजा से एक ऐसे मामले पर उसकी फरियाद सुनने की इजाज़त माँगी जो उसके ताज की इज़्ज़त से सम्बन्धित था।

राजा ने उसकी प्रार्थना सुनी उसने उसे हाथ पकड़ कर उठाया और जब सारे लोग चले गये तब आया ने राजा से कहा — "सर। आपकी पत्नी डोरालिस मेरी बच्ची है। असल में मैंने उसे जन्म तो नहीं दिया है पर मैंने उसे अपना दूध पिलाया है। जिस काम की इस तरह की दर्दनाक लम्बी चलने वाली सजा उसको दी गयी है वह उसके लिये बिल्कुल निर्दोष है।

जब आप उसके बारे में सुन लेंगे और अपने बच्चों के असली नीच हत्यारे को पकड़ लेंगे तब आपको इस बात की वजह पता चलेगी जिसकी वजह से उसने इन बच्चों को मारा। तब आप उसके ऊपर दया दिखा कर उसे छोड़ देंगे।

और अगर आपको लगे कि मैं झूठ बोल रही हूँ तो आप वही सजा मुझे दे सकते हैं जो बेचारी डोरालिस अब सह रही है।"

उसके बाद आया ने राजा को शुरू से ले कर आखीर तक की कहानी सुना दी। जब राजा ने उसे सुना तो पहले तो उसे उस कहानी पर विश्वास ही नहीं हुआ। पर फिर जब उसे विश्वास हुआ तब उसने रानी को जो ज़िन्दा कम और मरी हुई ज़्यादा हो रही थी जमीन में से बाहर निकालने का हुक्म दिया।

तुरन्त ही रानी को जमीन में से बाहर निकाल लिया गया और डाक्टरों की देखभाल और ठीक खाने से उसको तन्दुरुस्त किया गया।

उसके बाद राजा जिनीज़ ने अपनी सारी सेना इकट्ठी कर के सालेरनो पर चढ़ाई कर दी। कुछ ही दिन में शहर को कब्जे में कर लिया गया और टैबाल्डो को उसके हाथ पॉव बॉध कर इंगलैंड ले आया गया। वहॉ जिनीज़ ने सारा सच जानने के लिये उसे एक जगह बिठा दिया जहॉ उसने अपना सारा अपराध स्वीकार किया।

अगले दिन उसको चार घोड़ों वाली एक गाड़ी में सारे शहर में घुमाया गया। फिर उसके शरीर को लाल गर्म सलाखों से गोदा

गया। उसकी लाश के टुकड़े टुकड़े कर के कुत्तों को डलवा दिये गये।

बस यही उस नीच टैबाल्डो का अन्त था। उसके बाद राजा जिनीज़ और रानी डोरालिस फिर बहुत सालों तक खुश खुश रहे। वे अपने बच्चों को ठीक से बड़ा कर के ही मरे।"

इस दर्द भरी कहानी को सुन कर सब सुनने वाले आश्चर्य में डूबे रहे। जब कहानी खत्म हो गयी तो ऐरिट्रीया ने मैम के कुछ कहने का इन्तजार नहीं किया और अपनी पहेली सबके सामने रखी —

मैं एक ऐसे दिल की बात बताती हूँ जो बहुत ही नीच है
जो बहुत ही बेदर्द है और बहुत ही चालाक है
कि वह अपनी मजबूर बच्चों के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करता है
जब वह उनको खुश देखता है तो अपनी निर्दय चोंच मार देता है
क्योंकि वह खुद भी पतला सा है और बुराइयों से भरा है
उसका खुश होना उनको भी पतला कर देगा
इस तरह से वे पतले होते जाते हैं और दर्द सहते जाते हैं
जब तक कि केवल उनकी हड्डियाँ ही बचतीं हैं

वहाँ बैठे हुए आदमियों और स्त्रियों ने इस पहेली के कई हल दिये। किसी ने कुछ अन्दाजा लगाया तो किसी ने कुछ। पर उनको यह विश्वास नहीं हो सका कि दुनियाँ में कोई जानवर ऐसा भी निर्दयी हो सकता है जो अपने बच्चों को इस तरह से रखे।

बाद में सुन्दर एरिट्रीया बोली — "अरे इसमें ऐसा क्या है जिस पर आप सबको इतना आश्चर्य हो रहा है। मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि कुछ माँ बाप ऐसे भी हैं जो अपने बच्चों को इतनी बुरी तरह से नफरत करते हैं जैसे काइट चिड़िया अपने बच्चों से करती है।

क्योंकि यह चिड़िया बहुत ही पतली सी और छोटी सी होती है जब यह अपने बच्चों को देखती है जो मोटे मोटे और सुन्दर होते हैं जैसे कि बहुत सारी चिड़ियों के बच्चे होते हैं तो यह उनके शरीर में अपनी चोंच मारती है। और जब तक मारती रहती है जब तक वे उसी की तरह से पतले दुबले नहीं हो जाते।"

ऐरिट्रीया के जवाब से वहाँ बैठे सब लोग सन्तुष्ट हो गये और उन सबने तालियाँ बजायीं। फिर ऐरिट्रीया ने मैम को उनके ओहदे के अनुसार नमस्ते की और अपनी सीट पर आ कर बैठ गयी।

तब मैम ने अरियाना[65] की तरफ इशारा किया तो उसने अपनी कुरसी से उठते हुए अपनी कहानी शुरू की।

पहली रात की चौथी कहानी समाप्त

[65] Arianna

1–5 डिमिट्रियो

डिमिट्रियो[66] दूकानदार अपना वेश ग्रैमोटीब्रैगी[67] जैसा बदल कर अपनी पत्नी पोलिसीना[68] को एक पादरी के साथ देखता है और उसको उसके भाइयों के पास वापस भेज देता है जो उसको मार देते हैं। बाद में डिमिट्रियो अपनी नौकरानी से शादी कर लेता है।

अरियाना बोली — "प्रिय बहिनों। हम सब जानते हैं कि आपस के प्यार में भी कितना फर्क होता है। दोनों का प्यार एक दूसरे के लिये एकसा नहीं होता।

कितनी ही बार ऐसा होता है कि पति अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है जबकि पत्नी उसको बहुत या नहीं के बराबर प्यार करती है। और कभी ऐसा भी होता है कि पत्नी तो पति को बहुत प्यार करती है पर बदले में उसको उसकी नफरत ही मिलती है।

इन हालातों में अचानक से होने वाली जलन का भाव पैदा हो जाता है जो सारी खुशियों को नष्ट कर देता है और एक सामान्य ज़िन्दगी भी नहीं बिताने देता। साथ में बेवफाई, बेईमानी, अजीब किस्म की मौत और हम लोगों के साथ कई तरह का अपमान ले कर आता है।

---

[66] Dimitrio – First Night : Fifth Fable. Told by Arianna

[67] Gramottibreggie

[68] Polissena – name of the wife of Gramottobreggie

मैं यहॉ पर उस जलन के बहुत सारे दोष और अनगिनत बुराइयॉ नहीं गिनाना चाहती जिसकी वजह से स्त्री और आदमी दोनों ही उसकी बुराइयों में फॅस जाते हैं। अगर मैं एक एक कर के आप सबको वे गिनाऊॅ तो उनको सुनते सुनते लोग थक ही नहीं जायेंगे बल्कि कहानी से भी भटक जायेंगे।

क्योंकि इस समय मेरा काम यह है कि मैं कहानी सुना कर आप सबका इस शाम मन बहलाऊॅ।

मैं आज आपको ग्रैमोटीब्रैगी[69] की कहानी सुनाती हूॅ जो आज पहली बार कही जा रही है। मुझे आशा है कि यह कहानी सुन कर केवल आपको शिक्षा ही नहीं मिलेगी बल्कि आपका दिल भी खुश होगा

बढ़िया शहर वेनिस जो अपने जजों, कानून और न्याय के लिये मशहूर है और जहॉ बहुत सारे देशों से भी लोग आ कर रहते हैं ऐड्रियाटिक सागर[70] के ऊपर बसा हुआ है और "शहरों की रानी" के नाम से जाना जाता है। वहॉ दुखी लोग भी आ कर खुश हो जाते हैं और जो लोग परेशान होते हैं उनको भी वहॉ शरण मिल जाती है।

समुद्र ही उसकी दीवारें हैं। आसमान उसकी छत है। हालॉकि यहॉ धरती पर कुछ नहीं उगता फिर भी वहॉ ऐसी किसी चीज़ की

[69] Gramottibreggie
[70] Adriatic Sea

कमी नहीं है जो किसी आदमी को एक बड़े शहर में रहने के लिये चाहिये।

पुराने समय में ऐसे अमीर और शानदार शहर में एक भला और भरोसे के लायक डिमिट्रियो नाम का एक आदमी रहता था। वहाँ वह एक सीधी सादी ज़िन्दगी गुजार रहा था। उसको एक बच्चे की बहुत इच्छा थी सो उसने एक सुन्दर सी लड़की देख कर उससे शादी कर ली। उस लड़की का नाम था पोलिसीना।

वह उसको इतना प्यार करता था जितना शायद ही कभी किसी पति ने अपनी पत्नी को किया होगा। वह उसको इतने बढ़िया कपड़े पहनाता था कि केवल कुलीन परिवारों की स्त्रियों को छोड़ कर शहर में कोई स्त्री उसके जैसी नहीं थी। शहर की कोई स्त्री उसके कपड़े अँगूठी और मोतियों का मुकाबला नहीं कर सकती थी।

इसके अलावा वह उसके लिये बहुत सुन्दर सुन्दर सजावट की चीज़ें ला कर देता था जो उसको और बहुत सुन्दर बना देती थीं जितनी कि वह थी।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि डिमिट्रियो जिसको अपनी दूकान के काम से अक्सर ही जहाज़ से आना जाना होता था उसने एक सामान लाने ले जाने वाले जहाज़ से साइप्रस[71] जाने का इरादा किया।

[71] Cyprus – an island country in the South of Italy in the Eastern Mediterranean Sea.

सो जाने के लिये उसने अपने कपड़े लगाये घर में खाने पीने का और जरूरत का सामान ला कर रखा और पौलिसीना के साथ एक सुन्दर सी नौकरानी को छोड़ कर अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। उसके जाने के बाद पौलिसीना बहुत ही आराम की ज़िन्दगी गुजारने लगी और हर ऐशो आराम की चीज़ का इस्तेमाल करने लगी।

बहुत जल्दी ही वह अपने इस अकेली और खर्चीली ज़िन्दगी से उकता गयी सो उसकी नजर वहॉ के पादरी पर पड़ी और वह उससे बहुत ज़्यादा प्यार करने लगी।

पादरी भी क्योंकि नौजवान था ज़िन्दादिल था और अच्छे व्यवहार वाला था इसलिये उसको भी पौलिसीना की नजरों के मतलब को समझने में देर नहीं लगी। यह देख कर कि वह सुन्दर थी और उसकी चाल ढाल भी बहुत अच्छी थी बदले में वह भी उसको प्यार करने लगा।

इस तरह दोनों का प्यार बढ़ता गया और अभी इस सबको बहुत दिन नहीं हुए थे कि एक दिन पोलिसीना ने उसको अपने घर बुलाया। फिर उसके बाद वे दोनों कई महीनों तक छिप छिप कर मिलते रहे जबकि उसका पति समुद्र और धरती के खतरों से खेलता रहा।

जब डिमिट्रियो को साइप्रस में रहते कुछ समय बीत गया और वहॉ उसने अपने सामान पर काफी फायदा कमा लिया तो वह वेनिस

वापस लौटा। उतर कर वह अपने घर गया अपनी पौलिसीना के पास गया।

तो जैसे ही वह पहुँचा तो वह तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी। और जब डिमिट्रियो ने उसके इस अचानक रोने की वजह पूछी तो वह बोली — "मैं एक बुरी खबर की वजह से रोती हूँ जो मुझे अभी अभी मिली है और मैं उस खुशी के लिये भी रोती हूँ जो मुझे अभी अभी तुम्हारे घर वापस आने पर तुम्हें देखने से हुई है।

क्योंकि मैंने सुना था कि साइप्रस से चलने वाले सभी जहाज़ टूट फूट गये हैं और मैं डरती थी कि कहीं तुम्हारे जहाज़ को भी कुछ न हो गया हो। पर भगवान की दया से अब तुमको सामने देख कर मैं इतनी खुश हुई कि मैं अपने आपको रोक न सकी।"

सीधे डिमिट्रियो ने जो वेनिस उससे मिलने के लिये लौटा था, और जैसा कि उसे लग रहा था कि जो समय उसने उसकी लम्बी गैरहाजिरी में उसके बिना काटा था उसी की वजह से शायद उसकी पत्नी की ऑखों में ऑसू आ गये थे। वह उसको कितना प्यार करती थी।

पर वह बेचारा यह नहीं समझ पाया कि यह सब वह ऊपर से कह रही थी दिल ही दिल में तो वह यही मना रही थी कि "अच्छा होता अगर यह समुद्र में डूब गया होता क्योंकि तब मैं अपने प्रेमी के साथ आराम से रह रही होती जो मुझे इतना प्यार करता है।"

इत्तफाक से अगले एक महीने के अन्दर अन्दर ही डिमिट्रियो को फिर से बाहर जाना पड़ा। यह सुन कर पौलिसीना को इतनी खुशी हुई कि उसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। उसने तुरन्त ही इसकी खबर अपने प्रेमी को भेज दी।

पादरी भी इसी बात के इन्तजार में था सो जैसे ही उनके मिलने का समय आया तो वह पौलिसीना से छिप कर मिलने पहुँच गया। पर पादरी का उसके घर यह आना जाना बहुत दिनों तक नहीं छिप सका।

अब डिमिट्रियो के घर के सामने डिमिट्रियो का एक दोस्त रहता था मानुसो[72]। मानुसो डिमिट्रियो की बहुत इज़्ज़त करता था क्योंकि वह बहुत हॅसमुख और मिलनसार आदमी था। वह हमेशा हर एक की सहायता करने के लिये तैयार रहता था।

जब उसने यह देखा तो उसको अपनी इस नौजवान पड़ोसी पर कुछ शक सा हुआ तो उसने उसके ऊपर पहरेदारी रखनी शुरू कर दी। उसने देखा कि जब घर का दरवाजा एक खास तरह से खटखटाया जाता तब वह दरवाजा खुल जाता था और डिमिट्रियो की पत्नी पादरी को अन्दर ले जाती।

उनको इस बात का कोई शक भी नहीं था कि यह बात किसी और को भी पता थी।

[72] Manusso – name of the friend of Dimitrio

जब वह अच्छी तरह से सन्तुष्ट हो गया तो उसने इस बात को अपने तक ही रखा और उसको बदनाम करने की कोई कोशिश नहीं की। उसने डिमिट्रियो के आने का इन्तजार किया।

जब डिमिट्रियो को घर वापस लौटना था तो उसने एक ऐसा जहाज़ लिया जो ठीक हवाओं के साथ वेनिस वापस आ रहा था और वह वेनिस आ गया।

जैसे ही वह जहाज़ से उतरा तो तुरन्त ही अपने घर पहुँचा और दरवाजा खटखटाया जिससे नौकरानी जाग गयी। उसने खिड़की से बाहर देखा तो वह अपने मालिक को पहचान गयी और उसके लिये खुशी के ऑसू बहाती हुई दरवाजा खोलने के लिये दौड़ी।

पौलिसीना ने भी जब सुना कि उसका पति वापस आ गया है तो वह भी नीचे दौड़ी आयी और उससे ऐसे लिपट गयी उसको चूमा जैसे वह दुनियॉ की सबसे ज़्यादा प्यार करने वाली पत्नी हो।

क्योंकि वह थका हुआ था और समुद्री यात्रा से बहुत परेशान था तो बिना कुछ खाये पिये ही सोने चला गया और सुबह तक इतनी गहरी नींद सोया कि उसे अपना भी होश नहीं रहा पत्नी से बात करना तो छोड़ो।

जब रात बीत गयी और दिन अच्छी तरह से निकल आया तब डिमिट्रियो उठा और केवल एक बार अपनी पत्नी को चूम कर उसने एक छोटा सा बक्सा निकाला उसमें से सजाने की कुछ छोटी छोटी पर कीमती चीज़ें निकालीं और बिस्तर पर लेट कर उनको उसने

अपनी पत्नी को दे दीं जिसने उनके एक जगह रख दिया। पर उसको लगा कि उसकी पत्नी के दिमाग में कुछ और चल रहा था।

इसके कुछ देर बाद ही डिमिट्रियो को तेल और कुछ दूसरी चीज़ें खरीदने के लिये अपूलिया[73] जाना पड़ा। सो अपनी पत्नी से यह कह कर कि वह अपूलिया जा रहा है वह वहॉ जाने की तैयारी में लग गया।

उसकी पत्नी ने जो बहुत चालाक थी यह बहाना किया कि उसके जाने से उसका तो दिल ही टूट गया है। उसने अपने पति को चूमा और कहा कि काश वह उसके साथ कुछ दिन और रह जाता।

पर दिल ही दिल में तो उसको उसका एक एक दिन वहॉ रहना सैंकड़ों दिनों के बराबर लग रहा था। वह तो बस यही चाहती थी कब वह वहॉ से जाये और वह कब अपने प्रेमी को बुलाये।

अब मानुसो ने जिसने उन दोनों को प्रेम करते हुए देखा था सोचा कि उसने अब अगर अपने दोस्त को उसकी पत्नी के बारे नहीं बताया तो वह एक बहुत बड़ी गलती करेगा। सो उसने सोचा कि इस समय यह बात उसको बता ही देनी चाहिये कि उसने उसके पीछे क्या देखा फिर जो कुछ हो सो हो।

एक दिन उसने डिमिट्रियो को अपने घर खाना खाने के लिये बुलाया। जब वे मेज पर खाना खाने बैठे तो उसने डिमिट्रियो से कहा — "डिमिट्रियो मेरे दोस्त। अगर मैं गलत नहीं हूॅ क्योंकि मैंने

[73] Apulia

हमेशा तुम्हें चाहा है और जब तक मुझमें सॉस है तब तक शायद चाहता रहूँगा। तुम कोई भी कभी भी कितना भी मुश्किल काम मुझे दोगे तो मैं उसे करूँगा क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

अगर तुम बुरा न मानो तो मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ जिसको सुन कर तुम खुश होने की बजाय नाराज हो जाओगे। मुझे उसे तुमसे कहने में डर भी लगता है कि कहीं वह बात सुन कर तुम्हारा चैन ही न खो जाये।

फिर भी अगर तुम उस बात को ठीक से समझोगे, जो कि मैं समझता हूँ कि समझोगे, तो तुम उसको सुन कर गुस्सा बिल्कुल भी नहीं होना पर साथ ही सच्चाई से अपनी ऑखें भी नहीं फेर लेना।"

डिमिट्रियो बोला — "नहीं नहीं। तुम मुझसे जो कुछ भी कहना चाहो कह सकते हो। अगर तुमने इत्तफाक से किसी आदमी को मार भी दिया है तो भी तुम मुझसे कह सकते हो और मुझ पर भरोसा कर सकते हो।"

मनुसो बोला — "मेरे दोस्त मैंने किसी को नहीं मारा पर मैंने एक दूसरा आदमी देखा है जो तुम्हारी इज़्ज़त और तुम्हारे भले नाम से खेल रहा है।"

डिमिट्रियो बोला — "साफ साफ कहो कि क्या बात है मनुसो। बात को हेराफेरी से मत कहो।"

मनुसो ने पूछा — "क्या तुम मुझसे साफ साफ सुनना चाहते हो? तो लो मैं तुम्हें थोड़े में बताता हूँ। इसे ध्यान से और धीरज से

सुनो। पौलिसीना तुम्हारी पत्नी जिसको तुम इतना प्यार करते हो जब भी तुम यहाँ नहीं होते हो तो अपनी हर रात एक पादरी के साथ गुजारती है।"

डिमिट्रियो ने पूछा — "यह कैसे हो सकता है? यह देखते हुए कि वह मुझे इतना अधिक प्यार करती है। जब भी में यहाँ से जाता हूँ तो मेरी छाती पर सिर रख कर कितने आँसू बहाती है और कितनी लम्बी लम्बी साँसें भरती है। अगर मैं खुद भी यह सब अपनी आँखों से देखता तो भी मुझे विश्वास नहीं होता।"

मनुसो बोला — "अगर तुम अक्लमन्द हो, जो कि मैं समझता हूँ कि तुम हो और अगर तुम्हारे पास ज़रा सा भी दिमाग है तो यह सब सुन कर तुम अपनी आँखें बन्द नहीं कर लोगे जैसे कि बहुत सारे सीधे और बेवकूफ लोग कर लेते हैं।

जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सब मैं तुम्हें तुम्हारी आँखों से दिखा सकता हूँ और तुम्हारे हाथों से छुआ कर महसूस करा सकता हूँ तभी तुमको मेरी बात पर भरोसा होगा।"

डिमिट्रियो बोला — "तब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि तुम मुझे सन्तुष्ट करने के लिये जो कुछ मुझे करने के लिये कहोगे मैं करूँगा।"

मनुसो बोला — "तब तुम्हें बहुत ही सावधानी से काम लेना पड़ेगा। तुमको अपना यह प्लान छिपा कर रखना पड़ेगा नहीं तो तुम्हारे प्लान का भाँडा फूट जायेगा। अगली बार जब तुम बाहर

जाओ तो लोगों को यह विश्वास हो जाना चाहिये कि तुम वास्तव में यहॉ से जहाज़ पर चढ़ कर चले गये हो।

पर बजाय वेनिस छोड़ कर कहीं और जाने के तुम छिप कर मेरे घर आ जाना और तब तुम अपनी ऑखों से ही सब कुछ देख लेना।"

सो जब डिमिट्रियो को अगली बार बाहर जाने का मौका आया तो जाते समय उसने अपनी पत्नी को बड़े प्यार से गले लगाया और कहा कि उसके पीछे वह घर की ठीक से देखभाल करे।

यह कह कर उसने जहाज़ पर चढ़ने का बहाना बनाया पर वह वहॉ से लौट आया और मनुसो के घर जा कर छिप गया।

इत्तफाक से उस दिन दो बजे से पहले ही बड़े ज़ोर का तूफान आ गया। इतनी ज़ोर की बारिश हो गयी लगता था जैसे आसमान फट कर गिर पड़ा हो। सारी रात बारिश नहीं रुकी।

पादरी को तो पहले ही यह बता दिया गया था कि डिमिट्रियो बाहर चला गया है। उसको बारिश और हवा की कोई चिन्ता नहीं थी। वह तो बस वहॉ जाने का इन्तजार कर रहा था।

सो वह वहॉ अपने समय से वहॉ पहुँच गया और दरवाजे पर अपने खास ढंग से दस्तक दी। जैसे ही उसने दस्तक दी कि दरवाजा खुला और जैसे ही वह घर के अन्दर घुसा तो पौलिसीना ने उसको बहुत बार चूम कर उसका स्वागत किया।

जबकि उसका पति सड़क पार छिपा हुआ वह सब देखता रहा जो कुछ भी वहॉ हो रहा था। अब वह अपने दोस्त के कहे हुए को नकार नहीं सकता था। वह तो दुख की वजह से रो पड़ा।

यह देख कर उसका दोस्त उससे बोला — "अब तुम क्या सोचते हो? अगर तुमने इसे अपनी ऑखों से नहीं देखा होता तो शायद तुम मेरा विश्वास ही नहीं करते।

पर अब तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि तुम इस बारे में एक शब्द भी नहीं बोलो। अपना दिमाग ठंडा रखो और अगर तुम वह सुनोगे जो मैं तुमसे अब कहने जा रहा हूॅ और वही करोगे जो मैं तुम्हें करने के लिये कहने जा रहा हूॅ तो तुम कुछ और भी देखोगे।

तुमने जो ये कपड़े पहन रखे हैं इन्हें उतार दो और भिखारियों जैसे फटे पुराने कपड़े पहन लो अपने चेहरे पर थोड़ी सी मिट्टी मल लो और फिर अपने घर एक भिखारी की तरह जाओ। अपनी आवाज बदल कर अपनी पत्नी से रात भर के लिये रहने की जगह मॉगो।

हो सकता है कि यह तूफानी रात देख कर तुम्हारी नौकरानी शायद तुम्हें रात को घर में शरण दे दे। और अगर ऐसा हो गया तो शायद तुम्हें कुछ और देखने को मिल जाये जो दूसरे हालातों में तुमको देखने को नहीं मिलता।"

डिमिट्रियो ने अपने दोस्त की सलाह सुनी। उसने अपने कपड़े उतारे फटे पुराने कपड़े पहने और अपने घर पहुॅच गया। हालॉकि

अभी भी बारिश बहुत तेज़ हो रही थी वहॉ जा कर उसने रोते और सुबकते हुए अपना दरवाजा तीन बार खटखटाया।

नौकरानी ने खिड़की से झॉक कर देखा और पूछा "कौन है?"

डिमिट्रियो आवाज बदल कर कहा कि वह एक गरीब बूढ़ा था और उस तूफानी रात में इतनी तेज़ बारिश में बिल्कुल भीग गया था और भगवान के नाम पर केवल उस रात घर में रहने की शरण मॉग रहा था।

वह नौकरानी जो गरीबों पर दया करने वाली थी पौलिसीना के पास भागी गयी और उसने उससे इस गरीब आदमी की प्रार्थना कही और उसको सहायता करने की प्रार्थना की ताकि वह सूख जाये और थोड़ा गर्म हो जाये क्योंकि वह बारिश में बिल्कुल भीग गया था।"

वह आगे बोली — "वह हमारे लिये पानी खींच सकता है। आग जला सकता है ताकि बतखें जल्दी भुन जायें। फिर मैं सूप बना सकती हूॅ। मेज पर खाना लगा सकती हूॅ और रसोईघर का और दूसरा काम कर सकती हूॅ।"

मालकिन इस बात पर राजी हो गयी और नौकरानी ने दरवाजा खोल कर उसको अन्दर बुला लिया। उसने उसको आग के पास बिठाया।

उसी समय पौलिसीना और पादरी हाथ में हाथ डाले रसोईघर की तरफ नीचे आये और तुरन्त ही उस गरीब बूढ़े का मजाक बनाने

लगे। पौलिसीना उसके पास तक गयी और उससे पूछा "तुम्हारा नाम क्या है?"

बूढ़ा बोला — "मेरा नाम ग्रैमोटीब्रेगी[74] है मैम।"

पौलिसीना ने जब यह नाम सुना तो वह अपने सारे दाँत निकाल कर बड़े ज़ोर से हँस पड़ी। पादरी के गले में अपनी बाँहें डाल कर वह बोली — "यहाँ आओ प्रिये मैं तुम्हें चूम लूँ।"

बेचारे डिमिट्रियो को अपनी आँखों से उनका गले में बाँहें डालना और चूमना देखना पड़ा। अब यह मैं आपके ऊपर छोड़ती हूँ कि आप खुद ही कल्पना कर लें कि उसको अपनी पत्नी का यह व्यवहार अपनी आँखों के सामने देख कर कैसा लग रहा होगा।

जब रात के खाने का समय आया और पौलिसीना और पादरी मेज पर आ कर बैठ गये तो नौकरानी रसोईघर में गयी और बूढ़े से बोली — "बाबा मुझे आपसे यह कहना है कि मेरी मालकिन का पति एक बहुत ही अच्छा आदमी है। इतना अच्छा कि आपको सारे वेनिस में वैसा आदमी कहीं नहीं मिलेगा। वह उनको किसी चीज़ की कमी महसूस नहीं होने देता। पर भगवान जानता है कि वह बेचारा इस मौसम में कहाँ है।

जबकि यह बिल्कुल ही बेवफा औरत है। यह उसका बिल्कुल ख्याल नहीं रखती। न इसे उसकी इज़्ज़त का ही कोई ख्याल है। यह तो बस अपने प्रेम की सन्तुष्टि के पीछे पागल है। बस उसी के

[74] Gramottiveggio

साथ रहती है और दूसरों के लिये तो इसके घर के दरवाजे बिल्कुल बन्द हैं।

लेकिन मैं तुमसे विनती करती हूँ कि चलो इसके कमरे के दरवाजे तक दबे पॉव चलते हैं और फिर देखते हैं कि ये लोग क्या कर रहे हैं और ये लोग मेज पर किस तरह से बैठे हुए हैं। और जब वे दरवाजे के पास आये तो जैसे वे बैठे हुए थे वह सब देख कर तो वे दंग रह गये।

जब सोने का समय आया तो वे दोनों सोने चले गये। फिर वहॉ जो कुछ हुआ उसको देख कर तो डिमिट्रियो को जिसका बिस्तर बराबर वाले कमरे में ही लगा था सारी रात नींद नहीं आयी। सुबह होते ही वह अपने दोस्त मनुसो के घर चला गया।

जैसे ही उसने उसे देखा तो हॅस कर पूछा — "कैसा चल रहा है उनका मामला। क्या जो कुछ तुमने देखा वह तुम्हारी पसन्द का था।"

डिमिट्रियो बोला — "निश्चित रूप से नहीं। अगर मैंने यह सब अपनी ऑखों से नहीं देखा होता तो मैं तो तुम्हारी इस बात पर कभी विश्वास ही नहीं करता। पर अभी तो मुझे धीरज रखना है शायद यही मेरी किस्मत में लिखा है।"

पर मानुसो बहुत ही होशियार था वह बोला — "मेरे दोस्त अब तुम वही करो जो मैं तुमसे करने के लिये कहूँ। अभी तुम नहाओ धोओ साफ सुथरे हो अपने कपड़े पहनो और फिर अपने घर

जाओ। अपनी पत्नी से कहो कि अच्छा हुआ कि तुम तूफान की वजह से जहाज़ पर नहीं चढ़ पाये।

इस बात का खास ख्याल रखना कि वह पादरी तुम्हारे पहुँचने पर बच कर न भाग जाये क्योंकि जैसे ही तुम घर में घुसोगे वह जरूर ही कहीं न कहीं छिपने की कोशिश करेगा। और जब तक वह वहीं छिपा रहेगा जब तक उसको वहाँ से भागने का कोई ठीक मौका न मिल जाये। वह मौका तुम उसको मत देना।

इस बीच अपनी पत्नी के सब रिश्तेदारों को एक दावत के नाम पर अपने घर बुला लो। उसके बाद उनके सामने ही पादरी को उसकी छिपी हुई जगह से निकाल लाओ। उसके बाद फिर और जो कुछ तुम चाहो जो तुम्हें ठीक लगे वह कर सकते हो।"

डिमिट्रियो तो यह प्लान सुन कर बहुत खुश हो गया। बस उसने तुरन्त ही नहाया धोया अपने कपड़े बदले और जा कर अपने घर का दरवाजा खटखटाया।

नौकरानी ने जब देखा कि उसके मालिक आ गये तो वह तुरन्त ही पौलिसीना के पास दौड़ी गयी जो अभी भी पादरी के साथ थी। वह उससे बोली — "मैम मालिक आ गये हैं।"

पौलिसीना ने जब ये शब्द सुने तो वह तो डर के मारे काँप गयी फिर भी उसने सब कुछ ठीकठाक किया पादरी को उस कमरे में छिपाया जहाँ वह अपना कीमती सामान रखती थी। फिर उसने

अपना फ़र के अस्तर वाला कोट पहना और नंगे पैर ही दरवाजा खोलने के लिये दौड़ गयी।

वह बोली "प्रिय तुम आ गये। आओ तुम्हारा स्वागत है। मेरी तो तुम्हारी सोच में ऑख भी नहीं झपकी कि तुम्हारे ऊपर क्या गुजर रही होगी। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि तुम सही सलामत वापस आ गये।"

डिमिट्रियो भी घर में घुसते ही बोला — "ओह मेरी प्यारी पौलिसीनो। इस बुरे मौसम की वजह से मैं भी रात को एक पल नहीं सो सका। इसलिये मैं अब थोड़ी देर तक आराम करूॅगा। इस बीच तुम नौकरानी को अपने भाइयों के घर भेज कर उनको शाम के खाने के लिये यहीं बुला लो।"

पोलिसीना बोली — "अच्छा तो यही होगा कि हम इनका यह खाना एक दो दिन के लिये टाल दें क्योंकि आज तो वह हमारे सोने वाले कपड़े धो रही है।"

डिमिट्रियो बोला — "कल शायद मौसम ठीक हो जाये तो मैं फिर अपने काम से चला ही जाऊॅ।"

पोलिसीना बोली — "पर तुम खुद भी तो जा सकते हो और अगर तुम बहुत थक गये हो तो अपने दोस्त मानुसो से कह दो वह जा कर तुम्हारा यह काम कर आयेगा।"

डिमिट्रियो बोला — "यह तुमने अच्छी सलाह दी।" कह कर उसने अपने दोस्त को इस सन्देश के साथ अपनी पत्नी के भाइयों के

घर भेज दिया। उसने काम को वैसे ही किया जैसा कि पहले तय हो गया था।

शाम हुई तो पौलिसीना के भाई आये। सबने मिल कर हॅसी खुशी खाना खाया। जब मेज साफ कर दी गयी तो डिमिट्रियो बोला — "मेरे अच्छे भाइयो। मैंने कभी आपको अपना मकान ठीक से नहीं दिखाया। न ही मैंने आपको वे सुन्दर कपड़े दिखाये जो मैंने पौलिसीना यानी मेरी पत्नी और आपकी बहिन को ला कर दिये हैं ताकि आप सब यह जान सकें कि मैं उसे कैसे रखता हूॅ।

जाओ पौलिसीना जाओ अपने भाइयों को ले जाओ और उन्हें अपना घर दिखाओ।"

कह कर डिमिट्रियो उठा और उनको अपने गेहूॅ लकड़ी तेल और दूसरे सामान के भंडारघर दिखाये। फिर उसने उनको बहुत बढ़िया बढ़िया शराब की बोतलें दिखायीं।

उसके बाद उसने अपनी पत्नी से कहा — "पौलिसीना जाओ वे अॅगूठियॉ और मोती ला कर दिखाओ जो मैं तुम्हारे लिये ले कर आया हूॅ। और यह देखो इस छोटी सी सन्दूकची में रखे हुए ये पन्ने हीरे लाल और दूसरी अॅगूठियॉ। भाइयों। आप लोग क्या सोचते हैं कि क्या मैं आपकी बहिन को ठीक से रख रहा हूॅ या नहीं।"

उसके भाई बोले — "भाई हम सब जानते हैं और अगर हम तुमसे सन्तुष्ट न होते तुम्हारी हैसियत न जानते तो हम अपनी बहिन की शादी तुमसे क्यों करते?"

पर डिमिट्रियो की बात तो अभी खत्म नहीं हुई थी। इसके बाद उसने अपनी पत्नी से सारे बक्से खोलने के लिये कहा और उन सबको भी खोलने के लिये कहा जहॉ वह अपने कीमती कपड़े रखती थी ताकि वह अपने कीमती कपड़े अपने भाइयों को दिखा सके।

पर पौलिसीना का दिल तो डर के मारे डूबा जा रहा था। वह उस डरे हुए दिल से बोली — "इन लोगों को उस सबको खोल कर मेरे कपड़े दिखाने की क्या जरूरत है?

क्या मेरे भाई जानते नहीं कि तुम हमेशा ही मुझे कितने अच्छे और कीमती कपड़े पहनाते हो। उससे भी ज़्यादा कीमत के जितने की हमारी हैसियत है।"

लेकिन डिमिट्रियो उसकी इस बात पर कोई ध्यान न देते हुए चिल्लाया — "मैं कहता हूँ कि यह वाला बक्सा तुरन्त खोलो।"

और जब वे बक्से खोले गये तो उसने उसके भाइयों को उसके सारे कपड़े दिखाये। अब जब वे आखिरी बक्से को खोलने पर आये तो उस बक्से की चाभी कहीं मिली ही नहीं। और उसकी वजह यह थी कि उसमें पादरी छिपा बैठा था।

डिमिट्रियो ने जब देखा कि उसकी तो चाभी ही नहीं मिल रही तो उसने एक हथौड़ा उठाया और उसके ताले पर इतनी ज़ोर से दे मारा कि ताला एक ही बार में टूट गया। डिमिट्रियो ने बक्सा खोला।

लो उसमें तो पादरी बैठा था। वह तो वहॉ अपने आपको किसी भी तरह नहीं छिपा सका और न वहॉ से भाग ही सका। सबने उसको पहचान लिया था। वह तो डर के मारे कॉप रहा था।

पौलिसीना के भाइयों ने देखा कि मामला क्या था। उनको तो इतना गुस्सा आया कि वे तो अपने छुरों से जो वे पहने हुए थे बस उसको और उसके प्रेमी को मारने ही वाले थे कि पति ने रास्ते का रुख दूसरी तरफ मोड़ दिया।

उसको यह बहुत शर्मनाक लगा कि किसी आदमी को उसी की कमीज में मारा जाये चाहे वह कितना भी ताकतवर क्यों न हो। उसने पत्नी के भाइयों से पूछा — "तुम मेरी पत्नी के इस व्यवहार के बारे में क्या जानते हो।"

फिर वह अपनी पत्नी की तरफ देख कर बोला — "क्या मैं इसी लिये काम से लौटा हूॅ कि मैं घर आ कर यह सब देखूॅ? क्या मैं यही सब देखने का अधिकारी हूॅ? नीच स्त्री। इस समय किसको इतना अधिकार है जो मुझे तेरा गला काटने से रोक सके।"

बेचारी नीच स्त्री कुछ नहीं बोल सकी चुप खड़ी रही क्योंकि उसके पति ने वह सब कुछ बता दिया था जो उसने कल रात देखा था और वह सब इतना सही था कि वह अपने बचाव में कुछ नहीं कह सकी।

अब डिमिट्रियो पादरी की तरफ बढ़ा और बोला — "उठो यहॉ से अपने कपड़े उठाओ और तुरन्त ही यहॉ से चले जाओ। साथ में

अपनी बदकिस्मती भी लेते जाओ। मुझे अपनी सूरत कभी मत दिखाना क्योंकि एक मुजरिम स्त्री की वजह से मैं तुम्हारे खून से अपने हाथ गन्दे नहीं करना चाहता। अब तुम खड़े क्या हो, जाते क्यों नहीं।"

पादरी बिना कुछ कहे वहॉ से भागता नजर आया। जब वह भाग रहा था तो सोच रहा था कि डिमिट्रियो और पौलिसीना के भाई उसके पीछे खड़े खड़े उसके बारे में क्या सोच रहे होंगे।

तब डिमिट्रियो पौलिसीना के भाई की तरफ मुड़ा और बोला — "तुम अपने बहिन को जहॉ ले जाना चाहो वहॉ ले जाओ क्योंकि मैं अब इसकी सूरत पल भर के लिये भी देखना नहीं चाहता।"

पौलिसीना के भाई गुस्से के मारे उसको घर से बाहर ले गये और बाद में उसको मार दिया। जब यह खबर डिमिट्रियो को मिली तो उसकी नजर अपनी नौकरानी पर पड़ी जो बहुत ही सुन्दर लड़की थी।

इसके अलावा उसने उसके साथ जो अच्छा व्यवहार किया था वह उसे उसका बदला देना चाहता था सो उसने उसको अपनी पत्नी बना लिया। उसने अपनी पुरानी पत्नी के सारे जवाहरात गहने और कपड़े उसको दे दिये। वे दोनों खुशी खुशी फिर बहुत दिनों तक रहे।"

जैसे ही अरियाना ने अपनी कहानी खत्म की तो सब लोग एक आवाज में बोले — "बदकिस्मत डिमिट्रियो का धीरज बहुत ही

तारीफ के काबिल था। अपनी ऑखों से यह सब देखने के बाद भी कि पादरी ने उसकी कितनी बेइज़्ज़ती की थी उसको छोड़ दिया। वह तो हवा में एक सूखे पत्ते की तरह कॉप रहा होगा।"

मैम को लगा कि इस कहानी के ऊपर कुछ जरूरत से ज़्यादा बात हो रही है तो उसने उनको रोक दिया और अरियाना को अपने पहेली पूछने के लिये कहा।

तब अरियाना ने मुस्कुराते हुए यह पूछा —

तीन खुश दोस्त खाने के लिये बैठे तुम्हें इससे ज़्यादा खुश लोग नहीं मिल सकते
उन्होंने हर प्लेट में से कुछ न कुछ खाया और खाली कर दीं
इससे ज़्यादा अच्छा खाना तो वे सोच भी नहीं सकते थे
फिर खानसामे ने उनके सामने एक प्लेट रखी जिसमें तीन मोटे मोटे कबूतर थे
हर एक ने अपना कबूतर खाया हड्डियॉ और सब मगर दो कबूतर फिर भी बच रहे

यह पहेली तो वहॉ बैठे सारे लोगों को बहुत मुश्किल लगी सो आखीर में उसको कोई हल नहीं कर सका क्योंकि कोई उनमें से यह सोच ही नहीं सका कि तीन दोस्त थे तीन कबूतर थे और तीनों ने अपने अपने कबूतर खा लिये तो फिर दो कबूतर मेज पर कैसे बच गये। क्योंकि उन्हें देखा ही नहीं कि एक सॉप घास में छिपा हुआ था।

जब अरियाना ने देखा कि कोई उसकी पहेली हल नहीं कर सका और उसका हल नामुमकिन है तो उसने अपना सुन्दर चेहरा मैम की तरफ किया और मुस्कुरा कर बोली — "मैम ऐसा लगता है कि

मेरी पहेली कोई हल नहीं कर सका जबकि इसका हल निकालना कोई मुश्किल काम नहीं है। यह तो बड़े आराम से सुलझ सकती है।

इसका जवाब है कि इस पहेली मे एक दोस्त का नाम है "हर एक"। जब वे सब खाना खाने बैठे तो उन्होंने भूखे भेड़िये की तरह खाना खाया और खाने के अन्त में जब तीन कबूतर लाये गये तो उस "हर एक" को छोड़ कर दोनों का पेट भर गया था सो उसमें से केवल "हर एक" ने एक कबूतर खाया बाकी दो बच गये।"

इस पहेली का हल सुन कर सब लोग बहुत हॅसे क्योंकि यह पहेली वे किसी तरह भी नहीं सुलझा सकते थे।

इस तरह इस पहली रात की यह आखिरी कहानी खत्म हुई। मैम ने सबको विदा किया और सब अपने अपने घर चले गये।

पहली रात की पॉचवीं कहानी समाप्त

पहली रात समाप्त

दूसरी रात

दूसरी रात

सूरज के रथ के पहिये हिन्द महासागर के नमकीन पानी में जा चुके थे। अब वे दुनियॉ को रोशनी नहीं दे पा रहे थे। उसकी सींग वाली बहिन अपनी हल्की हल्की रोशनी फैला रही थी। चमकते हुए सितारे पास पास अंगारों की तरह से जल रहे थे और आसमान में अपनी रोशनी फैला रहे थे।

कि शाही लोग फिर अपने रोज की जगह पर मिले। जब वे सब अपनी अपनी सीटों पर बैठ गये तो मैम लुक्रेशिया बोली कि उस दिन भी वही क्रम रहेगा जो पहले दिन रहा था और वे सब उसी तरह से आनन्द मनायेंगे।

यह देख कर कि पॉच लड़कियों ने अभी अपनी कहानियॉ नहीं कहीं हैं मैम ने ट्रैवीसन[75] से कहा कि वह उन पॉचों के नाम एक एक कागज पर लिखे और उन सबको एक सोने के बर्तन में डाल दे। और फिर उसमें से एक एक कर के परचियॉ निकाली जायें और जिनका नाम कहानी सुनाने के लिये पहले निकले फिर वही आज की कहानी की शुरूआत करे। जैसा कि उन्होंने पिछली रात किया था।

[75] Trevisan

ट्रैवीसन ने वैसा ही किया जैसा मैम ने कहा था। पहला नाम इसाबैला का निकला दूसरा फ़ियोरडायना का तीसरा लियेनोरा का चौथा लोडोविका का और पॉचवा नाम विसैन्ज़ा का निकला।[76]

उसके बाद बॉसुरी पर एक धुन बजी और सब गाने लगे और एक गोले में नाचने लगे। ऐन्टोनियो मोलीनो और लियोनोरा[77] सबके आगे आगे थे। वे सब इतनी ज़ोर ज़ोर से खूब खुल कर हॅस रहे थे कि वैसी खुशी की आवाजें कहीं सुनने को नहीं मिली होंगी।

जब नाच गाना खत्म होने को आया तो वे सब बैठ गये। स्त्रियों ने तब मैम की तारीफ में एक गाना गाया। गाना खत्म होने के बाद इसाबैला ने जिसका नाम कहानी कहने के लिये पहला निकला था अपनी कहानी शुरू की —

[76] First name was of Isabella, the second name was of Fiordiana, the third name was of Lionora, the fourth name was of Lodovica, and the fifth name was of Vicenza.

[77] Antonio, Molino and Lionora

2–1 गैलिओटो

ऐंगलिया के राजा गैलिओटो के एक बेटा था जो सूअर के रूप में पैदा हुआ था। आखीर में वह अपनी सूअर की खाल फेंक कर एक सुन्दर नौजवान बन जाता है।

ओ सुन्दर स्त्रियों अगर इन्सान भगवान को अपने आपको एक जंगली जानवर के बदले एक आदमी के रूप में पैदा होने के लिये हजारों साल तक भी धन्यवाद दे तो वह धन्यवाद उसके लिये बहुत कम है।

इसको साबित करने के लिये एक कहानी मेरे दिमाग में आती है जिसमें एक आदमी एक सूअर की तरह पैदा हुआ पर बाद में वह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन गया। पर जब तक उसने अपने लोगों पर राज किया तब तक वह सूअर राजा के नाम से ही जाना जाता रहा।

एक बार की बात है कि ऐंगलिया में गैलिओटो[78] नाम का एक राजा राज करता था। भगवान की दया से वह बहुत अमीर था और उसके पास बहुत सारा खजाना था। उसकी पत्नी का नाम अरसीलिया[79] था। अरसीलिया हंगरी के राजा मैथियास[80] की बेटी थी और अपने समय की सबसे सुन्दर और गुणवान स्त्री थी।

[78] The King of Anglia – his name was Galeotto – the First Fable of the Second Night told by Isabella
[79] Ersilia – name of the queen of the King Galeotto. She was the daughter of the King of Hungary
[80] Matthias – the King of Hungary (a country in Europe)

गैलिओटो खुद भी बहुत अक्लमन्द राजा था और उसके राज्य में किसी को उससे किसी तरह की कोई शिकायत नहीं थी।

हालॉकि उनकी शादी को कई साल हो गये थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था इसलिये दोनों पति पत्नी बहुत दुखी रहते थे।

एक दिन रानी अरसीलिया बागीचे में फूल चुनने गयी कि अचानक वहॉ उसको थकान लगने लगी। उसने वहॉ एक ऐसी जगह देखी जहॉ हरी हरी घास उगी हुई थी। वह वहॉ जा कर बैठ गयी। कुछ तो थके होने की वजह से और कुछ चिड़ियों की मीठी आवाज सुन कर वह वहॉ लेट गयी और सो गयी।

इत्तफाक की बात कि उसी समय जब वह वहॉ सो रही थी तो वहॉ से तीन परियॉ गुजरीं। यों तो वे आदमियों की जाति को बेकार समझती थीं पर जब उन्होंने वहॉ सोती हुई रानी को देखा तो वे रुक गयीं और उसकी सुन्दरता को देखने लगीं।

फिर तीनों मिल कर सोचने लगीं कि वे कैसे उसकी रक्षा कर सकती हैं और कैसे उसके ऊपर जादू डाल सकती हैं।

जब उन्होंने आपस में एक दूसरे से सलाह कर ली तो एक परी बोली कि वह उसको यह वरदान देती है कि उसको कोई नुकसान न पहुँचा सके। इसके अलावा अगली बार जब यह राजा से मिले तो इसके एक ऐसा बेटा हो जिसकी सुन्दरता का दुनियॉ भर में कोई सानी न हो।

दूसरी परी बोली — "मैं इसको यह ताकत देती हूँ कि इसे कोई नाराज न कर सके। और इसके जो बेटा हो उसके अन्दर इस दुनियॉ के सब तरह के गुण हों।"

और तीसरी परी ने उसको यह वरदान दिया कि "वह सब स्त्रियों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो। पर इसके जो बेटा होगा वह एक सूअर की खाल के साथ पैदा होगा। उसके सारे ढंग सूअर जैसे होंगे और वह उस शक्ल में तब तक रहेगा जब तक वह तीन लड़कियों से शादी नहीं कर लेगा।"

इतना कह कर वे तीनों परियॉ वहॉ से चली गयीं। उनके जाने के बाद रानी की ऑख खुल गयी। वह वहॉ से उठी और अपने चुने हुए फूल ले कर महल चली गयी।

कुछ समय बाद उस रानी को बच्चे की आशा हो गयी और जब बच्चे के जन्म का समय आया तो वह बच्चा तो किसी आदमी की शक्ल का नहीं बल्कि एक सूअर की शक्ल का ही था।

जब राजा और रानी ने यह सुना तो वे दोनों बहुत दुखी हुए। राजा ने सोचा कि उसकी रानी तो कितनी अच्छी और अक्लमन्द थी सो वह उस सूअर को समुद्र में फिंकवा दे ताकि वह एक सूअर को जन्म देने की शर्मिन्दगी से बच जाये पर फिर उसने सोचा कि यह बच्चा रानी का अपना भी तो था तो उसको जैसा भी वह है वैसा ही रहने दिया जाये।

सो उसने उसको बड़े दुख और दया के साथ उठाया और निश्चय किया कि वह उसको एक आदमी की तरह से पालेगा एक जंगली जानवर की तरह से नहीं। इस तरह से वह सूअर राज घराने में एक राजकुमार की तरह से बहुत अच्छी देखभाल में पलने बढ़ने लगा।

अक्सर उसको रानी के पास लाया जाता और उसकी छोटी सी थूथनी और छोटे छोटे पंजों को रानी की गोद में दे दिया जाता। रानी अपने मॉ जैसे प्यार में डूब कर उसके सख्त बालों वाले शरीर को प्यार से सहलाती, उसको गले लगाती और उसको ऐसे चूमती जैसे वह कोई सूअर न हो कर आदमी हो।

वह सूअर भी उसकी गोद में आ कर अपनी छोटी छोटी पूँछ हिलाता जैसे वह उसके प्यार को पहचान रहा हो और उसको उसका जवाब दे रहा हो कि मैं भी तुमको प्यार करता हूँ।

दिन गुजरने लगे। धीरे धीरे उस सूअर ने बात करना सीख लिया। वह अब बाहर शहर में भी घूमने लगा पर जब भी उसको कहीं मिट्टी या कीचड़ दिखायी दे जाती तो वह उसमें लोटने से बाज़ नहीं आता था और फिर जब वह घर लौटता तो सारा कीचड़ से भरा रहता।

आ कर वह प्यार में अपने पिता और माता यानी राजा और रानी के कपड़ों से लिपट जाता और उनके सारे सुन्दर कपड़े खराब

कर देता। पर क्योंकि वह उनका अपना बेटा था इसलिये वे यह सब सहते रहते थे।

एक दिन वह बाहर से कीचड़ और गन्दगी में लोट कर घर आया तो अपनी माँ की कीमती पोशाक पर आ कर लेट गया और गुर्राती हुई सी आवाज में अपनी माँ से बोला — "माँ मुझे शादी करनी है।"

माँ बोली — "बेवकूफी की बातें मत करो। ऐसी कौन सी लड़की है जो तुमसे शादी करेगी। और फिर ज़रा यह तो सोचो कि कौन कुलीन या नाइट[81] अपनी बेटी को तुम जैसे गन्दे जानवर को देगा।"

पर वह सूअर उसके पीछे ही पड़ा रहा कि उसको किसी तरह की भी एक पत्नी चाहिये। अब रानी को यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस मामले को कैसे निपटाये तो उसने राजा से सलाह ली कि ऐसी मुसीबत में वह क्या करे।

राजा ने कहा — "हमारा बेटा शादी करना चाहता है पर हम ऐसी लड़की कहाँ से लायें जो उसको अपना पति स्वीकार कर ले।"

वह सूअर अब रोज अपनी माँ के पास आता और यही कहता — "माँ मुझे शादी करनी है। मैं तुम्हें शान्ति से नहीं रहने दूँगा जब

[81] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

तक तुम मेरी शादी उस लड़की से नहीं करा दोगी जिसे मैंने आज देखा है। वह मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

अब हुआ यह कि यह लड़की जिसको राजकुमार सूअर ने देखा था एक गरीब स्त्री की बेटी थी। इस गरीब स्त्री के तीन बेटियॉ थीं और तीनों एक से एक सुन्दर थीं।

सो रानी ने इस गरीब स्त्री और उसकी सबसे बड़ी बेटी को बुलाया और उस स्त्री से कहा — "ओ गरीब स्त्री, तुम तो बहुत गरीब हो और तुम्हारे ऊपर बच्चों का बोझ भी है। अगर जो मैं तुमसे कहती हूॅ वह तुम मान लो तो तुम अमीर हो सकती हो।

जैसा कि तुमको मालूम है कि मेरे एक बेटा है जो सूअर की शक्ल में है। मैं उसकी शादी तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी से करना चाहती हूॅ।

तुम उसके बारे में यह न सोचो कि तुम अपनी बेटी की शादी किससे कर रही हो बल्कि तुम हमारे यानी राजा और रानी के बारे में सोचो कि तुम उसकी शादी हमारे बेटे से कर रही हो।

और हॉ यह याद रखना कि हमारे मरने के बाद हमारा सारा राज्य तुम्हारी बेटी को ही मिलेगा।"

बेटी ने जब रानी की बात सुनी तो वह तो बहुत परेशान हो गयी और शर्म से लाल पड़ गयी। वह बोली कि वह किसी भी हाल में रानी की बात नहीं मानेगी। पर उसकी मॉ ने जब उसको ज़ोर दे कर समझाया तो फिर उसको मानना ही पड़ा।

एक दिन वह सूअर जब रोज की तरह कीचड़ में लिपटा घर आया तो उसकी मॉ ने कहा — "बेटे हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी पसन्द की बहू ढूँढ ली है।"

यह कह कर उसने उस लड़की को बुलवाया जो इस समय अपनी शाही पोशाक में सजी बैठी थी और उसे अपने सूअर बेटे को दे दिया। जब उसने उस प्यारी सी सुन्दर सी लड़की को देखा तो वह बहुत खुश हुआ।

वह बदबूदार और कीचड़ में लिपटा हुआ सूअर उस लड़की के चारों तरफ चक्कर काटने लगा। उसने उससे अपनी खुशी और प्यार जताने के लिये उसकी पोशाक पर अपने पंजे भी रखे पर जब लड़की ने देखा कि उसने तो उसकी पोशाक ही गन्दी कर दी तो उसने उसको धक्का दे दिया।

इस पर वह सूअर बोला — "तुमने मुझे धक्का क्यों दिया? क्या ये कपड़े तुम्हारे लिये मैंने खुद ने नहीं बनवाये हैं?"

तो वह लड़की बोली — "नहीं। न तो तुमने और न ही तुम्हारे राज्य के किसी और आदमी ने ऐसा किया है।"

और जब रात को सोने का समय आया तो वह लड़की ने सोचा — "मैं इस गन्दे बदबूदार जंगली जानवर से बचने के लिये क्या करूँ। मैं ऐसा करती हूँ कि आज की रात जब वह पहली बार सोने के लिये यहॉ आयेगा तो मैं उसको मार दूँगी।"

सूअर राजकुमार वहीं पास में ही था उसने उसकी यह बात सुन ली पर वह कुछ बोला नहीं। रात को वे दोनों अपने कमरे में चले गये और जा कर अपने बिस्तर पर लेट गये।

अब वह सूअर तो बहुत गन्दा और बदबूदार हो रहा था सो उसकी इस गन्दगी से उसका बिस्तर भी गन्दा हो गया। उसने अपनी पत्नी के कपड़े भी गन्दे कर दिये थे।

बस उस सूअर ने अपनी पत्नी की छाती में अपने तेज़ पंजों से इतना मारा कि वह वहीं मर गयी।

अगली सुबह रानी जब अपनी बहू को देखने के लिये उसके कमरे में गयी तो वह तो यह देख कर बहुत दुखी हो गयी कि उसके बेटे ने तो उसकी बहू को मार डाला है और वह खुद गायब है।

और जब वह शहर से घूम कर वापस घर आया तो रानी ने उससे पूछा कि यह सब क्या हुआ तो उसने बताया कि उसने अपनी पत्नी के साथ वैसा ही किया जैसा कि वह उसके साथ करना चाहती थी।

कुछ दिन बाद फिर उस सूअर ने उसकी छोटी बहिन से शादी करने की इच्छा प्रगट की तो रानी अबकी बार उसकी कोई बात नहीं सुनना चाहती थी पर वह भी उससे शादी के लिये ज़िद करता रहा और साथ में उसने अपनी मॉ को धमकी भी दी कि अगर उसने उसकी शादी उस दूसरी वाली लड़की से नहीं की तो वह उनका सब कुछ नष्ट कर देगा।

मजबूरन रानी फिर से राजा के पास गयी और उसने फिर से उसको अपनी परेशानी बतायी तो राजा बोला इससे पहले कि वह शहर में कुछ इधर उधर की शरारत करे अच्छा है अगर उसको मरवा दिया जाये।

पर रानी उसको अपने बेटे की तरह से प्यार करती थी और उसकी इन हरकतों के बावजूद उसको अपने से अलग नहीं करना चाहती थी।

सो उसने फिर उस स्त्री को उसकी दूसरी बेटी के साथ महल में बुलवाया और उससे बहुत देर तक बात की। उसने उससे प्रार्थना की कि वह अपनी दूसरी बेटी की शादी उसके बेटे से कर दे।

काफी हील हुज्जत के बाद वह लड़की उस सूअर को अपना पति मानने पर राजी हो गयी। पर उसकी किस्मत भी उसकी बड़ी बहिन से कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी क्योंकि दुलहे ने उसको भी उसी रात उसी तरह से मार डाला था जैसे उसने अपनी पहली दुलहिन को मार डाला था और फिर महल से भाग गया था।

जब वह लौट कर घर आया तो फिर से गन्दगी और कीचड़ में लिपटा हुआ था और उसमें से बहुत बदबू आ रही थी। कोई उसके पास तक नहीं जा पा रहा था।

राजा और रानी ने उसको उसके इस तरह के काम के लिये बहुत डॉटा पर उसने उनको फिर यही बताया कि अगर वह उसको नहीं मारता तो वह उसको मार देती।

जैसे पहले हुआ था कुछ दिन बाद सूअर ने अपनी मॉ से तीसरी बार शादी की इच्छा प्रगट की कि अबकी बार वह उस स्त्री की तीसरी और सबसे छोटी बेटी से शादी करना चाहता है।

उसकी यह बेटी उसकी दोनों बड़ी बेटियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

जब सूअर की मॉ ने उससे शादी की बात करने से इनकार कर दिया तो सूअर ने और भी ज़्यादा जिद की कि वह उससे जरूर शादी करेगा। और अगर रानी ने उसकी शादी का इन्तजाम उससे नहीं किया तो वह रानी को भी मार डालेगा।

रानी ने जब उसकी यह बेशर्म और गन्दी धमकी सुनी तो उसका तो दिल ही टूट गया और दिमाग ही खराब हो गया पर वह बेचारी क्या करती।

वह इस बात को ले कर बहुत परेशान थी कि उसका बेटा शादी तो करना चाहता था पर वह उन सबको मार देता था जिनसे वह शादी करता था। इस वजह से वह किस मुँह से उस स्त्री से उसकी तीसरी बेटी के लिये बात करे।

पर फिर रानी को उस स्त्री को उसकी तीसरी बेटी से शादी की बात करने के लिये बुलाना ही पड़ा।

उस स्त्री की इस तीसरी बेटी का नाम था मल्डीना[82]। रानी ने उससे बड़े प्यार से कहा — "बेटी मल्डीना, अगर तुम मेरे बेटे को अपना पति स्वीकार कर लोगी तो मैं बहुत खुश होऊँगी।

[82] Meldina – name of the third and the youngest daughter of the poor woman

तुम उसकी तरफ मत देखो कि तुम एक सूअर से शादी कर रही हो बल्कि हमारी यानी हम राजा और रानी की तरफ देखो कि तुम हमारे बेटे से शादी कर रही हो। फिर अगर तुम थोड़ा धीरज और अक्ल से काम लोगी तो तुम दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत लड़की होगी।"

यह सुन कर मल्डीना ने एक मुस्कुराहट के साथ रानी से कहा कि रानी ने जो कुछ भी उससे कहा वह उस बात को बिल्कुल मानती थी। बड़ी नम्रता से उसने उसको अपनी बहू बनाने के लिये धन्यवाद दिया।

क्योंकि उसको पता था कि दुनियॉ में उसके लिये कहीं कुछ नहीं था इसलिये उसके पास और कोई चारा भी नहीं था। यह तो उसकी खुशकिस्मती थी कि वह इतने अमीर राजा की बहू बन कर इस घर में आ रही थी।

रानी ने जब उसके इतने सुन्दर और मन को अच्छे लगने वाले शब्द सुने तो खुशी के मारे उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। पर वह हमेशा ही उसके लिये डरती रही कि कहीं उस बेचारी का भी वही हाल न हो जो उसकी दोनों बड़ी बहिनों का हुआ था।

दुलहिन को शाही कपड़े और जवाहरात पहना कर सजाया गया और उसको उसके कमरे में ले जाया गया। वह वहॉ अपने पति का इन्तजार कर रही थी कि सूअर राजकुमार वहॉ रोज से भी ज़्यादा गन्दा हो कर आया तो मल्डीना ने अपनी कीमती पोशाक उसके

लेटने के लिये बिछा दी और उसको वहाँ उस पर लेटने के लिये कहा।

रानी ने उससे उसको दूर भगाने के लिये कहा भी पर वह लड़की इस बात के लिये नहीं मानी।

उसने रानी से कहा — "माँ तीन अक्लमन्दी की बातें कही जाती हैं। पहली तो यह कि उस चीज़ को ढूँढने में समय बरबाद करना बेवकूफी है जो मिल नहीं सकती हो।

दूसरी यह कि हमको सुनी सुनायी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये सिवाय उन बातों के जिनमें कुछ सार हो। तीसरी यह है कि जब भी तुम्हारे पास कोई बहुत ही कीमती चीज़ आ जाये तो उसकी इज़्ज़त करो और उसको सँभाल कर रखो।"

जब लड़की यह कह चुकी तो सूअर राजकुमार ने जो अभी पूरी तरह से जाग रहा था और उसने यह सब सुन लिया था उसको उसके चेहरे पर, गरदन पर, कन्धों पर अपनी जीभ से खूब चूमा।

लड़की ने भी उसके इस सहलाने का जवाब दिया। उसने भी उसको प्यार से सहलाया जिससे उस सूअर राजकुमार के मन में भी प्यार जाग गया।

जब रात हुई और सोने का समय आया तो दुलहिन अपने बिस्तर पर गयी और अपने बदसूरत पति का इन्तजार करने लगी।

जैसे ही वह अन्दर आया तो उसने अपनी ओढ़ने वाली चादर उठा कर उसको अपने पास आ कर लेटने के लिये कहा। जब वह

बिस्तर पर आ गया तो उसने उसका सिर तकिये पर रखा और उसको चादर ओढ़ा दी। फिर उसने कमरे के परदे लगा दिये ताकि उसको ठंड न लगे।

सुबह को जब सूअर उठा तो वह हरे घास के मैदानों की तरफ भाग गया जैसे कि वह रोज जाया करता था। उसके जाने के बाद रानी राजकुमारी के कमरे में यह सोच कर आयी कि शायद उस लड़की बेचारी का भी वही हाल हुआ होगा जो उसकी दोनों बड़ी बहिनों का हुआ था।

पर वहॉ आ कर तो उसने देखा कि वह तो कीचड़ में सनी हुई बिस्तर में लेटी हुई थी और वह बहुत ही खुश और सन्तुष्ट दिखायी दे रही थी तो उसने भगवान को उसकी इस कृपा के लिये लाख लाख धन्यवाद दिया कि उसके बेटे को उसकी पसन्द की पत्नी मिल गयी थी और साथ में उसकी यह बहू भी ज़िन्दा थी।

एक दिन राजकुमार सूअर अपनी पत्नी से अच्छी अच्छी बातें कर रहा था कि उसने उससे कहा — "मेरी प्यारी मल्डीना अगर मुझे यह विश्वास हो जाये कि तुम मेरा एक भेद छिपा कर रख सकती हो तो मैं तुमको अपना एक भेद बताना चाहता हूॅ जिसको मैंने बरसों से अपने दिल में छिपा कर रखा हुआ है।

मैंने देखा कि तुम बहुत समझदार और अक्लमन्द हो। तुम मुझे सच्चे दिल से प्यार करती हो इसलिये मेरी यह इच्छा है कि मैं वह भेद तुम्हें बता दूॅ।"

मल्डीना बोली — "तुम अपना वह भेद मुझे बिना किसी हिचक के बता सकते हो और मैं वायदा करती हूँ कि बिना तुम्हारी इजाज़त के मैं उसे किसी को भी नहीं बताऊँगी।"

सो उसके ऊपर विश्वास कर के सूअर ने अपने शरीर को हिला कर उस पर से वह गन्दी बदबूदार सूअर की खाल उतार दी और उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान के रूप में खड़ा हो गया। वह सारी रात उसने अपने उसी रूप में अपनी पत्नी के साथ गुजारी।

पर उसने उस लड़की को फिर से सावधान रहने के लिये कहा कि वह यह भेद जो उसने अभी अभी देखा था वह किसी को न बताये क्योंकि इस बदकिस्मती से बाहर आने का अभी समय नहीं आया था। सो जब सुबह हुई तो उसने अपनी सूअर वाली खाल फिर से पहन ली और बाहर भाग गया।

अब यह तो तुम लोग खुद ही सोच सकते हो कि वह लड़की तो यह सब देख कर कितनी खुश हो गयी होगी कि उसका पति तो एक गन्दे बदबूदार सूअर की बजाय एक सुन्दर राजकुमार निकला।

कुछ दिन बाद उसको बच्चे की आशा हो गयी और समय आने पर उसने एक बहुत ही सुन्दर बेटे को जन्म दिया। वह यह देख कर बहुत खुश हुई कि उसका वह बेटा आदमी की शक्ल में था न कि जानवर की शक्ल में।

आखिर मल्डीना अपने पति के इस भेद का बोझ बहुत दिनों तक नहीं उठा सकी।

एक दिन वह रानी के पास गयी और बोली — "ओ रानी जी जब मैंने पहले पहल आपके बेटे से शादी की थी तो मैंने सोचा था कि मैं एक जंगली जानवर से शादी कर रही हूँ।

पर अब मुझे पता चला कि आपने तो मुझे पति के रूप में दुनियॉ का सबसे सुन्दर, सबसे लायक और सबसे शानदार राजकुमार दिया है।

आपको यह पता होना चाहिये कि जब भी वह मेरे कमरे में आता है और मेरे पास लेटता है वह अपनी गन्दी सूअर की खाल उतार कर जमीन पर फेंक देता है और एक बहुत सुन्दर नौजवान में बदल जाता है। जब तक कोई यह आश्चर्य अपनी ऑखों से न देख ले इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।"

जब रानी ने यह सुना तो उसको लगा कि उसकी बहू शायद उससे मजाक कर रही होगी पर जब मल्डीना ने उससे यह बात कई बार कही और कहा कि वह सच कह रही थी तब रानी ने उससे पूछा कि वह इस बात को कैसे देख सकती थी।

मल्डीना बोली — "आप आज रात को मेरे कमरे में उस समय में आयें जब हम लोग रात को सोने वाले होंगे। मैं अपने कमरे का दरवाजा खुला रखूँगी। जब यह सब आप अपनी ऑखों से देखेंगी तभी आपको पता चलेगा कि मैं सच कह रही हूँ।"

सो उसी रात को जब सब लोग सोने चले गये और जब रानी का अपने बेटे को देखने का समय आया तो रानी ने लैम्प जलाये और राजा को साथ ले कर अपने बेटे के कमरे में पहुँची।

जब उसने कमरे में झाँक कर देखा तो देखा तो देखा कि उसके बेटे की खाल कमरे में नीचे एक कोने में फर्श पर पड़ी है।

वह फिर बिस्तर के पास पहुँची तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत सुन्दर नौजवान उसकी बहू के साथ लेटा हुआ है। जब उन्होंने यह देखा तो वे दोनों ही बहुत खुश हुए।

इससे पहले कि कोई उस कमरे में से बाहर निकलता राजा ने हुक्म दिया कि उसके बेटे की सूअर वाली खाल के टुकड़े टुकड़े कर दिये जायें।

राजा गैलिओटो ने जब अपना इतना सुन्दर बेटा और पोता देखा तो उसने अपनी शाही पोशाक और अपना ताज उतारा और उनको अपने बेटे के देने के लिये आगे बढ़ा और फिर उसने अपने बेटे का राजतिलक कर दिया।

उसके बाद वह सूअर राजा "राजा सूअर" के नाम से मशहूर हुआ।

इस तरह उस नौजवान राजा ने अपनी जनता पर राज करना शुरू किया और अपनी पत्नी मल्डीना के साथ खुशी खुशी बहुत समय तक ज़िन्दा रहा।

जब इसाबैला ने अपनी कहानी खत्म की तो वहाँ बैठे सारे लोग सूअर राजकुमार के बारे में सोच कर ही ठहाका मार कर हँस पड़े – गन्दा कीचड़ में सना हुआ, अपने बराबर में लेटी हुई अपनी पत्नी को चूमता हुआ।

तब मैम बोली — "अच्छा अब बस करो। अब इसाबैला की पहेली की बारी है।"

इसाबैला ने मुस्कुराते हुए अपनी पहेली बोली —

सर मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे दें
जो कभी आपका नहीं था और न कभी होगा चाहे आप कितना भी जियें
चाहे आदमी की आशा से भी ज़्यादा
आप इस खजाने को पाने का सपना भी मत देखना
क्योंकि आपकी उसको पाने की इच्छा बेकार जायेगी
पर अगर आप सोचते हैं कि मैं ऐसे इनाम की हकदार हूँ और आप मुझे प्यार से देखते हैं
तो आप मुझे यह वरदान दीजिये कि मेरी हर इच्छा पूरी हो
क्योंकि आप ही यह वरदान दे सकते अगर चाहें तो

जब इसाबैला ने चतुरायी से गढ़ी हुई अपनी पहेली सबके सामने रखी तो सब सुनने वाले आश्चर्यचकित रह गये कि कोई भी आदमी कोई ऐसी चीज़ किसी को कैसे दे सकता है जो उसके पास कभी थी नहीं और न कभी होगी और न कभी हो सकती है चाहे वह कितने भी दिन ज़िन्दा क्यों न रह ले।

इसाबैला ने जब देखा कि हर आदमी उसकी पहेली को सुलझाने में तो लगा है पर सुलझा नहीं पा रहा तो वह बोली — "इसमें इतने

आश्चर्य की कोई बात नहीं है मेरे अच्छे दोस्तों। क्योंकि यह चीज़ एक आदमी ही एक स्त्री को दे सकता है जो उस स्त्री के पास न कभी था और न कभी होगा – वह है उसका पति।

क्योंकि उस आदमी के पास न तो कभी कोई पति था और न होगा पर उसके लिये यह बहुत आसान है कि वह एक स्त्री को वह दे दे।" सब लोगों ने उसका यह हल तालियों के साथ स्वीकार किया।

इसके बाद लोगों को फिर से शान्त किया गया और फ़िओरडायना जो इसाबैला के पास ही बैठी थी अपनी कहानी सुनाने के लिये तैयार हुई।

वह बोली — "मैम और दूसरे कुलीन लोगों। क्या आप सबको यह नहीं लगता कि मिस्टर मोलीनो इस सभा को अपनी कोई कहानी[83] सुनायें।

और मैं यह बात इसलिये नहीं कह रही हूँ कि मैं अपनी कहानी कहने से बचना चाहती हूँ, क्योंकि मेरे पास तो कहने के लिये एक से ज़्यादा कहानियाँ हैं, बल्कि इसलिये ऐसा कह रही हूँ कि उसकी कही गयी कहानी इस समय इस सभा में बहुत आनन्द देगी।

जैसा कि आप सबको मालूम हे वह बहुत होशियार है हाजिरजवाब है और कुलीन घर में पैदा होने के कारण बहुत ही

[83] Rough translation of the word "Conceit". Conceit, in literature is a metaphor that compares two very unlike things in a very surprising and clever way. John Donne was known for his Conceits.

अद्भुत है। और जहॉ तक हमारा सवाल है बहिनों, हमको हमेशा कहानियॉ कहते रहने की बजाय कभी कभी अपनी सलाइयॉ भी चलानी चाहिये।"

इसाबैला की इस बात से सब राजी हो गये और मिस्टर मोलीनो के स्वागत में ज़ोरदार तालियॉ बजायीं। मैम ने उनकी तरफ देखा और कहा — "आइये मिस्टर ऐन्टोनियो। अब हमारा मन बहलाने की आपकी बारी है।" कह कर उसने उनको सुनाने का इशारा किया।

मोलीनो ने जिसका नाम किसी कहानी सुनाने वालों की लिस्ट में नहीं था पहले तो फ़िओरडायना को उसके तारीफ भरे शब्दों के लिये धन्यवाद दिया फिर मैम की बात रखने के लिये अपनी कहानी शुरू की —

दूसरी रात की पहली कहानी समाप्त

2–2 फ़िलैनियो सिस्टरनो[84]

बलोनी[85] का एक विद्यार्थी फ़िलैनियो सिस्टरनो को कुछ स्त्रियों ने धोखा दे दिया। वह उसका बदला उनको एक दावत दे कर लेता है।

मैंने इस बात पर कभी न तो विश्वास ही किया होता और न मैं कभी ऐसा सोच ही सकता था कि मैम मुझे कहानी सुनाने के लिये कहेंगी। यह देखते हुए कि अब बारी फ़िओरडायना की है पर लोगों की इच्छा को देखते हुए मैं आप सबको कुछ ऐसा सुनाऊँगा जिसमें आप सबको आनन्द आ सके।

पर अगर इत्तफाक से मेरा कुछ कहना आप सबको थकाने वाला लगे या फिर मैं सभ्यता का घेरा लाँघ जाऊँ फिर भी आप उसे सुनते रहियेगा और इसका दोष फ़िओरडायना को दीजियेगा जिसको अब यह कहानी सुनानी थी।

लोम्बार्डी का जो मुख्य शहर है बलोनी जो शिक्षा के लिये मशहूर है और जहाँ वे सब चीज़ें मिलती हैं जो एक बड़े शहर में रहने के लिये जरूरी हैं वहाँ एक बहुत सुन्दर और आकर्षक नौजवान विद्यार्थी रहता था। उसका नाम था फ़िलैनियो सिस्टरनो। उसका जन्म क्रीट[86] टापू में हुआ था।

---

[84] Filenio Sisterno – Second Night : Second Fable. Told by Antonio Molino

[85] Correct pronunciation of “Bologna” is “Baloney” – a city in Italy.

[86] Crete Island – South of Italy mainland – pronounced as “Creet”

अब एक दिन ऐसा हुआ एक दिन कहीं एक दावत हुई जिसमें बलोनी की बहुत सुन्दर और बड़े घरों की स्त्रियों को बुलाया गया था। उसमें कुलीन लोग कुछ विद्यार्थी भी थे जिनमें फ़िलैनियो भी शामिल था।

जैसा कि वहॉ उसको व्यवहार करना चाहिये था उस तरीके से वह कभी एक और कभी किसी दूसरी लड़की के साथ घूम रहा था। उसको किसी के साथ भी बात करने में कोई मुश्किल नहीं हो रही थी सो उसने निश्चय किया कि वह उनमें से एक के साथ नाचेगा।

उसने लैम्बर्टो बैन्टीवोगली की पत्नी ऐमैरिन्टियाना के साथ नाचने का फैसला किया।[87] और वह तो क्या शानदार स्त्री थी। वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही होशियार भी थी। इसने जब उससे नाचने के लिये कहा तो उसने उसे ना नहीं कहा।

जो नाच फ़िलैनियो उसके साथ नाच रहा था उसमें उसके साथ वह उसमें बहुत ही कोमलता से व्यवहार कर रहा था। जब उसे उसका हाथ मरोड़ना होता था तो बहुत ही मुलायमियत से मरोड़ता था।

एक बार उसने उसका हाथ घुमाया और उसके कान में फुसफुसाया — "ओह मैडम। आप कितनी सुन्दर हैं। मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि आपकी जैसी सुन्दरता मैंने पहले कभी नहीं

[87] Emerintiana – name of the wife of Lamberto Bentivogli

देखी। कोई ऐसी स्त्री नहीं है जिसने मेरा दिल अपने जाल में फॉस लिया हो।

अगर आप उसी तरह से मुझे कुछ वापस दे सकें तो मैं दुनियॉ का सबसे खुशकिस्मत आदमी होऊॅगा। पर अगर आपने मेरे साथ निर्दयता का व्यवहार किया तो आप मुझे अपने कदमों में मरा हुआ पायेंगी। और आप ही मेरी मौत के लिये जिम्मेदार होंगी।

यह देख कर कि मैं आपको अपनी कितनी सम्पूर्णता से प्यार करता हूॅ, और इससे ज़्यादा मैं कर नहीं सकता कि आप मुझे अपना नौकर रख लें – मुझे शारीरिक रूप से और जो कुछ थोड़ा बहुत मेरे पास हो वह सब भी। जैसे कि वह सब आप ही का है।

आपकी यह कृपा मेरे ऊपर ऐसे होगी जैसे मैंने स्वर्ग से भी ऊॅची कोई चीज़ पा ली हो। मैं इसमें अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझूॅगा कि मैं एक ऐसे मालकिन के नीचे हूॅ जिसने मुझे अपने प्रेम के जाल में ऐसे फॉस लिया है जैसे कोई शिकारी चिड़िया फॉस लेता है।"

ऐमैरिन्टियाना कुछ देर तक उसकी यह मीठी बातें सुनती रही हालॉकि एक सभ्य स्त्री की तरह से उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। वह शान्त नाचती रही।

जब नाच खत्म हो गया तो ऐमैरिन्टियाना बैठ गयी फिर फ़िलैनियो एक दूसरी स्त्री के साथ नाचने लगा। नाच बस मुश्किल से शुरू ही हुआ होगा कि उसने उससे भी इसी तरीके से कहा।

"मैडम सच तो यह है कि मैं आपको कितना प्यार करता हूँ और जब तक मेरे शरीर में आत्मा है हमेशा करता रहूँगा इस बात को कहने के लिये मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझूँगा अगर आप मेरे दिल की रानी बन जायें और मेरी खास पत्नी।

इसलिये यह देख कर कि मैं आपको कितना प्यार करता हूँ आप मुझे अपने घर में अपना नौकर बना कर ले जायें। अब तो मेरी ज़िन्दगी और मेरा सब कुछ बस आप पर ही निर्भर करता है किसी दूसरे पर नहीं।"

वह नौजवान स्त्री जिसका नाम पैन्थैमिया[88] था हालॉकि सब कुछ समझ तो गयी पर उसने उसका कोई जवाब नहीं दिया। वह भी शालीनता के साथ उसके साथ नाचती रही। और जब नाच खत्म हुआ तो वह मुस्कुराती हुई दूसरी स्त्रियों के साथ जा कर बैठ गयी।

यह नाच खत्म हुए कुछ ही देर हुई थी उस शानदार नौजवान ने एक और स्त्री का हाथ पकड़ा और उसके साथ नाचना शुरू कर दिया। इस बार बलोनी की यह सबसे सुन्दर सबसे शानदार और सबसे आकर्षक स्त्री थी।

जो और दूसरे लोग उसकी तारीफ करते हुए उसके साथ नाचने की इच्छा रखते थे यह नौजवान उन सबको दूर हटाते हुए उसके पास चला गया था।

---

[88] Panthemia

और नाच खत्म होने से पहले ही उसने उस स्त्री से यह कहा — "ओ सबसे सुन्दर सुन्दरी। मैं तुम्हारे प्यार में पड़ गया हूँ और इस वजह से मेरे नाच के कदम भी बहक रहे हैं। यह सब इसलिये हो रहा है कि तुमने मेरे दिल में अपने लिये प्यार जगा दिया है।

पर इस बात के लिये मुझे दोष मत देना। यह सब तुम्हारी सुन्दरता का दोष है जिसने तुमको सबसे ऊँचा उठा दिया है और मुझे तुम्हारा दास बना दिया है।

मैं अभी तुम्हारे इतने अच्छे व्यवहार की भी तारीफ नहीं कर रहा हूँ। और ना ही तुम्हारे इतने अच्छे गुणों की तारीफ कर रहा हूँ जो वाकई बहुत अच्छे हैं और इतने सारे हैं कि वे दुनियाँ को तुम्हारे कदमों पर झुका सकते हैं।

अगर तुम्हारी ये सब बातें सब लोगों को पसन्द आ सकती हैं तो कोई आश्चर्य नहीं कि वे मुझे भी लुभा सकती हैं और तुम्हारी सूरत को मेरे दिल में बसाये रख सकती हैं।

ओ सुन्दरी ओ मेरी ज़िन्दगी के चैन मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरे ऊपर तरस खाओ जो तुम्हारे लिये दिन भर में हजारों बार मर सकता हूँ।"

उस नौजवान के मुँह से इतने मीठे शब्द सुन कर जो उसके दिल की गहराइयों से निकल रहे थे वह सुन्दर स्त्री सिनफोरोशिया[89] एक आह भरे न रह सकी। पर एक शादीशुदा स्त्री होने के नाते वह चुप

[89] Sinforosia

ही रही। जब नाच खत्म हो गया तब वह वापस अपनी सीट पर जा कर बैठ गयी।

अब ऐसा हुआ कि ये तीनों स्त्रियॉ एक गोले में एक दूसरे के पास ही बैठी थीं और एक दूसरे से बात कर रही थीं। जब मिस्टर लैम्बरटो की पत्नी ऐमैरैन्टियाना ने मजाक के मूड में, असल में नहीं, अपनी दोनों साथिनों से कहा — "मैं तुम्हें आज शाम की एक नयी बात बताऊॅ जो मेरे साथ हुई।"

तुरन्त ही दोनों ने पूछा — "क्या हुआ?"

ऐमैरैन्टियाना बोली — "आज की शाम जब मैं नाच रही थी तो मुझे एक नौजवान मिल गया – बहुत सुन्दर पतला दुबला सा और शान वाला। ऐसा नौजवान मैंने पहले कहीं नहीं देखा। वह मेरी सुन्दरता से इतना प्रभावित था कि उसको दिन रात चैन नहीं था।"

और उस नौजवान ने उससे जो कुछ कहा था शब्द ब शब्द उन्हें दोहरा दिया। जैसे ही पैन्थैमिया और सिनफोरोशिया ने यह सुना तो वे दोनों बोलीं — "ठीक यही हमारे साथ भी हुआ।"

जाने से पहले उन तीनों ने पता कर लिया कि उनसे यह सब कहने वाला एक ही आदमी था। साथ में उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि उसकी ये भावनायें उसकी सच्ची भावनायें नहीं थीं बल्कि प्यार का एक बहाना था।

उन्होंने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया उसकी बातें उनको ऐसी ही लगीं जैसे कोई बीमार आदमी करता है या फिर

कहानियों जैसी लगीं। वे वहॉ से तब तक नहीं गयीं जब तक हर एक ने उसके साथ एक चाल खेलने का निश्चय नहीं कर लिया।

उन्होंने सोच लिया था कि वे उसके साथ ऐसी चाल खेलेंगी जिसे वह ज़िन्दगी भर नहीं भूल पायेगा। क्योंकि अगर वह उनके साथ चाल खेल सकता था तो स्त्रियॉ उसके साथ चाल क्यों नहीं खेल सकतीं।

इस बीच फ़िलैनियो कभी एक को अपना प्रेम जताता तो कभी दूसरी को। उनके व्यवहार को देख कर उसे लगा कि वे सब उस पर मेहरबान थीं सो वह अपने काम पर लग गया। वह हर एक से उनका प्यार मॉगता रहा।

पर यह सब उसकी मर्जी से नहीं चल रहा था। वह जो कोई भै योजना बनाता उसकी वही योजना बिखर जाती।

ऐमैरैन्टियाना अब तक के उसकी झूठे प्रेम से तंग आ गयी थी सो उसने अपनी एक सुन्दर नौकरानी को बुलाया और उससे कहा कि वह किसी तरह से फ़िलैनियो से जा कर कहे कि उसकी मालकिन फ़िलैनियो से बहुत प्यार करती है और वह कभी भी उसके साथ रात गुजारने के लिये उसके घर आ सकता है।

जब फ़िलैनियो ने यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने नौकरानी से कहा कि वह उसके घर आज ही आ सकता है अगर उसका पति उस समय घर पर न हो।

जब यह सन्देश ऐमैरैन्टियाना को दिया गया तो वह सीधी कॉटे इकट्ठा करने चली गयी। कॉटे ला कर उसने उन्हें उस बिस्तर के नीचे रख दिया जिस पर वह लेटती थी।

यह सब कर के वह अब नौजवान के आने की तैयारी करने लगी। जब शाम का धुँधलका हो गया तो नौजवान ने अपनी तलवार ली और ऐमैरैन्टियाना के घर चल दिया। दरवाजे पर पहुँच कर उसने अपना एक कोड दिया तो उसके लिये दरवाजा तुरन्त ही खोल दिया गया।

दोनों ने कुछ देर बातें कीं कुछ हल्का खाना खाया और रात गुजारने के लिये सोने के कमरे में चल दिये।

फ़िलैनियो ने मुश्किल से अपने कपड़े उतारे होंगे कि मिस्टर लैम्बरटो की आवाज सुनायी पड़ी। यह बहाना बनाते हुए कि वह स्त्री बहुत होशियार है उसने सोचा कि वह अपने प्रेमी को कहाँ छिपाये सो सोच कर वह बोली कि वह उसके बिस्तर के नीचे छिप जाये।

फ़िलैनियों ने भी देखा कि वह और उसकी प्रेमिका दोनों एक बड़े खतरे में फँस गये हैं सो वह बिना कपड़े पहने हुए ही उस जगह से जल्दी से चल दिया। इस समय उसके शरीर पर केवल एक कमीज़ थी।

सो जैसे ही वह बिस्तर के नीचे घुसा तो उसके सारे शरीर में कॉटे चुभ गये। सिर से ले कर पैर तक उसके शरीर का कोई हिस्सा

ऐसा नहीं बचा था जहॉ उसके कॉटा न लगा हो और वहॉ से उसके खून न बह रहा हो। और जितना वह इस अँधेरी जगह से निकलने की कोशिश करता था उसके उतने ही ज़्यादा घाव लगते थे।

वह तो दर्द के मारे कोई आवाज भी नहीं निकाल सकता था ताकि कहीं मिस्टर लैम्बरटो न सुन लें और उसे मार दें। यह मैं आप सब पर सोचने के लिये छोड़ता हूँ कि उस नीच नौजवान की क्या दशा हो रही होगी।

जब सुबह होने को आयी और मिस्टर लैम्बरटो घर से चले गये तब उस नीच ने अपने कपड़े पहने अैर अपने घर चला गया। रास्ते भर उसके शरीर से खून टपकता रहा और वह डरता रहा कि वह कहीं मर न जाये।

घर पहुँच कर उसने डाक्टर से इलाज करवाया तब जा कर वह ठीक हुआ। अब उसकी पुरानी तन्दुरुस्ती वापस आ गयी थी। बहुत दिन नहीं गुजरे थे कि अब उसे अपनी दूसरी प्रेमिकाओं की याद आयी यानी पैन्थैमिया और सिनफोरोशिया की।

एक दिन उसको पैन्थैमिया मिल गयी। उसने उसके सामने अपने बहुत सारे झूठे दुखड़े गाये और उससे विनती की वह उसके ऊपर दया करे।

पैन्थैमिया बहुत चालाक थी उसे बहुत सारी चालें आती थीं। उसने उससे सहानुभूति का बहाना बनाया पर उससे कहा कि वह उसकी विनती स्वीकार नहीं कर सकती थी। खैर फिर बाद में जिद

करने पर और आहें भरने पर वह मान गयी और उसने उसे अपने घर बुला लिया।

जब वह कपड़े उतार कर सोने के लिये सोने के कमरे में जाने लगा तो उसने उसको बराबर वाली आलमारी में जाने के लिये कहा जहॉ वह अपना सन्तरे का पानी और खुशबुऐं रखती थी। उसने सोचा कि सोने से पहले वह थोड़ी खुशबू का इस्तेमाल कर लेगा और तब सोयेगा।

नौजवान को इस बात में कोई शक नहीं हुआ सो वह आलमारी में घुसा। जैसे ही उसने एक तख्ते पर अपना पैर रखा तो वह तख्ता वहॉ से टूट गया जहॉ से वह आलमारी से जुड़ा था और वह टूट कर नीचे गिर गया। साथ में गिर गया वह नौजवान भी।

नीचे एक गोदाम था जिसमें कुछ सौदागर अपनी कपास और ऊन रखा करते थे सो हालॉकि वह नीचे तो काफी गिरा पर उसको चोट नहीं लगी।

अब वह अॅधेरे में बाहर निकलने के लिये कोई सीढ़ी या दरवाजा ढूॅढने लगा पर उसे दोनों में से कुछ भी नहीं मिला। तब वह उस घड़ी को कोसने लगा जिस घड़ी में वह पैन्थैमिया से मिला था।

आखिरकार सुबह हुई तब वह दुखी नौजवान सोचने लगा कि किस तरह से पैन्थैमिया ने उसे तंग किया है।

इतने में उसको एक तरफ से आती रोशनी की एक किरन दिखायी पड़ी। वह वहॉ गया तो उसने देखा कि वह दीवार बहुत

पुरानी थी उसकी बनावट भी ठीक नहीं थी और उस पर काई भी बहुत जमी हुई थी।

वहॉ जा कर उसने वहॉ से पत्थर हटाने शुरू किये और जल्दी ही एक इतना बड़ा छेद बना लिया जिसमें से वह बाहर निकल सकता। वह छेद में से बाहर निकल गया और छिपते छिपाते अपने घर चला गया। इस समय भी उसके शरीर पर केवल एक कमीज ही थी।

अब आगे सुनो। जब सिनफ़ोरोशिया ने दोनों की चालाकी के बारे में सुना तो उसने उसके साथ एक तीसरी चाल खेलने का इरादा किया जो उनसे कम न हो।

सो अगली बार जब वह नौजवान से मिली तो उसने उसे अपनी ऑख के इशारे से बुलाया और उसको बताया कि वह उससे बहुत प्रेम करती है। फ़िलैनियो अपनी पुरानी बुरी घटनाओं को भूल गया था और अब वह उसके घर के चक्कर काटने लगा।

सिनफ़ोरोशिया ने जब देखा कि फ़िलैनियो तो सचमुच उसके प्यार में पागल है तो उसने एक बुढ़िया के हाथ उसे एक सन्देश भिजवाया कि वह खुद भी उससे बहुत प्यार करती है। उसे दिन हो या रात उसके बिना बिल्कुल चैन नहीं है।

फिर उसने उसमें उससे विनती की कि जब भी उसे समय मिले तो वह उसके घर आ जाये। वे दोनों बात करेंगे तो उसको दूसरों की बजाय उससे ज़्यादा आनन्द मिलेगा।

फ़िलैनियो ने चिट्ठी पढ़ी तो उसे पढ़ कर बहुत खुश हो गया उसका चेहरा चमकने लगा और वह इतना खुश हो गया जितना पहले कभी नहीं हुआ था। पहले जो उसके साथ चालाकियॉ खेली गयी थीं वह उन सबको भूल गया।

उसने अपनी कलम दावात निकाली और उसको यह सन्देश लिखा कि हालॉकि वह उसको प्यार करती है पर वह भी उसको बहुत प्यार करता है। वह जब भी समय बतायेगी वह उसके घर आ जायेगा।

जब सिनफ़ोरोशिया ने यह सन्देश पढ़ा तो वह उसके स्वागत की तैयारी में लग गयी। जब वह उसके घर आया तो कई लम्बी लम्बी आहें भरने के बाद वह उससे बोली — "ओ मेरे फ़िलैनियो। सच तो यह है कि मैंने तुम जैसा शानदार नौजवान कहीं नहीं देखा। केवल तुम्हीं मेरी यह हालत बना सके। तुमने तो मेरे दिल में ऐसी आग लगा रखी है कि मैं सूखी लकड़ी की तरह जली जा रही हूॅ।"

जब नौजवान ने यह सुना तो उसको विश्वास हो गया कि वह वाकई उसके प्रेम में पिघली जा रही है। वह सीधा नौजवान कुछ देर तक उससे मीठी मीठी बातें करता रहा उसके बाद वे सोने चले तो सिनफ़ोरोशिया बोली — "आओ सोने से पहले थोड़ा आनन्द और कर लें।"

कह कर वह उसका हाथ पकड़ कर उसको बराबर वाले कमरे में ले गयी जहॉ एक मेज पर बढ़िया शराब और मिठाई आदि लगी

हुई थी। पर उनमें एक ऐसी दवा पड़ी हुई थी कि उसको खाने के बाद आदमी कुछ घंटों तक होश में नहीं आ सकता था।

फ़िलैनियो को कोई शक नहीं हुआ सो उसने शराब का एक गिलास भरा और एक सॉस में ही पी गया।

फिर फ़िलैनियो सन्तरे के पानी से नहाया ताजादम हुआ कुछ खुशबू लगयी और सोने के कमरे की तरफ चला। बिस्तर पर लेटते ही वह तो ऐसा बेहोश हुआ कि बहुत गहरी नींद सो गया। अब अगर कोई फौज भी उसके कानों पर बाजा बजाती तो भी वह उसको नहीं जगा सकती थी।

सिनफ़ोरोशिया ने जब देखा कि वह गहरी नींद सो गया तो उसने अपनी एक नौकरानी को बुलाया। उसकी वह नौकरानी बहुत ताकतवर थी और हॅसोड़ थी। इसी लिये उसने उसे रखा भी था।

दोनों ने मिल कर उसे उठाया – एक ने उसके हाथ पकड़े दूसरी ने उसके पैर और उसको ले जा कर घर के बाहर कोई दस गज की दूरी पर छोड़ दिया। वह वहॉ अपनी एक ही कमीज में सारी रात पड़ा रहा।

सुबह को जब वह उठा तो वह सोचने लगा कि वह तो रात बिस्तर पर सोया था वह यहॉ कैसे आ गया इस नंगी ठंडी जमीन पर। बहुत देर तक सोचने के बाद उसको लगा कि यह सिनफ़ोरोशिया की चालाकी है।

ठंड से उसका शरीर अकड़ा जा रहा था टॉगें सुन्न हो जा रही थीं। उसको लगा अगर वह वहॉ कुछ देर और पड़ा रहता और जवान नहीं होता तो शायद उसको ज़िन्दगी भर के लिये फालिज मार जाता। धीरे धीरे वह उठा और सॅभल कर अपने घर की तरफ चल दिया। घर पहुॅच कर सबसे पहले वह गर्म हुआ। फिर उसने डाक्टर बुलाया और तब कहीं जा कर वह ठीक हुआ।

फिर वह अपनी पुरानी चालों और दुख दर्दों को भूल गया जैसे कभी उसने उनको सहा ही नहीं था। वह अभी भी उन तीनों स्त्रियों से उसी उत्साह से मिलता रहा जैसे वह अभी भी उनको बहुत प्यार करता था। कभी वह एक के साथ प्यार का नाटक करता तो कभी दूसरी के साथ।

उन स्त्रियों को भी कोई शक नहीं हुआ वे भी हमेशा ही उससे हॅस कर बात करती रहीं और उसके साथ ऐसा व्यवहार करती रहीं जैसे वे अपने सच्चे प्रेमी से करतीं।

फ़िलैनियो का मन कई बार ऐसा किया कि वह उन स्त्रियों का चेहरा काला कर दे पर बहुत सोच विचार कर वह अपना यह लालच रोक गया। एक तो वे स्त्रियॉ थीं दूसरे उनके साथ कोई खराब व्यवहार करने पर उसको खुद को शर्मसार होना पड़ता। इसलिये उसने अपना गुस्सा दबा लिया।

पर दिन रात वह यही सोचता रहता कि वह अपना गुस्सा उनके ऊपर कैसे निकाले। और जब उसको कोई प्लान हाथ नहीं लगता तो वह अपना मन मसोस कर रह जाता।

पर कुछ दिनों में उसने एक तरकीब निकाल ही ली जिससे वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाता। उसकी किस्मत भी उसका साथ दे रही थी।

उसने शहर में एक बहुत सुन्दर घर लिया जिसमें एक बहुत बड़ा शानदार कमरा था। इस घर में उसने एक बहुत बढ़िया दावत का इन्तजाम किया। इसमें उसने अच्छे कुलीन लोगों को बुलाया। इनमें ऐमैरैन्टियाना पैन्थैमिया और सिनफ़रोशिया भी शामिल थीं।

उन्होंने भी उसका बुलावा बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार कर लिया। उन्होंने भी उसकी दावत में आने में कोई शक नहीं किया। जब वे दावत में आयीं तो नौजवान उनको बहुत ही मीठी बातें कह कर अन्दर ले गया और उनसे कुछ खाने के लिये कहा।

जैसे ही तीनों बेवकूफ स्त्रियों ने कमरे के अन्दर कदम रखा वैसे ही फ़िलैनियो ने उस कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और उनकी तरफ बढ़ा और बोला — "आज मेरी बारी है कि मैं अपना बदला तुम लोगों से लूँ। तुम्हारी की गयी बुराइयों के बदले में तुम्हें कुछ दूँ क्योंकि मैं तुम तीनों को बहुत प्यार करता हूँ।"

जब उन्होंने यह सुना तो वे तो ज़िन्दा रहने की बजाय मरी हुई ज़्यादा दिखायी देने लगीं। वे दिल से अपने उन बुरे कामों के लिये पछताने लगीं जो उन्होंने उसके साथ कभी किये थे।

उनको अपनी बेवकूफी को भी कोसा कि जिस आदमी को उनको अपना दुश्मन समझना चाहिये था उन्होंने उसी का विश्वास किया।

तब फ़िलैनियो ने उनको डॉटती हुई और धमकाती हुई आवाज में हुक्म दिया कि वे वहॉ अपने सारे कपड़े उतारें। स्त्रियों ने जैसे ही यह सुना तो वे एक दूसरे की तरफ देखने लगीं और रोने लगीं।

उन्होंने उससे विनती की कि वह उनके साथ ऐसा न करे। कम से कम उनके प्यार की खातिर ऐसा न करे। और नहीं तो अपने अच्छे स्वभाव और उनकी इज़्ज़त की खातिर ऐसा न करे।

फ़िलैनियो उनके साथ बहुत नम्र हो गया पर उसने उनको यह भी कहा कि वह अपने सामने उनको कपड़ों में नहीं देख सकता। यह सुन कर तीनों स्त्रियॉ फ़िलैनियो के पैरों पर गिर पड़ीं और उससे बहुत विनती की कि वह उनके साथ ऐसा बेशर्मी का व्यवहार न करे।

पर उसका दिल तो आज पत्थर का हो गया था। वह चिल्लाया कि वह उनके साथ आज जो कुछ भी वह उनके साथ कर रहा था उसके लिये केवल उसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता था। यह और कुछ नहीं बस बदला था।

सो उन स्त्रियों को अपने अपने कपड़े उतारने ही पड़े। अब वे उसके सामने इतनी ही नंगी खड़ी थीं जितनी कि वे अपने जन्म के समय थीं। वे अभी भी उतनी सुन्दर लग रही थीं जितनी वे कपड़े पहन कर लग रही थीं।

कुछ समय बाद फ़िलैनियो को उन पर दया आ गयी पर अपने ऊपर किये गये अत्याचारों की याद कर के उसने अपनी दया की भावना को दूर भगा दिया और एक बार फिर से अपने दिल को और ज़्यादा कड़ा कर लिया।

जो कपड़े वे अभी अभी पहने थीं उनको उसने पास में रखी आलमारी में रख दिया और तीनों को धमकी दे कर एक ही बिस्तर में लेटने के लिये कहा।

तीनों स्त्रियॉ डर के मारे कॉपती हुई बोलीं — "उफ़ हम लोग भी कितने बेवकूफ हैं। हमारे पति और दोस्त क्या कहेंगे जब उनको यह सब बताया जायेगा कि हम लोग इस शर्मनाक हालत में मरे हुए पाये गये।"

फिलैनियों ने जब देखा कि वे तीनों एक ही बिस्तर में शादीशुदा जोड़ों की तरह से लेट गयीं तो उसने एक बिल्कुल सफेद चादर ली जो बहुत बारीक तो नहीं थी पर बहुत मोटी भी नहीं थी और उससे उनको सिर से पैर तक ढक दिया।

फिर वह कमरे को ताला लगा कर वहॉ से उनके पतियों को ढूँढने के लिये बाहर चला गया। वे बाहर के कमरे में नाच रहे थे।

जब उनका नाच खत्म हो गया तो फिलैनियो उनको उस कमरे में ले कर आया जिसमें उनकी पत्नियॉ एक बिस्तर में नंगी लेटी हुई थीं।

उसने उनसे कहा — "ओ भले आदमियों मैं तुम लोगों को यहॉ कुछ दिखाने लाया हूँ। एक ऐसा सुन्दर दृश्य जैसा कि तुम लोगों ने शायद ही कभी देखा हो।"

वह उनको बिस्तर तक ले आया और एक टार्च अपने हाथ में लिये हुए वह सफेद चादर धीरे धीरे उनके पैरों की तरफ से हटानी शुरू की और वह उसको उनके घुटनों तक हटाता चला गया। तीनों पति उनको बड़े आश्चर्य की निगाह से देख रहे थे।

उसके बाद उसने वह चादर उनके पेट तक हटायी और फिर वह चादर सारी हटा दी।

आप सब खुद ही सोच सकते हैं कि फिलैनियो का यह मजाक देख कर उन तीनों पतियों के ऊपर क्या बीती होगी और पतियों कै ऊपर ही क्यों उन तीनों स्त्रियों के ऊपर भी क्या बीत रही होगी उनकी कितनी बेइज़्ज़ती हो रही होगी जब उनके लगा कि उनके पति उनको इस हालत में देख रहे हैं।

वे बिल्कुल चुपचाप पड़ी थीं। उनकी तो खॉसने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि कहीं ऐसा न हो कि वे पहचानी जायें। जबकि उनके पति फ़िलैनियो से उनका चेहरा दिखाने के लिये कहते रहे। पर वह दूसरों की गलती से ज़्यादा अक्लमन्द था बजाय अपनी के सो उसने उनका चेहरा नहीं खोला।

पर वह इससे भी सन्तुष्ट नहीं था सो वह उनके कपड़े लाया और उन्हें उनके पतियों को दिखाये। जब उन्होंने उनको देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गये साथ में दिल ही दिल में परेशान भी बहुत हुए।

उनमें से एक दूसरे से कहने लगा — "क्या यह वही पोशाक नहीं जो एक बार मैंने अपनी पत्नी के लिये बनवायी थी।" "क्या यह वही स्कार्फ नहीं जो वह अक्सर अपने गले में पहनती है।" या "क्या ये वही अँगूठियाँ नहीं हैं जो वह अपनी उँगलियों में पहने रहती है।"

आखिर फ़िलैनियो उन तीनों पतियों को कमरे से बाहर ले आया और उनसे कहा कि वे वहाँ से जायें नहीं शाम के खाने तक रुके रहें। फिलैनियो ने देखा कि शाम का खाना तैयार है और खानसमाओं ने सब सामान लगा दिया है उसने सबसे अपने अपने लिये अपनी अपनी प्लेटें लेने के लिये कहा।

लोगों ने प्लेटें उठायीं उनमें खाना लिया और खाने लगे तो फिलैनियो उस कमरे की तरफ आया जिसमें वे तीनों स्त्रियाँ थीं। वहा आ कर बोला — "गुड ईवनिंग लेडीज़। क्या तुम लोगों ने सुना कि तुम्हारे पति क्या कह रहे थे। वे सब अब बेताबी से तुम लोगों का इन्तजार कर रहे हैं।

अब तुम लोग उठ जाओ क्योंकि अब तक तो तुम लोग काफी सो ली होंगी। जँभाई लेना और आँखें मलना छोड़ो। अपने कपड़े

उठाओ पहनो तैयार हो और बाहर आ जाओ। वहाँ दूसरे मेहमान भी तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।"

ऐसे ऐसे शब्द कह कर उसने उनकी खिल्ली उड़ायी और वे यह सोचती रहीं कि हमारी यह घटना कहीं हमारी जानलेवा न बन जाये बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ीं।

आखिर गुस्से में भर कर उनको लगा कि अब उसके हाथों मौत के सिवा और कोई रास्ता नहीं है वे उठीं और फ़िलैनियो से बोलीं — "फ़िलैनियो तुमने हमसे जरूरत से ज़्यादा बदला ले लिया है अब कुछ बाकी नहीं बचा सिवाय इसके कि तुम अपनी तलवार निकाल ले और हमारी ज़िन्दगी का अन्त कर दो। हमको अब मौत के सिवा और कुछ नहीं चाहिये।

और अगर तुम हमारी यह इच्छा पूरी नहीं करना चाहते तो कम से कम हमें चोरी छिपे घर जाने दो ताकि हमारी इज़्ज़त बनी रहे।"

फ़िलैनियो ने यह देख कर कि अब वह इस मामले को काफी आगे खींच चुका है उनके कपड़े उनको वापस कर दिये और उनसे उनको तुरन्त ही पहन लेने के लिये कहा।

जब उन्होंने कपड़े पहन लिये तो उसने उनको घर का एक छिपा हुआ रास्ता दिखा दिया वे तुरन्त ही उस रास्ते से अपने घर वापस चली गयीं। घर पहुँच कर उन्होंने अपने कपड़े तो उतार कर एक तरफ रख दिये और बजाय सोने जाने के कुछ काम करने बैठ गयीं।

जब दावत ख़त्म हो गयी तो तीनों पतियों ने फ़िलैनियो को दावत के लिये धन्यवाद दिया और साथ में उन सुन्दरियों को दिखाने के लिये भी जो सूरज को भी मात कर रही थीं। इसके बाद उन्होंने उससे विदा ली और अपने अपने घर चले गये।

घर जा कर देखा तो उनकी पत्नियॉ अंगीठी के पास बैठी बैठी कुछ सिल रही थीं। उनके कपड़े अॅगूठी और गहने देख कर उनके मन में कुछ शक हुआ सो हर एक ने अपनी पत्नी से पूछा कि वे उस शाम कहॉ थीं और उनके अच्छे कपड़े कहॉ हैं।

सबने अपने अपने पतियों को एक ही जवाब दिया कि वे तो घर से बाहर गयी ही नहीं। और उस कमरे की चाभी ले कर जहॉ उसने अपने अच्छे वाले कपड़े और गहने आदि रखे थे अपने पति को वहॉ उस कमरे में ले गयी और अपनी सब चीज़ें दिखायीं।

जब पतियों ने वह सब देखा तो चुप रह गये। वे नहीं जानते थे कि वे अब क्या कहें। फिर कुछ देर बाद उन्होंने अपनी अपनी पत्नियों को वह सब वैसा का वैसा बताया जो उन्होंने उस शाम को फ़िलैनियो के घर में देखा था।

तीनों ने यह बहाना किया कि वे उस बारे में कुछ नहीं जानती थीं। और फिर उस बात का मजाक बना कर उन्होंने अपने कपड़े बदले और सोने चली गयीं।

उसके बाद फ़िलैनियो उन सबसे सड़कों पर मिलता रहा। मिलने पर वह हमेशा उनसे पूछता — "तुममें से सबसे ज़्यादा डरा हुआ

कौन था? क्या मैं तुम्हारे मजाकों से ज़्यादा डरा हुआ था या तुम लोग मेरे मजाक से?"

पर हमेशा उनकी ऑखें नीची ही रहीं और उन्होंने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया।

और इस तरह से फ़िलैनियो ने उनसे बिना किसी हिंसा के और गुस्से के उनकी चालों का बदला लिया।"

जब सबने मिस्टर मोलीनो की कहानी सुन ली तो मैम और दूसरी स्त्रियों ने कहा कि फ़िलैनियो ने जो उसके साथ बुराई की गयी थी उसका बदला उसकी कायरता दिखाता था।

पर जब यह बात आयी कि उसको किस तरह से कॉटों के बिस्तर पर सुलाया गया और किस तरह से उसको गोदाम में गिरा कर उसकी हड्डियॉ तोड़ने की कोशिश की गयी और किस तरह से उसे बाहर ठंड में एक कमीज पहने नंगी और ठंडी जमीन पर छोड़ कर मारने की कोशिश की गयी तो उनको लगा कि उसका यह बदला ठीक ही था।

मैम ने हालॉकि फ़िओरडाना को अपनी बारी की कहानी सुनाने से मना कर दिया पर उसने कहा कि कम से कम वह अपने हिस्से की पहेली तो पूछ ही सकती थी जिसका कुछ सम्बन्ध इस फ़िलैनियो की कहानी से हो।

उसने उसका हुक्म मानते हुए कहा — "मैम। जो पहेली मैं अब सुनाने जा रही हूॅ उसका कोई सम्बन्ध इस तरह के बदले से नहीं है

जैसा कि मिस्टर ऐन्टोनियो ने अपनी कहानी में रखा है। पर हॉ यह दूसरे नौजवानों को जरूर अच्छी लगेगी।"

और फिर तुरन्त ही अपनी पहेली पढ़ी —

दो मरे हुए टुकड़ों से एक ज़िन्दा आदमी ने एक को ज़िन्दगी दी जिसकी आत्मा दौड़ी
दूसरे बदकिस्मत को ज़िन्दा करने के लिये इससे वह अँधेरे से रोशनी में आ गया
अब दो ज़िन्दा आदमी एक साथ थे वे अपने बनाने वाले के पास खड़े थे
अब उस ज़िन्दा आदमी मैं इतनी चमक थी कि वह मरे हुए आदमी से बात कर रहा था

अब फ़ियोरडायना की यह छोटी सी पहेली लोगों ने कई तरीके से सुलझाने से कोशिश की पर किसी को भी उसे असली मतलब का पता न चल सका। यह देख कर कि फ़ियोरडायना बराबर अपना सिर ना में हिलाती रही तो बैम्बो[90] मुस्कुराती हुई बोली — "फ़ियोरडायना ऐसा लगता है कि इस तरह से समय बरबाद करना बेवकूफी है। तुम बताओ कि इस पहेली का हल क्या है हम लोग उसी को मान लेंगे।"

फ़ियोरडायना बोली — "अगर सबकी यही इच्छा है कि मैं खुद ही इस पहेली को सुलझाऊँ तो मैं खुशी से यह काम करूँगी। इसलिये नहीं कि मैं अपने आपको इस काम के लिये कोई बहुत होशियार समझती हूँ बल्कि इसलिये कि मैं तुम सबकी सहायता करना चाहती हूँ क्योंकि तुम सबने मेरे ऊपर बहुत उपकार किये हैं।

[90] Bembo – one of the audience

मेरी पहेली बताती है कि जो विद्यार्थी सुबह सवेरे उठता है और वह दो मरी हुई चीज़ों को ले कर यानी चकमक पत्थर और लोहे को ले कर तीसरी मरी हुई चीज़ यानी लकड़ी में आग लगाता है जो एक चौथी मरी हुई चीज़ मोमबत्ती को जलाती है।

इस तरह पहली ज़िन्दा चीज़ यानी विद्यार्थी दो दूसरी ज़िन्दा चीज़ों से जो ज़िन्दा होने से मरी हुई थीं उनके ज़िन्दा होने पर मरे हुओं से बात करने के लिये बैठता है। यानी अपनी पुस्तकें पढ़ता है जो बहुत साल पहले लिखी गयी थीं और अब उनके लेखक मर चुके हैं।"

फ़ियोरडायना की पहेली का यह हल सबको बहुत पसन्द आया और फिर मैम ने लियोनोरा को आगे की कहानी सुनाने के लिये कहा।

दूसरी रात की दूसरी कहानी समाप्त

2–3 कार्लो डा रिमीनी[91]

कार्लो डा रिमीनी थियोडोसिया के बेकार में ही पीछे पड़ता है क्योंकि उसने तो यह तय किया हुआ है कि वह कुँआरी ही रहेगी। उसको गले से लगाने की इच्छा में वह कई बार जोखिम लेता है और फिर अपने ही नौकरों द्वारा पीटा जाता है।

लियोनोरा[92] ने अपनी कहानी शुरू की — "प्यारी बहिनों। मिस्टर मोलिनो की कही गयी चतुरायी की कहानी अभी आप लोगों ने सुनी तो मुझे लगा कि जो कहानी मेरे दिमाग में आप लोगों को सुनाने के लिये थी मैं उसे छोड़ कर अब कोई और कहानी आप सबको सुनाऊँ।

मुझे आशा है कि यह कहानी भी आप लोगों को वैसे ही पसन्द आयेगी जैसे मिस्टर मोलीनो की कहानी आदमियों को पसन्द आयी थी। मेरी कहानी उससे थोड़ी छोटी है और उससे ज़्यादा सभ्य है।

कार्लो डा रिमीनी एक लड़ने वाला था। यही उसका धन्धा था। वह भगवान से नफरत करता था वह संतों की मजाक बनाता था निर्दयी था और लोगों का गला काटने वाला था। उसने सब तरह के आराम छोड़ रखे थे।

वह इतना बुरा था। उसका स्वभाव भी बहुत खराब था। उसकी सानी का और कोई नहीं था।

---

[91] Carlo da Rimini – Third Night : Third Fable. Tola by Lionora

[92] Lionora – the story-teller

यह उन दिनों की बात है जब वह सुन्दर जवान और एक आकर्षक आदमी हुआ करता था तो उसको एक बहुत सुन्दर लड़की से प्यार हो गया। वह लड़की एक गरीब विधवा की बेटी थी।

हालॉकि वह विधवा गरीब जरूर थी और बस दिन में एक बार अपने और अपनी बेटी के लिये खाना मिल जाने की इच्छा रखती थी पर वह भी उसको मुश्किल से मिल पाता था। वह अपनी बेटी के पाप की कमाई पर जीने की बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करती थी।

उस लड़की का नाम थियोडोसिया[93] था। वह बहुत सुन्दर थी और उसकी चाल ढाल बहुत अच्छी थी। वह ईमानदार थी और उसका व्यवहार बहुत शालीन था। इसके अलावा वह बहुत मेहनती थी सीधी सादी थी और धार्मिक ज़िन्दगी जीना पसन्द करती थी।

वह रोज प्रार्थना करती और उसके पास दुनियावी चीज़ें भी बस बहुत थोड़ी सी ही थीं।

अब कार्लो क्योंकि उससे बहुत प्यार करता था तो वह उसको अक्सर छेड़ता रहता। किसी दिन जब उसको उसे देखने का मौका नहीं मिलता तो वह गुस्से से भिन्ना जाता।

वह उसकी बहुत बड़ाई करता उसको भेंटें देता उससे कई बार अपने दिल की बात कहता पर उसकी ये सब कोशिशें बेकार ही जातीं।

---

[93] Theodosia – name of the widow's daughter

क्योंकि एक अक्लमन्द और अच्छी लड़की होने के नाते वह उसकी कोई भेंट स्वीकार नहीं करती। वह रोज भगवान की प्रार्थना करती कि वह इस तरह की इच्छाओं से उसका दिल फेर ले।

आखिर एक समय आया जब कार्लो अपने प्रेम के सागर को रोक नहीं सका और जिसको वह अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा प्यार करता था उसने उसको उठाने की और फिर उससे अपनी इच्छा पूरी करने की सोची। इसका फल चाहे कुछ भी निकले।

पर फिर भी समाज में अपनी हॅसी उड़ने से डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि जो लोग उससे नफरत करते थे वे उसको आ कर मार दें।

पर फिर आखिर उसने उसके प्यार में पागल कुत्ते की तरह से दो बदमाशों के साथ मिल कर यह प्लान बनाया कि वे उसे उठा लेंगे और फिर कहीं दूर ले जायेंगे।

एक दिन जब शाम हो गयी तो उसने अपने हथियार अपने साथ लिये और उन दोनों बदमाशों को ले कर उस लड़की के घर गया। लड़की के घर का दरवाजा खुला था पर फिर भी उसने अपने आदमियों को घर में घुसने से पहले ही सावधान कर दिया था क्योंकि उनको अपनी ज़िन्दगी की भी चिन्ता थी।

उसने उनसे कहा कि जब तक वह उनसे आ कर न मिले न तो घर में कोई घुसे और न घर से बाहर कोई निकले। दोनों बदमाश अपने मालिक का हुक्म ठीक से मानने के लिये बिल्कुल तैयार थे।

वे बोले कि वह जो कुछ भी कहेगा उसको माना जायेगा।

पर थियोडोसिया को कार्लो की इस करनी की भनक पड़ गयी थी सो उसने अपने आपको अपने छोटे से रसोई घर में छिपा लिया था। और जब कार्लो उसके छोटे से घर की सीढ़ियों पर चढ़ा तो वहॉ उसे उसकी बूढ़ी मॉ मिली।

मॉ को ऐसी किसी बात का कोई अन्दाजा नहीं था तो वह तो चक्कर ही खा गयी। कार्लो ने उससे पूछा कि उसकी बेटी कहॉ है जिसको वह इतना प्यार करता है।

बेचारी बुढ़िया ने जब यह देखा कि वह बदमाश तो पूरी तरह से हथियारों से लैस है और वह उसका बजाय अच्छा करने के कुछ बुरा करने की ताक में है तो वह तो बहुत परेशान हो गयी। उसका चेहरा तो लाश की तरह से सफ़ेद पड़ गया।

वह बहुत ज़ोर से चिल्लाने वाली ही थी कि उसको लगा कि उसका चिल्लाना तो कुछ काम नहीं करेगा तो उसने शान्त रहने का निश्चय किया। उसने अपनी इज़्ज़त भगवान के हाथ में रख दी जैसा कि उसको उसमें पूरा विश्वास था।

हिम्मत कर के उसने कार्लो से कहा — "कार्लो मुझे नहीं मालूम कि कौन सा मजाक या कौन सा बुरा ख्याल तुमको इस लड़की की आत्मा को घायल करने के लिये यहॉ ले आया है जो एक ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताना चाहती है।

अगर तुम किसी ठीक और अच्छे इरादे से यहॉ आये हो तो भगवान तुम्हारी हर इच्छा पूरी करें पर अगर ऐसा नहीं है तो भगवान न करे तुम्हारी वह इच्छा कभी पूरी न हो और तुम जुर्म में फॅसो।

इसलिये यहॉ से चले जाओ और अपनी बेलगाम भावनाओं को भी साथ ले जाओ फिर कभी मेरी बेटी को उठाने की कोशिश न करना। कभी उससे वह चीज़ लेने की कोशिश न करना जिसे तुम वापस नहीं दे सकते – उसके शरीर की पवित्रता।

तुम जितना उसके पीछे भागोगे वह तुमसे उतनी ही नफरत करेगी। क्योंकि उसका मन तो सारी उम्र कुॅआरी रहने में है।"

कार्लो ने जब गरीब बूढ़ी मॉ के ये दर्द भरे शब्द सुने तो बजाय इसके कि वह उसके ऊपर दया करता या अपने बुरे इरादे से टलता वह तो एक पागल की तरह से गुस्सा हो गया और घर के हर कोने में थियोडोसिया को ढूॅढने में लग गया।

पर वह उसे कहीं मिली नहीं। उसे ढूॅढते ढूॅढते वह रसोईघर की तरफ आया तो देखा कि उसका दरवाजा तो कस कर बन्द है पर दरवाजे में एक झिरी है सो उसने उसमें से झॉक कर देखा तो उसमें उसे थियोडोसिया दिखायी दे गयी। वह वहॉ बैठी बैठी प्रार्थना कर रही थी।

उसने बड़े मीठे शब्दों में उससे कहा कि वह उसके लिये दरवाजा खोल दे। उसने कहा — "मेरी प्यारी थियोडोसिया। मेरी

ज़िन्दगी की ज़िन्दगी। तुम मेरा विश्वास करो कि मैं यहाँ तुम्हारी इज़्ज़त खराब करने नहीं आया हूँ जो मुझे अपने और अपनी इज़्ज़त से भी ज़्यादा प्रिय है।

मैं तो तुम्हें अपनी पत्नी बनाने आया हूँ वह भी जब जबकि मेरा यह प्रस्ताव तुम्हें और तुम्हारी माँ को स्वीकार हो। इसके अलावा मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि जो कोई तुम्हारी इज़्ज़त पर हाथ डालेगा मैं उसकी ज़िन्दगी ले लूँगा।"

थियोडोसिया ने उसकी यह बात ध्यान से सुनी और उसको सीधा जवाब दिया — "कार्लो मैं तुम्से विनती करती हूँ कि तुम अपनी यह इच्छा पूरी करने की जिद छोड़ दो। मैं तुमसे कभी शादी नहीं कर सकती क्योंकि मैंने कुँआरी रह कर उसकी सेवा करने की कसम खायी है जो हम सबकी देखभाल करता है।

और अगर मेरी निर्दयी किस्मत से तुम जबरदस्ती मेरा शरीर ले भी लोगे तो तुम मेरी आत्मा को अपवित्र नहीं कर पाओगे जो मैंने अपने जन्म से ही उसको सौंप रखी है।

भगवान ने तुम्हें आजादी दे रखी है सोचने समझने की ताकत दे रखी है ताकि तुम यह समझ सको कि अच्छा क्या है बुरा क्या है और फिर वही करो जो तुम्हारे लिये सबसे अच्छा हो। इसलिये भलाई करो बुराई से हटो ताकि लोग तुम्हारी तारीफ कर सकें।"

कार्लो ने जब देखा कि उसकी चापलूसी कोई काम नहीं कर रही है और लड़की ने वह कहने से मना कर दिया है जो वह उससे

कहलवाना चाह रहा था। उसके दिल में जो आग जल रही थी उस पर काबू नहीं पा सका वह और पागल हो गया। उसे अब शब्दों पर भरोसा नहीं रहा सो वह ज़ोर जबरदस्ती पर उतर आया।

उसने दरवाजा को एक धक्का मारा दरवाजा कमजोर था सो जल्दी ही टूट गया।

जब कार्लो उस छोटे से रसोईघर में घुसा तो उसकी निगाह उस सुन्दर लड़की पर पड़ी जिससे उसकी वासना उसके लिये और बढ़ गयी और वह उसके पीछे से उसके ऊपर कूद गया जैसे कि वह कोई ग्रेहाउन्ड कुत्ता हो और अपने शिकार पर कूदा हो।

अभागी थियोडोसिया के सुनहरी बाल उसके कन्धों पर खुल कर बिखर गये। कार्लो ने उसके उन बालों को पकड़ कर उसके गले के चारों तरफ बॉध दिया तो वह पीली पड़ गयी। उसको लगा कि बस अब मौत उसके सामने ही खड़ी है सो डर के मारे वह कुछ बोल भी नहीं सकी।

तब उसने भगवान की प्रार्थना की और उससे सहायता मॉगी। उसने जैसे ही अपनी प्रार्थना पूरी की कि बस एक चमत्कार हुआ।

कार्लो को उसका शरीर उसके हाथ में से पिघलता सा लगा। और उसी समय भगवान ने उसकी ऑखें चकाचौंध कर दीं कि उसकी कुछ समझ में ही नहीं आया कि उसके आसपास क्या हो रहा था।

उसको ऐसा लग रहा था कि उसने लड़की का शरीर अपनी बॉहों में पकड़ रखा था और वह उसे चूमे जा रहा था पर उसकी बॉहों में तो केवल बर्तन और रसोईघर की दूसरी चीज़ें थीं जो वहॉ पड़ी हुई थीं।

हालॉकि उसकी इच्छा कुछ मात्रा में सन्तुष्ट हो गयी थी पर उसकी इच्छा फिर से जाग गयी तो उसने एक बड़ी सी केटली को बॉहों में ले लिया और यही सोचता रहा कि उसने थियोडोसिया को अपनी बॉहों में ले रखा है। इससे उसके चेहरे पर बॉहों पर इतनी कालिख लग गयी कि वह अब कार्लो द रिमीनी कम और शैतान ज़्यादा लग रहा था।

इसके बाद उसको लगा कि अब उसकी इच्छा कुछ सन्तुष्ट हो गयी है और उसे अब यह भी लगा कि अब उसे जाना चाहिये वह जैसा काला था उसी शक्ल में सीढ़ियों से उतरता हुआ उस मकान के बाहर चला गया।

पर जो दो बदमाश वह घर के बाहर पहरा देने के लिये छोड़ कर आया था और कह कर आया था कि वे इस बात का ख्याल रखें कि इस घर से न कोई बाहर जाये न कोई उसके अन्दर आये तो जब उन्होंने देखा कि एक काला भूत उस घर से बाहर निकल कर भागा जा रहा है तो वह अपने मालिक को नहीं पहचान सके।

वह उनको आदमी कम और जंगली जानवर ज़्यादा लगा या फिर कि यह शायद कोई भूत है सो वे उससे बचने के लिये वहॉ से

उलटे पैरों दौड़ पड़े। पर एक बार हिम्मत कर के वे फिर खड़े हो गये और उसके चेहरे को ध्यान से देखा तो उनको लगा कि यह चेहरा तो बहुत बिगड़ गया है और बदसूरत भी है पर उसके बाद भी वे उसको नहीं पहचान सके।

उन्होंने उसके चहरे और कन्धों पर डंडों और घूँसों से मारना शुरू कर दिया जो किसी लोहे से कम नहीं थे। उसके सिर पर एक बाल भी नहीं बचा।

जब वे इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुए तो उन्होंने उसको जमीन पर पटक दिया। उसके कपड़े उतार दिये और उसको इतनी ठोकर मारीं जितनी वह सह सका। यह मार उसको इतनी ज़्यादा पड़ी और इतनी जल्दी पड़ी कि कार्लो को मुँह खोल कर कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला कि वे लोग उसको इतनी बेदर्दी से क्यों मार रहे थे।

फिर भी उसने उनके चंगुल से निकलने की कोशिश की और जब वह वहाँ से भागा तभी भी उसको यह लगता रहा कि वे दोनों बदमाश उसके पीछे पीछे आ रहे थे।

इस तरह जब कार्लो के नौकरों ने उसकी खूब अच्छी तरह पिटायी कर दी तो उसकी आँखें इतनी खराब और सूजी हुई हो गयीं कि वह बड़ी मुश्किल से देख पा रहा था।

वह भागा भागा बाजार की तरफ गया ताकि वह अपनी इस पिटायी का कुछ इलाज करा सके जो उसके अपने ही नौकरों ने की थी।

शहर के चौकीदार ने जब उसकी चिल्लाहट और रोना सुना तो वह उसके पास गया तो उसने उसकी बदशक्ल देखी चेहरा धूल से भरा देखा तो उसने उसको कोई पागल समझा। और क्योंकि किसी ने उसे पहचाना नहीं तो वहॉ इकट्ठा हुई भीड़ ने उसका मजाक बनाना शुरू कर दिया।

"यह पागल है। यह पागल है।" कहते हुए किसी ने उसे पत्थर मारे तो किसी ने उसके ऊपर थूका किसी ने नीचे से मिट्टी उठा कर उसकी ऑखों में डाल दी। वे लोग काफी देर तक उसके साथ ऐसा ही बुरा व्यवहार करते रहे।

काफी देर बाद यह शोर पादरी के कानों में पड़ा जो सवेरे उठ कर अपनी उस खिड़की से बाहर झॉक रहा था जो बाजार की तरफ खुलती थी। उसने पूछा कि यह सब क्या हो रहा था और वे सब इतना शोर क्यों मचा रहे थे।

एक पहरेदार ने जवाब दिया कि वहॉ एक पागल आ गया था जो सारे बाजार में उथल पुथल मचा रहा था। पादरी बोला कि उसको कस कर बॅध कर उसके सामने लाया जाये। उसकी आज्ञा का तुरन्त ही पालन किया गया।

कार्लो ने जो अब तक सबके लिये एक डर बन चुका था जब अपने आपको बॅधा हुआ और अपमानित पाया और वह भी बिना किसी वजह के तो वह बहुत गुस्सा हुआ और रस्सियॉ तोड़ कर भाग निकला।

पर लोगों ने उसे पकड़ लिया और उसे पादरी के पास ले गये। जैसे ही पादरी ने उसे देखा तो वह उसे तुरन्त ही पहचान गया कि वह तो कार्लो द रिमीनी था।

उसने यह भी सोच लिया कि उसकी यह खराब हालत जरूर ही थियोडोसिया की वजह से ही हुई है। क्योंकि वह यह बात जानता था कि वह थियोडोसिया को बहुत प्यार करता था।

सो उसने उससे बहुत ही नम्र भाषा में बात करना शुरू किया ताकि उसे थोड़ी तसल्ली मिले। उसने उससे यह भी कहा कि जिस जिसने भी उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया वह उन सबको देखेगा।

अब कार्लो को तो यह पता ही नहीं था कि उसका चेहरा काली कीचड़ से ढका हुआ है सो वह पादरी के इस कहने का मतलब समझने की कोशिश करने लगा।

पर आखीर में जब उसको यह पता चला कि उसकी शक्ल का क्या हुआ है वह तो आदमी की जगह एक जंगली जानवर ज़्यादा लग रहा था तो उसने भी पादरी की तरह से अपनी इस हालत का जिम्मेदार थियोडोसिया को ही ठहराया।

और गुस्से में भर कर उसने कसम खायी कि जब तक पादरी थियोडोसिया को सजा नहीं दे लेगा तो वह खुद ही उससे इस बात का बदला लेगा।

सो जब सुबह हो गयी तो पादरी ने थियोडोसिया को अपने पास बुलवाया। उसने सोचा कि यह काम उसने अपने किसी जादू से किया होगा। लेकिन जब उसने ठीक से सुना कि वह किस परेशानी में थी और किस ख़तरे में थी तो वह होली लाइफ़ की नन के कौनवैन्ट[94] चली गयी और वहाँ जा कर रहने लगी। वहाँ वह आराम से भगवान की सेवा में लगी रही।

पर इसके बाद क्या हुआ कि कार्लो को एक ऐसी जगह भेज दिया जहाँ उसको अपनी ताकत से ज़्यादा काम करना था सो उसको लगा कि जैसे कोई चूहा जाल में फँस गया हो।

जैसे ही वह पोप का झंडा लहराने के लिये किले की दीवार पर चढ़ा कि उसके एक पत्थर लग गया जिसने उसको कुचल कर रख दिया। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि उसको भगवान के साथ मेलजोल करने का मौका ही नहीं मिला।

इस तरह से कार्लो का इतना बुरा अन्त हुआ। जिसको वह इतना चाहता था उसके प्रेम का फल लिये बिना ही वह चला गया।"

लायोनोरा के अपनी कहानी ख़त्म करने से पहले ही वहाँ बैठे सब लोग कार्लो की बेवकूफी पर हँसने लगे कि वह किस तरह से यह सोचते हुए बर्तनों को अपने गले से लगा रहा था और उन्हें चूम रहा था जैसे कि वह यह सब अपनी प्रेमिका के साथ कर रहा हो।

---

[94] Convent of Nuns of Holy Life

उनको यह बात सुन कर भी हॅसी आ रही थी कि वह इतना बदसूरत हो कर अपने ही आदमियों के हाथों पीटा गया।

सब लोग जब जी भर कर हॅस चुके तो लायोनोरा ने तुरन्त ही अपनी पहेली पेश की —

मैं सुन्दर हूॅ साफ हूॅ और चमकीली हूॅ
जब मैं सबसे सुन्दर होती हूॅ तब मैं बर्फ की तरह सफेद होती हूॅ
दूसरी लड़कियॉ मुझसे जलती हैं फिर भी वे मेरे बिना नहीं रह सकतीं
क्योंकि मैं जवान और बूढ़ों दोनों की सेवा करती हूॅ उनकी खाल को ठंड से बचाती हूॅ
एक ताकतवर मॉ ने मुझे पैदा किया वह सब मॉओं की मॉ है
अब मेरी सेवा का काम खत्म हुआ मैं फट गयी हूॅ और आखीर में मुझे पीटा गया है

होशियारी से शब्दों में गढ़ी हुई इस पहेली को सबने बहुत पसन्द किया पर इसे वहॉ कोई हल नहीं कर सका सो लोगों ने लायोनोरा से कहा कि वही इसका मतलब समझाये।

तब वह मुस्कुरा कर बोली — "यहॉ मौजूद भाइयो और बहिनों आप सब लोग तो मुझसे कहीं ज़्यादा होशियार हैं सो यह बड़ी अजीब सी बात है कि मैं आप सबको इसका मतलब समझाऊॅ।

खैर क्योंकि आप सबकी यही इच्छा है और आपकी इच्छा मानना मेरे लिये कानून मानने की तरह है मैं आप सबको बताती हूॅ कि मेरी पहेली का क्या मतलब है।

इसका मतलब और कुछ नहीं है बस चादर है सफेद मुलायम जिसे स्त्रियॉ कैंची से काटती हैं सुइयों से छेदती हैं और फिर पीटती हैं। यह हमारे ओढ़ने का काम भी करती हैं।

और यह हम सबकी मॉ से यानी धरती से आती है। इसके अलावा जब यह पुरानी हो जाती है और जब हम इसको और ज़्यादा इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं तब इसको छोटे छोटे तुकड़ों में काट कर इसका कागज बना लिया जाता है।"

हर आदमी इस पहेली का यह मतलव सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने लायोनोरा की बहुत तारीफ की।

मैम ने पहले से ही लोडोविका[95] को अगली कहानी सुनाने के लिये तय किया हुआ था पर उसको इस समय बहुत ज़ोर का सिर दर्द हो गया सो उसने ट्रैवीज़न[96] की तरफ देख कर कहा — "मिस्टर बैनैडैटो। हालॉकि यह हम स्त्रियों का काम है कि हम इस रात की अगली कहानी सुनायें पर लोडोविका को इस समय सिर में बहुत तेज़ सिर में दर्द हो रहा है।

मैं आपसे प्रार्थना करती हूॅ कि अगर आप उसकी जगह हमें कोई कहानी सुनायें। हमारी तरफ से आपको पूरी आजादी है कि आप जैसी चाहें हमें वैसी कहानी सुनायें।"

यह सुन कर ट्रैवीज़न बोला — "मैम मैं आपको पहले ही बता दूॅ कि मैं कहानी सुनाने में थोड़ा कमजोर हूॅ फिर भी क्योंकि आप मुझसे कह रही हैं तो मैं अपनी समझ और अपनी योग्यता के

[95] Lodovica
[96] Benedetto Travisan

अनुसार आपको एक कहानी सुनाता हूँ। अगर मैं इस मामले में कहीं कमजोर पड़ जाऊँ तो मेहरबानी कर के मुझे माफ कीजियेगा।"

और फिर सबको आदर से नमस्कार कर के उसने यह कहानी शुरू की।

दूसरी रात की तीसरी कहानी समाप्त

2–4 शैतान और सिलविया[97]

एक बार एक शैतान बहुत सारे पत्नियों से उनके पतियों द्वारा लगाये इलजाम सुनते सुनते थक गया तो उसने सोचा कि वह खुद शादी कर के इस बात का पक्का पता करता है कि यह चक्कर क्या है कि इतने सारे शादीशुदा लोग अपने पत्नियों की बुराई करते हैं। सो उसने सिलविया बालास्ट्रो से शादी कर ली। पर वह अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनों तक नहीं रह सका सो वह मलाफी के ड्यूक के शरीर में घुस गया।

आजकल बहुत सारी स्त्रियों में फैसला करने की समझ कम पायी जाती है। इस समय में यहॉ उन स्त्रियों की बात कर रहा हूॅ जो अपनी ऑखों पर कुछ ज़्यादा ही भरोसा करती हैं और हमेशा अपनी बेलगाम इच्छाओं को पूरा करने के सपने देखती रहती हैं।

उन्हीं स्त्रियों को ध्यान में रखते हुए मैं यह कहानी आप सबको सुना रहा हूॅ जो आप सबने कभी सुनी नही होगी। हालॉकि आपको यह कहानी थोड़ी छोटी लगेगी पर फिर भी यह आप सब पत्नियों को एक सीख देगी कि आप सब आगे से कम झगड़ालू बनें और अपने अपने पतियों से ठीक से बात करें।

अगर मेरे शब्दों की चोट किसी पर ज़ोर से पड़े तो इसका दोष मुझे मत देना क्योंकि मैं तो आप सबका छोटा सा नौकर हूॅ। आपको शिकायत करनी हो तो मैम से कीजियेगा जिन्होंने जैसा कि आपने

[97] Devil and Silvia - the Fourth Fable of the Second Night told by Benedetto Travisan

सुना मुझे यह हुक्म दिया कि मैं उन्हें वही कहानी सुना सकता हूँ जो मेरी समझ में आये।

मैं आपको पहले तो यह बता दूँ कि बहुत समय पहले एक शैतान रहता था। वह पतियों से उनकी पत्नियों की शिकायत सुनते सुनते थक गया था तो उसकी समझ में नहीं आताा था कि ये पत्नियाँ अपने पतियों के साथ आखिर ऐसा करती क्या हैं जिसकी वजह से इनके पति हमेशा इनकी शिकायत करते रहते हैं।

सो उसने यह निश्चय किया कि वह इस बात का पता खुद ही लगायेगा। हो सकता है कि उसको बाद वह इस रिश्ते को ज़्यादा अच्छी तरह से समझ सके।

उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान का रूप लिया जिसको शाही ढंग आते थे जिसके पास बहुत सारी जमीन थी और बहुत सारा सोना था। उसने अपना नाम रखा पैनकैज़ियो स्टौरनैलो[98]।

जैसे ही उसके इरादों की खबर इधर उधर फैली कि वह शादी करना चाहता है शादी कराने वाले उसके घर के चक्कर काटने लगे। उनके पास बहुत सुन्दर सुन्दर लड़कियों के रिश्ते थे।

आखीर में वह एक सुन्दर कुलीन लड़की सिलविया बालास्ट्रो[99] से बहुत प्रभावित हुआ सो उसने उससे शादी कर ली। इतनी सुन्दर और पैसे वाली शादी तो वहाँ पहले कभी किसी ने नहीं देखी थी।

---

[98] Pancrazio Stornello

[99] Silvia Balastro

दुलहिन के घर वाले रिश्तेदार दूर दूर से पास से सभी जगहों से आये थे।

दुलहे के बैस्ट मैन[100] के लिये शहर का एक बहुत ही अमीर कुलीन आदमी चुना गया था – गेस्परीनो बौन्ज़िओ[101]।

शादी के कुछ दिन बाद शैतान ने सिलविया से कहा — "प्रिये। मैं तुमसे एक बात कहना चाह रहा था कि मैं तुम्हें अपने से भी बहुत ज़्यादा प्यार करता हूँ। देखो न मैंने तुम्हें कितनी सारी भेंटें दी हैं। इसलिये अपने इस प्यार की खातिर मुझे तुम्हारी एक कृपा चाहिये जो तुम आसानी से दे पाओगी और मेरे लिये वह बहुत फायदे की होगी।

यह में तुमसे कुछ ज़्यादा नहीं माँग रहा बस इतना ही माँगता हूँ कि तुम्हें जो कुछ चाहिये, आज के लिये भी और कल के लिये भी, वह सब तुम मुझसे आज ही माँग लो गहना कपड़ा मोती और भी जो कुछ स्त्रियों को पसन्द होता है।

क्योंकि मैंने तुम्हारे प्यार के लिये यह तय किया है कि जो कुछ तुम्हें चाहिये चाहे वह कोई राज्य ही क्यों न हो वह सब तुम अभी ले लो। बस शर्त यही है कि इसके बाद इन छोटी छोटी चीज़ों के लिये तुम मुझे फिर कभी तंग मत करना।

---

[100] Selecting the Best Man for the groom is a Brtish practice. He always stays with the groom throughout the marriage ceremomies to look after his needs.

[101] Gasperino Boncio – name of the Bestman of the Satan

सो जो कुछ भी तुम्हें चाहिये वह सब तुम मुझसे अभी ले लो। फिर ध्यान रहे इसके बाद में तुम मुझसे सारी ज़िन्दगी कुछ नहीं मॉगना। उसके बाद मॉगना बेकार होगा।

सिलविया ने उससे कहा कि वह इसे करने के लिये उसे कुछ समय दे। उसके बाद वह मैडम अनस्तासिया[102] के पास गयी। मैडम अनस्तासिया उसकी मॉ थी वह दुनियॉ के व्यवहार में एक अक्लमन्द स्त्री थी।

सो उसने अपने पति का यह अजीब सा समझौता उसको बताया और उससे सलाह मॉगी। अनस्तासिया ऐसे मामलों को बहुत अच्छी तरह समझती थी। उसने एक कलम और कागज लिया और उस पर कुछ चीज़ों की एक लिस्ट बना दी जो अगर पढ़ी जाती तो उसको पढ़ने में ही दो दिन लगते।

वह लिस्ट उसने सिलविया को देते हुए कहा — "लो यह कागज ले जाओ और अपने पति से कहना कि वह तुम्हें इसमें लिखी सारी चीज़ें ला कर दे दे। अगर वह तुमको यह सब चीज़ें ला कर दे देता है तो इसका मतलब यह है कि फिर तुमको किसी और चीज़ की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

यह सुन कर और कागज ले कर सिलविया अपने घर चली गयी। उसके बाद जब वह अपने होने वाले पति से मिली तो उसने

[102] Madam Anastasia – mother of Sylvia

उसे मॉ की बनायी हुई लिस्ट थमाते हुए कहा कि उसको शादी से पहले ये सारी चीज़ें चाहिये।

राक्षस ने ऊस लिस्ट को सावधानी से पढ़ा और बोला — "क्या तुम यकीन के साथ कह सकती हो कि तुमने अपनी सारी जरूरतें इस कागज पर लिख दी हैं?

तुम इसमें कोई ऐसी चीज़ तो नहीं भूल रहीं जो तुमको जल्दी ही भविष्य में मुझसे चाहिये। क्योंकि मैं तुम्हें फिर सावधान करता हूॅ कि अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारी कोई विनती तुम्हारा कोई रोना उस चीज़ को मुझसे नहीं ले सकेगा।"

सिलविया उस लिस्ट से ज़्यादा कुछ और नहीं सोच सकी सो अपने पति की शर्तों पर तैयार हो गयी। उस शैतान ने तुरन्त ही उसके लिये बहुत बढ़िया और बड़े बड़े मोती जड़े कपड़े अॅगूठियॉ और बहुत सारा गहना बनाने का हुक्म दे दिया।

इस सबके ऊपर उसने उसको जवाहरातों से जड़ीं कई पेटियॉ दीं और और भी बहुत सारी छोटी छोटी चीज़ें दीं जिन्हें आप केवल सोच ही सकते हैं।

जब सिलविया इन सबको पहन कर सज कर खड़ी हुई तो उसको लगा कि वह तो इस शहर की सबसे सुन्दर लड़की है। यह सोच कर उसको थोड़ा घमंड महसूस होने लगा।

उसके पति ने उसकी सारी जरूरतें इतनी अच्छी तरह से पूरी की थीं कि इससे ज़्यादा तो वह अपने लिये अपने पति से अपने लिये और कुछ माँग भी नहीं सकती थी।

अब जल्दी ही कुछ ऐसा हुआ कि शहर में एक दावत हुई जिसमें शहर की सारी कुलीन स्त्रियों को बुलाया गया था। इन मेहमानों में सिलविया का भी नाम था। इस दावत में शामिल होने के लिये शहर भर की सारी स्त्रियाँ अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन कर सजधज कर आयी थीं। वे अपनी उन पोशाकों में इतनी बदली हुई लग रही थीं कि मुश्किल से पहचानी जा रही थीं।

उस दिन किसी माँ की कोई बेटी ऐसी नहीं थी जो इस दावत में इतनी सजधज कर न आयी हो कि नये से नया फैशन भी उससे मात खा रहा हो।

जब यह बात सिलविया के कानों तक पहुँची कि पोशाकों का फैशन बदल गया है तो वह तो डर गयी कि इतने सारे कपड़े जो उसके पति ने अभी हाल ही में उसको दिये थे वे सब इस दावत में पहने लायक नहीं थे। अगर वह वे कपड़े और गहने पहन कर वहाँ गयी तो सोरे लोग उसकी हँसी उड़ायेंगे।

यह सोच कर वह तो बहुत ही डर गयी। न वह सो पा रही थी न वह खा पा रही थी। सारा दिन वह आहें भरती रहती।

शैतान यानी उसके पति ने अपनी पत्नी का दुख महसूस किया। उसे मालूम था कि वह क्यों दुखी थी फिर भी यह बहाना करते हुए

कि उसको कुछ नहीं मालूम एक दिन वह उससे बोला — "प्रिये तुम क्यों दुखी हो? क्या तुम्हें आने वाली दावत की खुशी नहीं हो रही?"

सिलविया को लगा कि यही मौका है जब वह अपने दिल की बात कह सकती है सो वह हिम्मत जुटा कर बोली — "मेरे लिये क्या दावत है? इन पुराने कपड़ों में में इस दावत में कैसे जा सकती हूँ। मुझे पूरा यकीन कि तुम मुझे इन कपड़ों में वहाँ ले जा कर अपनी हँसी नहीं उड़वाओगे।"

इस पर शैतान पैनकैज़ियो बोला — "क्या मैंने तुम्हें पहले ही वह सब कुछ नहीं दे दिया था जो तुमको अपनी उम्र भर के लिये चाहिये था? यह कैसे हुआ कि तुम अपनी शर्त इतनी जल्दी भूल गयीं और मुझसे कुछ और माँगने लगीं।"

शैतान के ये शब्द सुन कर तो वह और ज़्यादा ज़ोर से रो पड़ी और अपना दुख दिखाते हुए बोली "मैं इस दावत में किसी तरह नहीं जा सकती क्योंकि मेरे पास वहाँ पहनने के लिये कपड़े ही नहीं हैं।"

शैतान बोला — "हालाँकि मैंने पहले ही तुम्हें तुम्हारी जरूरत का सामान तुम्हें दे दिया था पर फिर भी तुम्हारी खुशी के लिये मैं तुम्हारी इच्छा एक बार और पूरी कर देता हूँ। तुम मुझसे जो तुम चाहो माँग लो मैं दे दूँगा पर अब इसके बाद और कुछ नहीं।

अगर इसके बाद तुमने ऐसी ही कुछ बात कही तो फिर देखना कि मैं तुम्हारा वह हाल करूँगा कि तुम उसे कभी नहीं भूल आओगी।"

सिलविया के चेहरे पर तुरन्त ही हॅसी खेल गयी। उसने एक और लिस्ट तैयार कर दी जिनकी उसको जरूरत थी। यह लिस्ट भी उतनी ही लम्बी थी जितनी लम्बी पहले वाली लिस्ट थी।

सिलविया की इस मॉग को मिस्टर पैनकैज़ियो ने तुरन्त ही पूरा कर दिया। अब सिलविया बहुत खुश थी।

समय के साथ शहर की स्त्रियों ने फिर से शहर का फैशन बदलने का निश्चय किया। तो एक बार फिर सिलविया ने अपने कपड़े पुराने ढंग के पाये। पर कोई और दूसरी स्त्री नहीं थी जो अपने इतने कीमती गहने और कपड़ों की शान बघारती।

पर इस पर भी सिलविया को तसल्ली नहीं थी। अगले दिन वह फिर सारा दिन दुखी होती रही। शैतान को हालॉकि पता था कि वह क्यों दुखी थी फिर भी यह न जानने का बहाना बनाते हुए उसने सिलविया से पूछा — "प्रिये अब तुम क्यों दुखी हो?"

सिलविया ने हिम्मत कर के कहा — "क्या मेरे लिये दुख की यह वजह काफी नहीं है कि मैं शहर की स्त्रियों को अपना चेहरा नहीं दिखा सकती कि वे मेरी हॅसी न उड़ायें और फिर मैं हम दोनों को अपमान से बचा सकूँ। और मैं तुम्हें जितनी इज़्ज़त से देखती हूँ उससे यह शर्म और अपमान मेरे हिस्से में आये।"

यह सुन कर तो शैतान बहुत ही गुस्सा हुआ। वह बोला — "और इस शिकायत की वजह क्या है? क्या मैंने तुम्हारी दो बार विनती पूरी नहीं की है? जो तुमने चाहा वह तुम्हें दिया है। तुम्हारी इच्छाऐं कभी पूरी नहीं होतीं और मैं भी उन्हें इस तरह से हमेशा ही पूरी नहीं कर सकता।

मैं एक बार फिर तुम्हें वह सब देता हूँ जो तुम चाहती हो पर इसको बाद मैं यहाँ से चला जाऊँगा और तुम मेरा चेहरा अब कभी नहीं देखोगी।"

शैतान ने सच बोला था। वह सिलविया को नये फैशन की बहुत सारी पोशाकें दे कर उससे बिना कुछ कहे सुने ही मालफी[103] चला गया जहाँ वह बदलाव के लिये एक ड्यूक के शरीर में घुस गया जिसको इसने फिर बहुत तंग किया।ऩ

अब ऐसा हुआ कि इस घटना के बाद गैस्परीनो बौन्ज़िओ[104] को किसी बुरे व्यवहार के अपराध की वजह से उस शहर को छोड़ कर भागना पड़ा। सो वह मालफी आ गया। वहाँ वह जुए के सहारे और अपनी कई चालाकियों पर जिनमें वह माहिर था ज़िन्दा रहने लगा।

एक दिन वह मालफी के कुछ लोगों के साथ ताश खेल रहा था तो वह एक चाल आगे निकल गया। इस पर सब लोग गुस्सा हो

[103] Malphi – a place in Italy

[104] Gasparino Boncio – the name of the man who had acted as the Bestman of Pancrio Satan.

गये और गुस्सा ही नहीं बल्कि बहुत गुस्सा हो गये पर कानून के डर की वजह से वे रुक गये वरना तो वे उसको मार ही डालते।

अब इन आदमियों में से एक आदमी बोला कि वह मिस्टर गैस्परीनो बौन्ज़िओ के साथ ऐसा कुछ करेगा जिसे वह कभी नहीं भूल पायेगा।

इसके बाद वह वहॉ के ड्यूक के पास गया। वहॉ जा कर उसका आदर किया और बोला — "योर हाइनैस। शहर में एक आदमी है उसका नाम गैस्परीनो है। उसका कहना है कि वह बुरी आत्माओं को जो दूसरे आदमियों के शरीर में घुस जाती हैं बाहर निकाल सकता है चाहे वह इसी दुनियॉ की हो या फिर किसी दूसरी दुनियॉ की।

तो मैं यह सोचता हूँ कि आप उसको बुलायें और देखें कि वह आपको आपके दुख से आराम दिलवा सकता है या नहीं।"

यह सुन कर ड्यूक बहुत खुश हुआ और उसने मिस्टर गैस्परीनो को तुरन्त ही बुलवा भेजा। मिस्टर गैस्परीनो भी ड्यूक के बुलाने पर तुरन्त ही वहॉ पहुँच गया।

ड्यूक बोला — "मिस्टर गैस्परीनो। लोगों ने मुझे बताया कि तुम किसी भी आदमी के शरीर से बुरी आत्मा को बाहर निकाल सकते हो। मुझे भी यकीनन एक बुरी आत्मा परेशान कर रही है।

मैं तुम्हारे अन्दर अपने विश्वास की कसम खाता हूँ कि अगर तुम अपने जादू से मेरे अन्दर की उस आत्मा को बाहर निकाल दोगे

तो मैं वायदा करता हूँ कि तुम अपनी ज़िन्दगी के बाकी के दिन शान्ति से गुजार सकोगे।"

गैस्परीनो तो यह सुन कर एकदम चुप रह गया। जैसे ही इ्यूक ने अपनी बात खत्म की उसने हकलाते हुए इस बात को झूठ बताया। उसने कहा कि वह न तो ऐसी बातों के बारे में कुछ जानता है और न कभी ऐसी डींग ही हॉकी है।

कि उसके पास ही जो आदमी खड़ा था सामने आया और बोला — "मिस्टर गैस्परीनो क्या तुम्हें याद नहीं है कि एक दिन तुमने मुझसे ऐसा कहा था?"

गैस्परीनो बराबर यही कहता रहा कि वह इस बारे में कुछ नहीं जानता और न उसने किसी से इस बारे में कुछ कहा है।

दोनों एक दूसरे से झगड़ते रहे तो इ्यूक बीच में बोला — "रुक जाओ रुक जाओ। शान्ति रखो तुम दोनों। और तुम मिस्टर गैस्परीनो। मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ जिनमें तुम अपने जादू इस्तेमाल कर सकते हो और मुझे इस कष्ट से बचा सकते हो।

मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुम्हें अपने राज्य का सबसे सुन्दर महल दे दूँगा। इसके अलावा और जो कुछ भी तुम मुझसे मॉगोगे वह भी मैं तुमको दे दूँगा।"

गैस्परीनो ने इ्यूक का जब यह हुक्म सुना तो वह तो और भी परेशान हो गया और दुखी हो गया। वह वहॉ से चला आया और

दिन रात यही सोचने लगा कि इ्यूक का बताया यह काम वह कैसे करे।

तीन दिन बाद निश्चित समय पर वह इ्यूक के महल गया। वहॉ जा कर उसने फर्श पर एक बड़ा सा कालीन बिछवाया और बुरी आत्मा को बाहर निकल आने के लिये और उसका कष्ट दूर करने के लिये कहता रहा।

उधर शैतान इ्यूक के शरीर में आराम से बैठा हुआ था। वह कुछ नहीं बोला पर उसने इतनी ज़ोर से सॉस अन्दर खींचा कि इ्यूक का तो गला ही घुटने लगा।

जब गैस्परीनो ने दोबारा शैतान को बाहर आने के लिये कहा तो शैतान बोला — "दोस्त तुम अपनी ज़िन्दगी आराम से जियो साथ में तुम मुझे भी यहॉ आराम से जीने के लिये छोड़ दो। यहॉ मैं बहुत आराम से हूॅ। यह तुम्हारी विनती करना बिल्कुल बेकार है।"

और शैतान ने उसकी हॅसी उड़ाना शुरू कर दिया। पर गैस्परीनो उससे डरने वाला नहीं था। उसने तीसरी बार शैतान को बाहर आने के लिये कहा। उसने उससे कई सवाल भी पूछे जिससे उसे पता चल गया कि यह तो वही आदमी था जिसका वह बैस्टमैन बना था यानी पैनकैज़ियो स्टौरनैलो।

शैतान भी बोलता ही रहा — "मैं भी तुम्हें जानता हूॅ। तुम गैस्परीनो बौन्ज़िओ हो मेरे प्यारे दोस्त। क्या तुम्हें याद नहीं कि हम लोगों ने कितनी रातें खुशी खुशी गुजारी हैं।"

गैस्परीनो बोला — "बड़े दुख की बात है मेरे दोस्त। तुम इस गरीब आदमी को सताने के लिये क्यों आ गये।"

शैतान बोला — "यह मेरा भेद है। तुम यहॉ से चले क्यों नहीं जाते और मुझे यहॉ शान्ति से छोड़ देते। यहॉ मैं बहुत शान्ति से हूँ। इतनी शान्ति से कि इतनी शान्ति से मैं इससे पहले कभी नहीं था।"

पर गैस्परीनो उससे बातें करता ही रहा यहॉ तक कि शैतान को उसे यह बताना ही पड़ा कि उसकी पत्नी कितनी लालची थी और उससे उसकी कितनी लड़ाई हो गयी थी कि उसको वहॉ से उसे छोड़ कर भागना ही पड़ा और ड्यूक के शरीर में रहना पड़ा। और अब वह किसी तरह भी उसके पास नहीं जा सकता।

इतना सब जानने के बाद गैस्परीनो बोला — "अब ओ मेरे दोस्त तुम मेरे ऊपर एक कृपा कर दो।"

शैतान ने पूछा — "क्या?"

गैस्परीनो बोला — "कुछ ज़्यादा नहीं बस तुम इस बेचारे के शरीर को छोड़ दो।"

शैतान बोला — "दोस्त गैस्परीनो। मैं तो पहले ही तुम्हें कोई बहुत अक्लमन्द आदमी नहीं समझता था पर इस बात से तो अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम पूरे बुद्धू हो।"

गैस्परीनो बोला — "पर मैं तुमसे विनती करता हूँ तुमसे भीख माँगता हूँ उन दिनों की कसम जो हमने साथ साथ गुजारे थे कि जो मैं तुमसे कहता हूँ वह तुम कर दो।

तुम्हें मालूम है क्या हुआ। इ्यूक ने कहीं सुन लिया कि मैं बुरी आत्माओं को भगा देता हूँ सो उसने यह काम मुझ पर लाद दिया। अगर मैंने उसके इस काम को पूरा नहीं किया तो वह मुझे फाँसी पर लटका देगा और फिर तुम मेरी मौत के जिम्मेदार होगे।"

शैतान बोला — "ओह बेचारे तुम। हमारे साथ साथ रहने ने ऐसी कोई जिम्मेदारी मेरे ऊपर नहीं डाली थी। तुम चाहे नरक की तली में जाओ या कहीं और मैं इस बात की परवाह नहीं करता। तुम अपनी जबान काबू में क्यों नहीं रखते। तुम ऐसी ताकतों के बारे में क्यों डींग हाँकते फिरते हो जो तुम्हारे पास हैं हीं नहीं।"

और यह कह कर वह बहुत ज़ोर से गरजा और इ्यूक पर फिर दौरा सा पड़ा जिससे लगा कि वह तो बस मर ही गया।

पर कुछ देर बाद ही इ्यूक अपने होश में आ गया। तब गैस्परीनो बोला — "माई लौर्ड। हिम्मत रखिये क्योंकि मैंने देख लिया है कि बुरी आत्मा ने अब आपको छोड़ दिया है।

अब आप अपने सब संगीतकारों को कल अपने महल में बुलाइये और एक खास समय पर उनको उन्हें बजाने को कहिये। और जब ये घंटियाँ बजनी शुरू हों तब अपनी सेना को तोप छोड़ कर खुशियाँ मनाने के लिये कहिये।

वे लोग जितना ज़्यादा शोर मचायेंगे उतना ही हमारे लिये ठीक होगा। बाकी आप मुझ पर छोड़ दीजिये।"

अगली सुबह गैस्परीनो महल गया और रस्मी तौर पर अपने मन्त्र पढ़ने लगा। और जैसा कि पहले दिन तय हुआ था अगले दिन निश्चित समय पर बिगुल तम्बूरीन मंजीरे आदि बजने शुरू हो गये। सब लोग मिल कर इतना शोर मचा रहे थे जैसे यह शोर कभी बन्द ही नहीं होगा।

आखिर शैतान ने पूछा — "इस जगह में आज यह क्या हो रहा है? इतना शोर क्यों? यहाँ क्या हो रहा है? ओह अब तो मैं साफ साफ सुन रहा हूँ। जरूर कुछ हो रहा है।"

गैस्परीनो बोला — "हाँ हाँ सुनना शुरू करो।"

शैतान बोला — "जरूर जरूर। आधे घंटे से जो शोर मच रहा है उससे तो तुम्हारे कान भी बहरे हो गये होंगे। पर मैं यह बात हिम्मत के साथ कह सकता हूँ कि तुम दुनियाँ के लोगों के शरीर इतनी तेज़ आवाज मुश्किल से सह सकते हैं। पर खैर यह तो बताओ कि यह सब शोर शराबा किसलिये है।"

गैस्परीनो बोला — "मैं तुम्हें बहुत थोड़े में बताता हूँ अगर तुम इयूक को थोड़ा सा आराम दे दो।"

शैतान बोला — "जो तुम चाहोगे वही होगा।"

और तब गैस्परीनो ने अपनी कहानी शुरू की —

"मेरे प्यारे दोस्त और मेरे पुराने साथी। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि इ्यूक को यह पता चल गया है कि किस तरह से तुम अपनी पत्नी से दूर भागने पर मजबूर किये गये हो। यानी उसके कपड़ों के लालच की वजह से। इसलिये उसने उसे माल्फी बुलवाया है। यह जो शोर तुम सुन रहे हो वह उसी के आने की खुशी में हो रहा है।"

शैतान बड़े ज़ोर से चिल्लाया — "अब मुझे पता चला कि इस सबमें तुम्हारा हाथ है। खैर तुमने मुझे चालाकी में हरा दिया। ऐसा दोस्त क्या कोई वफादार दोस्त होता है? क्या मैं सही नहीं बोल रहा था कि तुम्हारे साथी होने का दावा ठीक नहीं है?

कोई बात नहीं तुम खेल में जीत गये। उसको नापसन्द करने का और उससे डरने का खौफ मुझे इतना ज़्यादा है कि उसको देखने से पहले ही मैं तुम्हारा कहा करूँगा और खुद ही कहीं दूर चला जाऊँगा।

मैं नरक की तली में रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय यहाँ रह कर उसे देखने के। अच्छा विदा गैस्परीनो। अब तुम मुझे न कभी देखोगे और न कभी सुनोगे।"

शैतान के यह कहने के तुरन्त बाद ही इ्यूक का दम घुटने लगा। उसकी आँखें शैतान की तरह घूमने लगीं। पर ये डरावने इशारे यह बता रहे थे कि अब शैतान उसके शरीर में से निकल चुका है।

उसकी हाजिरी बताने के लिये वहाँ केवल गंधक[105] की बू ही रह गयी थी। धीरे धीरे ड्यूक होश में आ गया। जब वह पूरी तरीके से ठीक हो गया तो उसने गैस्परीनो को बुलवाया और अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये उसको एक शाही महल दे दिया और बहुत सारा पैसा दे दिया।

हालाँकि कुछ दरबारियों के जलने के बावजूद गैस्परीनो वहाँ काफी सालों तक आराम से रहा लेकिन जब सिलविया ने देखा कि उसके पति ने जो कुछ कपड़े गहने और बहुत सारी चीज़ें उसे दी थीं उसके जाने के बाद धुँए और राख में बदल गयीं तो वह तो पागल हो गयी और फिर बड़ी बुरी मौत मरी।"

ट्रैवीज़न ने यह कहानी बड़े मिर्च मसाले लगा कर सुनायी और वहाँ बैठे आदमियों ने खूब ताली बजायी। पर स्त्रियों को इस कहानी में अपना कुछ अपमान सा लगा सो वे चुप हो गयीं।

यह देख कर मैम ने सबको चुप रहने के लिये कहा और ट्रैवीज़न से उसकी पहेली पूछने के लिये कहा। ट्रैवीज़न ने इस बात के लिये स्त्रियों से माफी माँगी कि उसको कहानी में स्त्रियों के बारे में ऐसा कहा गया था और फिर उसने अपनी पहेली पूछी —

हमारे बीच में एक आदमी बहुत घमंडी है जिसको बहुत सारी अक्ल है
उसको जानने की बहुत इच्छा है हालाँकि उसके दिमाग नहीं है
उसके तर्क बहुत ही तेज़ हैं न उसके सिर है न उसके हाथ हैं न उसके जीभ है
वह हमारी सब आदतों को जानता है

[105] Translated for the word "Sulphur"

वह केवल एक ही बार पैदा हुआ है और हमेशा के लिये पैदा हो गया है
उसे कभी मौत नहीं आयेगी

इस पहेली को हल करना तो वहॉ बैठे किसी भी आदमी के लिये कोई आसान काम नहीं था। आखिर जब ट्रैवीज़न ने देखा कि सभी लोग उसकी पहेली के हल में लगे हुए हैं पर हल नहीं कर पा रहे हैं तो वह बोला — "यह मेरे लिये ठीक बात नहीं है कि मैं इन इज़्ज़तदार लोगों को और ज़्यादा तंग करूँ।

आप सबकी इजाज़त से मैं अब इस पहेली का हल देता हूँ। अगर आप लोग अभी भी इसका हल बताने की कोशिश करना चाहते हों तो इन्तजार किया जा सकता है।"

सबने एक आवज में कहा कि अब इस पहेली का हल वह उन सबको बता ही दे। वह बोला — "मेरी पहेली का मतलब बस इतना ही है कि यह आदमी की अमर आत्मा है जिसके आध्यात्मिक होते हुए न तो सिर है न हाथ हैं न जीभ है फिर भी इसके काम सभी को दिखायी देते हैं। और चाहे यह स्वर्ग में रहे या नरक में पर यह अमर है।"

ट्रैवीज़न की पहेली का मतलब समझ कर वहॉ बैठे सारे लोग बहुत खुश हुए।

अब रात काफी जा चुकी थी बल्कि सुबह होने वाली थी क्योंकि मुर्गों के बालने की आवाज आने लगी थी तो मैम ने विसैन्ज़ा से कहा कि वह दूसरी रात की आखिरी कहानी सुनाये।

पर बैनैडिटो की कहानी सुन कर विसैन्ज़ा का चेहरा लाल पड़ा हुआ था। वह बोली — "मिस्टर बैनैडिटो। मुझे तुमसे इससे ज़्यादा अच्छी कहानी की आशा थी कि तुम स्त्रियों का ऐसा चरित्र दिखाने की बजाय इससे कुछ ज़्यादा ऊँची कहानी सुनाओगे।

पर क्योंकि तुमने स्त्रियों के प्रति इतना कड़वा भाव रखा है तो मुझे ऐसा लगता है कि शायद तुमको किसी स्त्री से बुरा अनुभव हुआ है जिसने तुमसे जितना तुम दे सकते हो उससे ज़्यादा माँग लिया है।

यकीनन तुम स्त्रियों के साथ अन्याय कर रहे हो अगर तुम सारी स्त्रियों के लिये ऐसा ही सोचते हो। तुम्हारी आँखें बतायेंगी कि हम सब हालाँकि एक ही हाड़ माँस की बनी हुई हैं फिर भी हममें से कुछ दूसरों से ज़्यादा कोमल हैं और पूजने योग्य हैं।

अगर तुम हम लोगों को इस तरह तौलोगे तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि किसी दिन तुम्हारे चेहरे की सुन्दरता किसी सुन्दर लड़की के नाखूनों से खुरची हुई पायी जायेगी। तब तुम्हारे गीत तुम्हारे लिये बेकार हो जायेंगे।"

इस पर ट्रैवीज़ैन बोला — "मैंने यह कहानी किसी को दुख पहुँचाने के लिये नहीं सुनायी थी और न अपनी बड़ाई के लिये सुनायी थी बल्कि यह कहानी मैंने उन स्त्रियों को सलाह और

चेतावनी देने के लिये सुनायी थी ताकि वे अपने अपने पतियों के साथ ठीक से व्यवहार कर सकें।"

विसैन्ज़ा बोली — "मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है कि इस कहानी सुनाने का तुम्हारा क्या उद्देश्य था और न इस बात की यहाँ बैठी दूसरी स्त्रियाँ ही कोई चिन्ता करती हैं। पर मैं चुप नहीं रहूँगी मैं यह बता कर रहूँगी कि स्त्रियों पर लगाये गये तुम्हारे ये आरोप किसी तरह से भी सही नहीं हैं।

अब मैं आप सबको एक कहानी सुनाती हूँ जिसको आप सब इनकी कहानी का एक ज़्यादा अच्छा रूप देख सकें।

और सबको आदर से सिर झुका कर उसने अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

दूसरी रात की चौथी कहानी समाप्त

2–5 मिस्टर सिम्पलीसियो डी रोसी[106]

मिस्टर सिम्पलीसियो डी रोसी घिरोटो स्कैनफ़रला[107] की पत्नी गिलिओला[108] को वहुत प्यार करता था। घिरोटो एक किसान था और उसने सिम्पलीसियो को अपनी पत्नी के साथ पकड़ा था।

"प्यारी बहिनो। कोई भी प्यार की कोमल भावनाओं को नकार नहीं सकता। पर प्यार प्यार करने वालों को खुशी कभी नहीं देता। और ऐसा ही एक प्यार के हमारे मिस्टर सिम्पलीसियो डी रोसी के साथ हुआ जो केवल अपने आनन्द के लिये उसके साथ था जिसको वह बहुत प्यार करता था। उसके पास से उसे भागना पड़ा और वह जो कुछ उससे ले जाते बन पड़ा उसे ले कर वहॉ से भाग गया।

अब मैं इसकी पूरी कहानी आप सबको सुनाती हूॅ। अपने रिवाज के अनुसार आप इसको ध्यान से सुनें।

सैन्टा ऐफ़ैमिया[109] नाम के एक गॉव में जो सैन पीट्रो[110] के मैदान के ठीक नीचे है और पादवा[111] की सीमा में आता है वहॉ

---

[106] Mister Simplicio di Rossi – The Fifth Fable of the Second Night told by Vicenza

[107] Gherotto Scanferla – husband of Giliola

[108] Giliola – name of the woman

[109] Santa Eyfemia – name of a village

[110] San Pietro – name of a place

[111] Padua is a city in Italy. The city hosts the famous University of Padua, that was founded in 1222 when a group of students and professors decided to leave the University of Bologna to have more freedom of expression. At the University of Padua, Galileo Galilei was a lecturer between 1592 and 1610.

घिरोटो स्कैनफ़रला नाम का एक आदमी रहता था। वह बहुत अमीर था और उसकी हैसियत भी बहुत अच्छी थी।

पर वह एक लड़ने वाला आदमी था। उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था गिलिओला। हालॉकि वह एक किसान परिवार में पैदा हुई थी पर वह बहुत सुन्दर और शान वाली थी।

एक बार पादवा का एक आदमी सिम्पलीसियो डी रोसा उसको बहुत प्यार करने लगा। इत्तफाक से उसका घर घिरोटो के घर के पास ही था। उसको अपनी पत्नी के साथ अपने घर के आस पास घूमने की आदत थी। वह उसको बहुत कम महत्व देता था हालॉकि वह बहुत गुणों वाली थी जिन्होंने उसको उससे बॉध रखा था।

वह गिलिओला को इतना प्यार करता था कि उसके बिना उसको दिन और रात कभी भी चैन नहीं था। पर उसने अपना यह प्यार अपने दिल में ही छिपा रखा था।

क्योंकि वह डरता था कि अगर कहीं वह पकड़ा गया तो उसका पति उस पर गुस्सा न हो। दूसरे कुछ तो गिलिओला बहुत ही मशहूर स्त्री थी और कुछ वह अपनी पत्नी का अपराधी भी नहीं बनना चाहता था।

सिम्पलीसियो के घर के पास एक फव्वारा था जिससे बहुत सारा पानी निकलता था जिसको वहॉ के आस पास के सारे लोग इस्तेमाल करते थे। उसका पानी इतना मीठा और साफ था कि मरा हुआ आदमी भी उसे पीना चाहेगा।

इसलिये गिलिओला रोज सुबह शाम वहॉ एक तॉबे की बालटी ले कर जाती थी और घर के कामों के लिये वहॉ से पानी लाती थी।

अब प्यार जो उसके लिये मिस्टर सिम्पलीसियो के सीने में छिपा हुआ था वह तो किसी को छोड़ता नहीं सो वह उसको बार बार कोंचता कि वह उससे अपने प्यार का इकरार करे पर एक तो वह बहुत अच्छी थी दूसरे उसकी ज़िन्दगी ऐसी थी कि वह उससे अपने प्यार के बारे में किसी तरह से कुछ कह ही नहीं पाता था। वह बस मन ही मन में घुटता रहता और कभी कभी उसको देख कर ही अपना मन बहला लेता।

और जहॉ तक उसका सवाल था वह इन सब बातों से बिल्कुल बेखबर थी। न उसको यह पता था कि वह उसे दिल ही दिल में कितना चाहता था। क्योंकि वह एक ईमानदारी की ज़िन्दगी जी रही थी उसे किसी बात का कोई ध्यान ही नहीं था सिवाय अपने पति के और अपने घर के काम के।

एक दिन गिलिओला रोज की तरह फव्वारे पर पानी भरने गयी तो वहॉ उसको मिस्टर सिम्पलीसियो दिखायी दे गया। उसने उससे सादा स्वभाव से विनम्रता से कहा जैसे कोई और स्त्री कहती — "गुड मौर्निंग मिस्टर।"

उसने इसका जवाब दिया "टिक्को।"[112]

[112] Ticco

इस तरह की बात से उसका दिमाग इतना इधर उधर हो गया और उसने उससे मजाक में यह कह दिया ताकि वह इस तरह के मजाक को जान भी जाये।

गिलिओला ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और न कुछ और ही कहा और अपना पानी ले कर चली गयी। जैसे जैसे समय बीतता गया अब यह रोज रोज होने लगा।

सिम्पलीसियो उसके "गुड मौर्निंग" के जवाब में अब भी वही शब्द कहता। वह इतनी सीधी थी कि इसमें उसको सिम्पलीसियो की चालाकी कुछ पता ही नहीं चला। वह तो बस अपना काम करती और ऑखें नीची किये घर चली जाती।

पर कुछ समय बाद उसने यह बात अपने पति से कहने का निश्चय किया कि यह उसके ऊपर क्या मुसीबत आ पड़ी है। सो एक दिन जब वे आपस में खुशी खुशी बात कर रहे थे तो गिलिओला ने अपने पति से कहा — "प्रिय मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूॅ। हो सकता है कि वह तुम्हें हॅसी की बात लगे।"

घिरोटो बोला — "ऐसी क्या बात है।"

गिलिओला बोली — "जब भी मैं पानी लाने के लिये फव्वारे पर जाती हूॅ तो मुझे वहॉ मिस्टर सिम्पलीसियो मिलता है। जब मैं उसको "गुड मौर्निंग कहती हूॅ तो वह मुझसे "टिक्को" बोलता है। मैंने इस शब्द के बारे में सोचने की बहुत कोशिश की है पर मुझे इसका मतलब समझ में नहीं आया।"

"इसके बाद फिर तुमने उसको क्या जवाब दिया।"

गिलिओला बोली — "मैंने तो उसको कोई जवाब नहीं दिया।"

घिरोटो बोला — "ध्यान रखना। अगली बार जब वह तुमसे "टिक्को" कहे तो तुम उसके जवाब में कहना "टाक्को"। और तुम देखना कि तुमको इस बात का ठीक से ध्यान रखना है। साथ में यह भी याद रखना कि इसके बाद उससे कोई और शब्द नहीं कहना और जैसे रोज घर वापस आती हो वैसे ही आ जाना।"

गिलिओला अपने नियत समय पर फिर पानी भरने गयी। वहाँ उसको फिर से सिम्पलीसियो मिला तो उसने कहा — "गुड डे।"

तो उसने भी पहले की तरह से उसे जवाब दिया "टिक्को"।

इस पर अपने पति की सलाह मान कर उसने उसे जवाब में कहा "टाक्को"। यह सुन कर तो मिस्टर सिम्पलीसियो तो बहुत खुश हो गया और यह सोचते हुए कि वह उस पर अपना प्यार जताने में सफल हो गया है और अब वह उससे अपनी इच्छा पूरी कर सकता है उसने हिम्मत कर के उससे पूछा — "मैं कब आऊँ?"

पर गिलिओला ने जैसा उसके पति ने उससे कहा था उसे कोई जवाब नहीं दिया और वैसे ही नीची नजर किये अपने घर चली आयी जैसे रोज आया करती थी।

जब वह घर वापस आयी तो उसके पति ने उससे पूछा कि आज उसके साथ कैसा गुजरा तो उसने बताया कि जैसा उसने उससे कहा था उसने वैसा ही किया। फिर उसने बताया कि वह उससे पूछ

रहा था कि वह कब आ सकता है पर उसने उसके कहे अनुसार उसे कोई जवाब नहीं दिया।

हालॉकि घिरोटो तो एक किसान था पर वह था बहुत अक्लमन्द। वह मिस्टर सिम्पलीसियो के शब्द का मतलब समझ गया था। उसने उसे झॅझोड़ कर रख दिया था। क्योंकि उसको मालूम था कि उसके इस शब्द का इतना छोटा सा मतलब नहीं हो सकता। उसका कुछ गम्भीर मतलब होना चाहिये।

सो उसने अपनी पत्नी से कहा कि अगली बार जब वह पानी लेने जाये और वह पूछे कि "मैं कब आऊॅ?" तो उसको जवाब देना "आज शाम को।" बाकी की बात तुम मुझ पर छोड़ दो।

अगले दिन जब गिलिओला पानी भरने गयी तो उसको मिस्टर सिम्पलीसियो फिर मिल गया जो उसका वहॉ बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था।

जाते ही उसने मिस्टर से कहा "गुड मौर्निंग" तो सिम्पलीसियो बोला "टिक्को"।

गिलिओला बोली "टाक्को" तो सिम्पलीसियो ने फिर पूछा — "कब आऊॅ?"

गिलिओला फिर बोली — "आज शाम को।"

वह बोला — "ठीक है।"

जब गिलिओला घर पहुॅची ते उसने अपने पति को बताया कि वह उसके कहे अनुसार सब कुछ वैसा ही कर आयी थी। घिरोटो ने

पूछा "तो उसने क्या जवाब दिया।" उसकी पत्नी बोली कि उसने कहा कि वह आज शाम को आयेगा।

घिरोटो ने सिंवई और मैकेरोनी खायीं और अपनी पत्नी से बोला — "चलो अब हम एक दर्जन ओट्स[113] के थैले निकाल कर लाते हैं। मैं उसको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं उन्हें पिसवाने के लिये चक्की पर ले जाना चाहता हूँ। लेकिन इस सबसे पहले ओट्स के **12** थैलों के साथ साथ एक थैला खाली भी तैयार रखना।

इस बीच अगर सिम्पलीसियो आ जाये तो उसको आदर से बिठाना और उसकी बहुत अच्छी तरह से खातिरदारी करना। जब तुम मेरे आने की आवाज सुनो तो तुम उसको उसे खाली थैले में छिपने देना। बाकी मैं देख लूँगा।

गिलिओला बोली — "मगर तुम्हारे इस प्लान को काम में लाने के लिये हमारे पास इतने सारे थैले कहाँ हैं।"

"तब तुम अपनी पड़ोसन चा[114] के पास जाओ और उससे कहना कि वह मिस्टर सिम्पलीसियो के घर जाये और वहाँ से उससे दो थैले माँग लाये और साथ में उसे यह भी बता आये कि मैं शाम को चक्की पर जा रहा हूँ।"

---

[113] Oats is a kind of grain – see its picture above.

[114] Cia – neighbor of Giliola

ये सब बातें शब्द ब शब्द पालन की गयीं। मिस्टर सिम्पलीसियो ने उसकी यह बातें ध्यान से सुनी तो उसने ये सब बातें सच समझीं कि शाम को घिरोटो चक्की पर जायेगा और गिलिओला अपने घर पर अकेली रह जायेगी। उसको पूरा विश्वास था कि वह भी उसके प्यार में वैसे ही जल रही होगी जैसे कि वह खुद उसके प्यार में जल रहा है।

उसको क्या पता था कि वहॉ उसके लिये कुछ जाल बिछाया जा रहा है जिससे उसके इस किये धरे को वे बेकार करने वाले हैं। अगर जो वह थोड़ा सा भी अक्लमन्द होता तो सॅभाल कर जाता।

मिस्टर सिम्पलीसियो के पास बहुत सारी मुर्गियॉ थी तो उसके पास बहुत सारे थैले थे तो उसने उनमें से दो बहुत अच्छे थैले निकाले और उन्हें अपने नौकर के हाथ भेज दिया और कहलवा दिया कि जब तक वह उसके घर आता है वह उनको पका कर रखे।

जब रात हुई तो वह घर से चोरी से निकला और घिरोटो के घर चल दिया। गिलिओला ने उसका बहुत अच्छे तरीके से स्वागत किया। पर जब उसने अपने भेजे हुए दोनों थैले को वहीं रखा देखा तो वह कुछ डर गया। क्योंकि उसको तो यही उम्मीद थी कि उसका पति वे थैले ले कर चक्की चला गया होगा।

सो वह गिलिओला से बाला — "घिरोटो कहॉ है? मुझे लगा कि वह तो चक्की पर गया होगा पर ये थैले तो यहीं रखे हैं। मैं इसके बारे में क्या सोचूँ?"

गिलिओला बोली — "न तो तुम बड़बड़ाओ और न डरो। सब ठीक हो जायेगा। जब वह चक्की पर जा रहा था तो उसके बहनोई आये और उन्होंने बताया कि उसकी बहिन की तबियत बहुत खराब है। उसको काफी दिनों से बुखार है लगता है कि वह अब ज़्यादा दिन नहीं बचने वाली। सो इससे पहले कि वह मर जाये वह अपने घोड़े पर सवार हो कर उसको देखने गया है।"

मिस्टर सिम्पलीसियो अपने नाम के अनुसार ही सीधा सादा था। उसने गिलिओला की बात को सच माना और चुप हो गया।

जब गिलिओला मुर्गा पका रही थी और खाने की मेज लगा रही थी कि उसका पति घिरोटो ऑगन में दिखायी दिया। जैसे ही उसने अपने पति को देखा तो डरने का बहाना करते हुए बोली — "अरे हमारे ऊपर तो मुसीबत आ पड़ी। हम दोनों तो मर ही गये।"

और बिना एक पल की देरी करते हुए उसने बिना किसी हिचकिचाहट के उसको उन दोनों थैलों में से एक थैले में घुस कर छिप जाने के लिये कहा।

हालॉकि सिम्पलीसियो ने बहुत रोक लगायी पर गिलिओला ने उसको ठूँस कर उसमें बन्द कर दिया और उसको दूसरे ओट्स के

थैलों के पीछे रख दिया और वहीं खड़ी खड़ी अपने पति का इन्तजार करती रही।

जब घिरोटो घर के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि खाने की मेज तैयार थी मुर्गे बर्तनों में रखे थे। उसने पूछा — "आज मेरे लिये इतना बढ़िया खाना किसलिये?"

गिलिओला बोली — "मुझे लगा कि जब तुम आधी रात को लौट कर आओगे तब तुम्हें थकान की वजह से कुछ बढ़िया खाना चाहिये सो मैंने तुम्हारे लिये आज अच्छा खाना बनाया है।"

घिरोटो यह देख कर बहुत खुश हुआ वह बोला — "भगवान की कसम यह तुमने बहुत अच्छा किया क्योंकि मेरी आज तबियत कुछ ठीक नहीं है मैं खाना खा कर जल्दी से सोना चाहता हूँ कल सुबह फिर मुझे चक्की पर भी जाना है।

पर इससे पहले कि मैं खाना खाने बैठूँ मैं ज़रा देख कर आऊँ कि मेरे वे थैले कल चक्की पर ले जाने के लिये तैयार रखे हैं या नहीं।"

इतना कर कर वह थैलों के पास गया और उनको गिनने लगा। उसने थैले गिने तो वहाँ **13** थैले थे। यह उसने बहाने के लिये किया और फिर से गिनना शुरू किया पर फिर भी उसने **13** थैले ही गिने।

वह गिलिओला से बोला — "गिलिओला। इसका क्या मतलब है कि मैंने तो तुमको **12** थैले तैयार रखने को कहा था पर यहाँ तो **13** थैले हैं। यह **13**वाँ थैला कहाँ से आया।"

गिलिओला बोली — "हॉ यकीनन। जब मैंने ओट्स के थैले भर कर रखे थे तो वे **12** ही थे पर यह **13**वॉ थैला कहॉ से आ गया यह तो मुझे नहीं पता।"

इस बीच मिस्टर सिम्पलीसियो जान गया कि वह **13**वॉ थैला वहॉ उसकी वजह से था। वह अपने थैले में बिल्कुल चूहे की तरह से शान्त बैठा रहा भगवान से मन ही मन खुद को बचाने की प्रार्थना करता रहा और साथ में वह गिलिओला को और उससे अपने प्रेम को गालियॉ देता रहा जिसकी वजह से अपनी बेवकूफी की वजह से उसने उस पर विश्वास किया।

अगर वह यहॉ से किसी तरह नहीं उड़ा तो वह तो बहुत बड़ी मुश्किल में पड़ जायेगा। और वह वहॉ से भाग भी गया होता अगर उसको अपनी शर्मिन्दगी का डर नहीं होता।

पर घिरोटो को तो पता था कि किस थैले में क्या था सो उसने वह थैला जिसमें मिस्टर सिम्पलीसियो बैठा हुआ था उसे खींचा और खींच कर दरवाजे के बाहर ले गया जो उसने पहले ही खुला छोड़ा हुआ था कि जब वह वहॉ अकेला रह जाये तो समय पा कर बच कर निकल कर अपनी जगह भाग जाये।

उसके बाद घिरोटो ने एक गॉठों वाली छड़ी ली और उससे उसको इतना मारा और उसके शरीर पर इतना मारा कि एक इंच जगह भी बिना मार के नहीं बची। शायद वह अगर उसको थोड़ा सा और मारता तो वह तो मर ही जाता।

और उसकी पत्नी को अपने पति के बारे में यह डर न होता कि वह उसको इतना मारेगा कि वह मर ही जायेगा और उसके ऊपर कत्ल का इलजाम लग जायेगा तो वह वाकई उसको मार देता। गिलिओला ने उस थैले को उसके सामने से हटा दिया।

आखिर घिरोटो ने उसे मारना रोक दिया और वहॉ से चला गया। मिस्टर सिम्पिलियो अपने थैले से बाहर निकला और सिर से ले कर पैर तक दर्द का मारा अपने घर चल दिया जबकि घिरोटो अपनी छड़ी ले कर उसके पीछे जाता रहा।

बाद में घिरोटो और उसकी पत्नी ने मिस्टर सिम्पिलियो के पैसे का खाना खाया और सोने चले गये।

कुछ दिन बीत जाने के बाद एक बार गिलिओला तालाब पर पानी भरने गयी तो वहॉ उसने मिस्टर सिम्पिलियो को अपने घर के छज्जे पर चक्कर काटते देखा तो खुश हो कर बोली — "टिक्को मिस्टर सिम्पिलिसियो।"

पर उसका शरीर तो अभी भी दर्द कर रहा था जो उसको इस शब्द की वजह से मिला था बोला —

न तो तुम्हारी अच्छी सुबह के लिये न तुम्हारे जैसे के तैसे के लिये
क्या तुम मुझे फिर से थैले में बन्द कर लोगी

जब गिलिओला ने यह सुना तो वह तो आश्चर्यचकित रह गयी। उसका चेहरा शर्म से लाल पड़ पड़ गया और वह घर चली

गयी। मिस्टर सिम्पिलिसियो जो अपने इस शब्द के इस्तेमाल पर बहुत दुखी था अपना मजाक बदल दिया और अपनी पत्नी की अच्छी तरह से सेवा करने लगा जिसको कि वह कुछ दिनों से नापसन्द करने लगा था।

अब वह दूसरे लोगों की अच्छी चीज़ों की तरफ देखता भी नहीं था ताकि उसको फिर से कहीं ऐसा अनुभव न हो जाये।"

जब विसैन्ज़ा ने अपनी कहानी खत्म की तो वहाँ बैठी सारी स्त्रियाँ बोलीं — "अगर ट्रैवीज़न ने अपनी कहानी में कही गयी सारी स्त्रियों के साथ बुरा व्यवहार किया तो विसैन्ज़ा ने अपनी कहानी में आदमी के साथ उनसे ज़्यादा बुरा व्यवहार किया है जिसमें मिस्टर सिम्पिलियो को इस तरह पीटा गया।"

और जब वे सब हँस रहे थे, कोई एक बात पर कोई दूसरी बात पर तो मैम ने उनको रोका ताकि विसैन्ज़ा अपनी पहेली पूछ सके। विसैन्ज़ा ने भी जब देख लिया कि उसने स्त्रियों के अपमान का काफी बदला ले लिया है तो उसने सबके सामने अपनी पहेली रखी —

मुझे अपना नाम ठीक से बताने में शर्म आती है
जो छूने में खुरदरा है और देखने में भद्दा है
मेरा मुँह चौड़ा और बिना दाँतों का है मेरे होठ लाल हैं और छूने के लायक नहीं हैं
चारों तरफ से और नीचे से काले हैं
उनमें अक्सर ही कोई उत्साह नहीं है और वे मुझमें चमक भर देते हैं
फिर वे मुझमें उत्साह भर देते हैं मुझे स्पंज बना देते हैं
जब तक कि मैं निचुड़ नहीं जाती

घर का सबसे नीचा नौकर भी मुझे डॉटता है
सारे आदमी अपनी अपनी पसन्द के अनुसार मुझे इस्तेमाल करते हैं

यह सुन कर आदमी लोगों की तो हॅसी ही नहीं रुकी जब उन्होंने देखा कि स्त्रियॉ नीचा सिर कर के हॅसे जा रही हैं।

पर मैम ने जिसको सभ्यता वाली बातें ज़्यादा पसन्द थीं विसैन्ज़ा के ऊपर एक परेशान हो जाने वाली नजर डाली और उससे कहा — "अगर मैं यहॉ बैठे हुए इन भले आदमियों की इज़्ज़त नहीं करती होती तो मैं तुम्हें बताती कि तुम्हारी इस असभ्यता भरी पहेली का क्या मतलब है।

इस बात को ध्यान से सुन लो कि इस बार तो मैं तुम्हें माफ करती हूॅ पर आगे से केवल तुम ही नहीं बल्कि कोई भी इस तरह की असभ्य बातें कह कर दूसरों को शर्मिन्दा नहीं करेगा। क्योंकि अगर तुम लोगों को मुझे इस बात को समझाने की जरूरत पड़ी कि मेरी कितनी ताकत है तो मैं तुम्हें वह भी समझा दूॅगी।"

यह सुन कर विसैन्ज़ा के चेहरे पर सुबह के गुलाब के फूल के खिलने जैसी शर्म की लाली छा गयी।

उसने हिम्मत कर के मैम को जवाब दिया — "अगर मैंने एक भी शब्द ऐसा कहा हो जो आपके कानों को अच्छा न लगा हो या यहॉ बैठी हुई किसी भी भली स्त्री को अच्छा न लगा हो तो मैं उसके

लिये आपकी दी हुई सजा की पूरी हकदार हूँ। बल्कि आपके जूतों से पीटे जाने के भी काबिल हूँ।

बल्कि मेरे शब्दों की सादगी को देखते हुए वे बिल्कुल भी खराब नहीं हैं। मेरी पहेली का गलत मतलब लगाया गया है। मैं बताती हूँ कि कैसे वह एक सादी सी पहेली है।

मेरी पहेली में यह एक पकाने वाला बर्तन है जो चारों तरफ से काला है और जब उसके नीचे तेज़ आग जलायी जाती है तो उसके अन्दर पकायी जाने वाली चीज़ उबल उबल कर बाहर आती है और चारों तरफ बिखर जाती है।

उसका मुँह चौड़ा है उसमें दाँत भी नहीं हैं और वह हर चीज़ ले लेता है जो भी उसमें फेंकी जाती है। घर का छोटे से छोटा नौकर भी उसमें कितना भी निकाल कर ले सकता है जब उसके मालिक के लिये खाना परोसा जा रहा हो।"

जब लोगों ने विसैन्ज़ा सो उसकी पहेली का सादा सा हल सुन तो सब लोगों ने उसकी बहुत बड़ाई की। उनको भी लगा कि मैम को कुछ गलती लग गयी।

अब बहुत देर हो चुकी थी। सुबह के आसमान का रंग गुलाबी लाल हो चुका था। मैम ने विसैन्ज़ा से उसको डाँटने के लिये किसी भी तरह की माफी माँगे बिना ही सब लोगों को विदा दी और शाम को ठीक समय से आने के लिये कहा।

दूसरी रात की पॉचवीं कहानी समाप्त

दूसरी रात समाप्त

Fairy Tale Timeline[115]

100-200 AD
The myth, Cupid and Psyche, is written by Lucius Apuleius Madaurensis (or Platonicus) in 2nd century AD and included in his Metamorphoses (also known as *The Golden Ass*). Some scholars consider this to be the first literary fairy tale, very similar in nature to Beauty and the Beast.

200-300 AD – India
A Hindu collection of tales, the *Panchatantra*, is written. Some of these tales are thought to be forerunners to a few European fairy tales.

850-860 AD – China
The first known literary version of Cinderella in the world is written in China.

c 1300 AD
Gesta Romanorum, a Latin work, is produced. It is a collection of tales and anecdotes thought to have influenced William Shakespeare and Edmund Spenser, author of *The Faerie Queen*.

c 1500 AD
One Thousand and One Arabian Nights is first recorded.

1550-1553 AD – Italy
Gianfrancesco Straparola publishes in two volumes, *Le Piacevoli Notti* or *The Pleasant Nights*, also known as *The Facetious Nights* and *The Delightful Nights*. The first volume appeared in France as early as 1560 and the second in 1573.

1634-1636 AD – Italy
--Giambattista Basile's *The Tale of Tales* or Entertainment for Little Ones translated by Nancy L Canepa.
--Il Pentamerone : *The Tale of Tales* by Giovani Batiste Basile, translated by Sir Richard Burton
Giambattista Basile writes *Il Pentamerone*, also known as *Lo cunto de le cunti* (*The Tale of Tales*). It is written in the hard-to-translate Neapolitan dialect. Volumes 1-3 appear in 1634, followed by volume 4 in 1635 and volume 5 in 1636. They were published

[115] Taken from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/intro-pages/fairy-tale-timeline.html

posthumously since Basile died in 1632. Due to the obscure dialect, they were not translated into Italian until 1747, German in 1846, and English in 1848, essentially removing them from influence upon the oral tradition until then.

1690-1710 AD – France
The French Salons are filled with fairy tale writing, primarily by women writers. The most prolific and influential are Marie-Catherine d'Aulnoy and Charles Perrault.

1696-1698 AD – France
Marie-Catherine D'Aulnoy, the foremost fairy tale author of the French Salons, publishes four volumes of fairy tales. They are translated into English in 1699.

1697 AD - France
Charles Perrault's *Histoires ou Contes du temps passe*, also known as *Mother Goose Tales*, is published in Paris. The tales enjoy instant success. Some of the tales included are Cinderella, Sleeping Beauty, Little Red Riding Hood, Bluebeard, and Puss in Boots. He ultimately recorded eleven fairy tales, most of which are among the most popular tales today. All of Perrault's tales are available on SurLaLune at The Fairy Tales of Charles Perrault.

1729 AD – Great Britain
Robert Samber translates into English and publishes Perrault's *Histories, or Tales of Times Past*. They are a hit and become some of the most popular fairy tales of all time.

1740 AD – France
Madame Gabrielle de Villeneuve writes the original novella length version of Beauty and the Beast which appears in *La jeune ameriquaine, et les contes marins.* This version is not intended for children with its many storylines, length, and subject matter.

1756 AD – France
Madame Le Prince de Beaumont publishes her own considerably shorter version of Beauty and the Beast. This version is the best well-known and most used as the basis for later interpretations of the tale. It is written for a young audience, with didactic messages and a simpler storyline. This is the first example of a literary fairy tale being written specifically for children.

1812 and 1815 AD – Germany
Jacob and Wilhelm Grimm publish volumes one (1812) and two (1815) of *Kinder und Hausmarchen* (*Childhood and Household Tales*). Popular tales from the collection include The Frog King, Hansel and Gretel, Rumpelstiltskin and Snow White and the Seven Dwarfs.

1823 AD – Great Britain
Editor Edgar Taylor publishes the first English translation by his brother Edward Taylor of the Grimms' tales in *German Popular Stories.* The book is illustrated by George Cruikshank.

1835 AD - Denmark
Hans Christian Andersen's *Fairy Tales Told for Children* is published. Many of the tales are original stories, but a few are based on traditional folklore, including The Wild Swans and The Princess on the Pea.

1845 AD – Norway
Norwegian Folk Tales, collected by Peter Christen Asbjornsen and Jorgen Moe is published in 1845. The collection becomes exceptionally popular after the second edition appears in 1852. The first illustrated edition, featuring the work of Erik Werenskiold and Theodor Kittelsen, appears in 1879. Two of the most famous tales from this collection are East of the Sun and West of the Moon and The Three Billy Goats Gruff.

1848 AD – Great Britain
The first English translation by Edward Taylor of Giambattista Basile's *Il Pentamerone* is published. The illustrations are by George Cruikshank.

1866 AD – Russia
Aleksandr Afanasyev collects and publishes his first volume of Russian fairy tales.

1867 AD – France
Gustave Dore's illustrations for Perrault's fairy tales are first published in *Les Contes de Perrault, dessins par Gustave Dore*.

1867-1876 AD – England
Walter Crane publishes his color illustrations of many fairy tales in his Toybook series, including Beauty and the Beast, Bluebeard, Sleeping Beauty, Puss in Boots, and Cinderella.

1882 AD – England
Walter Crane illustrates his sister Lucy Crane's translation of Grimms' fairy tales. The book is intended to highlight Crane's illustrative work more than to present a new translation of the tales into English.

1889 AD – England
Andrew Lang publishes the first of his twelve fairy books, *The Blue Fairy Book.* Most of the illustrations in the books are drawn by H. J. Ford. The twelfth and final book, *The Lilac Fairy Book*, will be published in 1910. The books remain popular for gathering tales from numerous sources, essentially presenting multicultural fairy tale collections long before multicultural becomes a buzz word a hundred years later. His all books are available on Internet Archive

1890 AD – Great Britain
Joseph Jacobs publishes *English Fairy Tales*, later followed by *More English Fairy Tales*, *Celtic Fairy Tales*, *Indian Fairy Tales*, and *European Folk and Fairy Tales*.

1893 AD – Great Britain
Marian Roalfe Cox publishes her book, *Cinderella: Three Hundred and Forty-five Variants of Cinderella, Catskin, and Cap O' Rushes*. The book discusses many tales which have not yet appeared in English and indirectly nominates Cinderella as the most common fairy tale theme around the world.

1961 AD – USA
Stith Thompson expands and translates Antti Aarne's *The Types of the Folktale* in 1961. The Aarne-Thompson Classification System becomes the most widely used for classifying Indo-European folktales, cataloging some 2,500 basic plots.

List of the Tales of Facetious Nights of Straparola

1-1 Salardo
1-2 Cassendrino
1-3 Pre Scarpafico
1-4 Tebaldo the Prince of Salerno
1-5 Dimitrio
2-1 Galeotto
2-2 Filenio Sisterno
2-3 Carlo da Rimini
2-4 Devil and Silvia
2-5 Mister Simplicio di Rossi

Classic Books of European Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone**
No 33 By Giovanni Boccaccio. 100 tales.
Translated by John Payne. London : Villon Society. 1886.

1550 **Facetious Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols. 75 tales
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin. 1894.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales.
Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्ऩ। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल विहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट। । **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2018** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022